RNI No. UPHIN/2011/40224
वर्ष : 15 अंक : 5

पंजीकृत सं.: एस.एस.पी./एल.डब्लू./एन.पी-341/2024-2026

हिन्दी मासिक पत्रिका
नवम्बर - 2025
मूल्य: 20/- रुपये मात्र

प्रकृति मेल

सूर्य सिद्धांत (भाग -7)

नोटः यह पत्रिका प्रत्येक माह की 6 तारीख को मुद्रित होकर उसी माह की 8 तारीख को डाक द्वारा भेजी जाती है।

मौसम
प्रकृति में समन्वय
सत्य का स्रोत
परिवर्तन
प्रकृति आश्रम
प्रकृति के तत्व विज्ञान, जीवन के मूल रहस्य
एवं जिज्ञासा पूर्ण करने की प्रकृति स्थली
'अशोक मानव'
9415041794, 9807636072
ग्राम-मड़वाना, पो0-रघुनाथपुर, निकट सैदापुर, लखनऊ।

कोमल
बिल्डिंग मैटेरियल
सत्य प्रकाश मिश्रा (राहुल मिश्रा)
बिक्रेता • बालू • मौरंग • सीमेंन्ट • गिट्टी
मछली शहर, जौनपुर
मो0 9792512188

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष:15, अंक : 5 | नवंबर - 2025

संरक्षक
डॉ. उत्तम प्रकाश मानव
संपादक
अशोक मानव
कार्यकारी संपादक
उमेश
विधि सलाहकार
नवनीत कुमार वर्मा
मुख्य संवाददाता
आशीष त्रिपाठी
वरिष्ठ संवाददाता
अरविन्द त्रिपाठी
दिल्ली संवाददाता
मनोज
पुर्वांचल हेड
श्री प्रकाश मिश्रा
संवाददाता
सूर्यमणि यादव, अनुराग, कामेश, सुनील, गौरव पंत, अभिषेक पंत, हेमंत पाण्डेय, प्रशांत द्विवेदी, सुमनलता यादव, मानवेन्द्र त्रिपाठी,अभय सिंह
ग्राफिक्स, डिजाइन एवं तकनीकि
संजय यादव
कैमरा मैन
धर्मेन्द्र त्रिपाठी

प्रबंध, विज्ञापन एवं सदस्यता

संपर्क 8423330911, 9598911575

पंजीकरण कार्यालय

सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश– 226022

प्रधान कार्यालय

18/A ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली क्रॉसिंग, फैजाबाद रोड, लखनऊ – 226016

इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों और विचारों के लिए उनका लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा। विज्ञापनों में किये गये दावों की जाँच–पड़ताल स्वयं करें। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

नोटः इस पत्रिका के समस्त सहभागी पदाधिकारीगण पत्रिका के प्रारम्भ के अंक से ही बिना किसी मासिक सहयोग धनराशि या वृत्तिका के स्वेक्षा से बिना किसी दबाव के समय दान के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी अशोक मानव द्वारा सूर्या प्रिंटिंग प्रेस एण्ड पब्लिकेशन, खसरा संख्या 872, ग्राम मड़वाना, जनपद–लखनऊ, उ. प्र. पिन-226104 से मुद्रित कराकर सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उ. प्र. से प्रकाशित किया।

संपादक – अशोक मानव

www.prakritimail.com
info@prakritimail.com
editor.prakritimail@gmail.com

अंदर के पन्नों पर

P 32 प्रकृति विज्ञान

सूर्य सिद्धांत भाग - 7

सूर्य हर बिखरी अवस्था को पूर्ण करने हेतु बीजत्व का निर्माण करता है जिसे सूर्य सिद्धांत कहते हैं।

P 8 वास्तविक आनन्द का एहसास

P 11 समय सांख्यिकी

P 15 ध्वनिः अवस्थाओं का एहसास मार्ग

P 20 सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया भारत के महान अभियंता और आविष्कारक

P 28 शिक्षा नीति में भारतीयता और स्वदेशी मूल्यों का समावेश

P 35 बहराइच का कारिकोट गाँव ग्रामीण पर्यटन की वैश्विक पहचान

P 43 भारत की आत्मा-स्वदेशी कृषि

P 50 होना जो होता है वही होता है

P 52 गुरु जी का गाँव

P 61 प्राकृतिक सौंदर्य

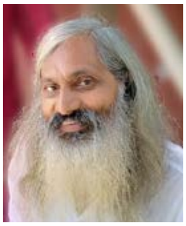

अशोक मानव

भूगोल

भू- भूमि, गो-गोलार्दीय, ल-लयबद्धता

भवन ऊर्जा के गंधीय ओज का लंकरीय परिणाम जो लंकरी गंधीय बीजतत्व से अपने गुण को पूर्ण करने हेतु (भवन) का निर्माण करता है उसे भूगोल कहते हैं।

अर्थात भूमि की गोलार्द्धीय लयबद्धता प्रकृति अर्थ में भूगोल ब्रह्माण्ड की प्रकृति विकास है, जो भिन्न-भिन्न स्वरूपों में भिन्न-भिन्न जीवों की रचना करता है। वैज्ञानिक अर्थ में भूगोल संरचना की वह बनावट है जिससे वह अपने गुणों का विकास करता है। व्यवहारिक अर्थ में भूगोल प्रकृति की उस स्वरूप को कहते हैं जिसकी क्रिया से जैविक संरचना का विकास होता है। वास्तविक अर्थ में ब्रह्माण्ड की हर अवस्था भूगोल है जो जीव पदार्थ के जीवनी अंकन से आत्मिक बीजीय रचना के अनुसार अपने स्वरूपों का विकास करता है। भूगोल एक स्तूपीय अवस्था है जिससे कण पदार्थ और जीव अपनी प्रवृत्ति के अनुसार अपने स्वरूपों का विकास प्रकृति विज्ञान के अनुसार करता है। ब्रह्माण्ड जल, थल, नभ, हवा जीव अर्थात अपनी हर अवस्था को गुणों भौगोलिक अवस्था में संरक्षित कर अपने विकास के साथ प्रकृति सृजन करता है। भूगोल भूमि की गोलार्द्धी लयबद्वता प्रकृति की एक मार्गीय अवस्था है, भूगोल हर किसी का होता है चाहे वह जीव पदार्थ बीज हो या सूक्ष्म न दिखाई देने वाली प्रकाशीय अवस्था भूगोल, परतीय स्वरूप में निर्मित होता है। जिसे जिस गुण की भूमि का निर्माण करना होता है उस गुण के अनुसार असका स्वरूप बनता जाता है इसलिए भूमि के कारण स्थान विशेष पर जीव विशेष की उत्पत्ति होती है। पदार्थ भूमि का आकार अपने गुणों की प्रवृत्ति के अनुसार बनाता है भूगोल का परतीय आकार स्वरूप हो उद्वेश्य की अवस्था में बनता है, एक जिस गुण की उत्पत्ति करनी होती है उसके लिए अपने मृदागंध में आकृति आकार स्वरूप के अनुसार विकास करती है यह आकार अपने दाब ताप से जिसे उत्पन्न करना होता है उसी आकार गुण गन्ध का आकार विज्ञान निर्मित करता है। यह गन्धीय वैज्ञानिक आकार सूक्ष्म रूप ने अपनी जीवनी बीज रूप में स्वरूप अंकित किये होता है, प्रकृति वातावरण मिलने के बाद उसी अनुसार अपना विकास करता है। सजीव का विकास भी इसी गणित से होता है। इसमें ग्रन्थि अंग विशेष का निर्माण कर उसकी गुणीय गन्ध प्रवृत्ति धरा को पूरा करता है। आकार ग्रंथि रासायनिक क्रिया से गुण विशेष उत्सर्जित कर मुख्य गुण धारा का निर्माण करता है, प्रथम स्वरूप भूगोल का इसे बनाने के अनुसार बनता है द्विपीय स्वरूप गुण विशेष बनने की आवश्यकता पूर्ति और अपनी सुरक्षा की दृष्टि से होता है। इस गुण का बीज गन्ध में मौजूद होता है जो उसी विज्ञान के अनुसार अपने स्वरूपों का विकास करता है। जीव पदार्थ जिस गुण धारा का प्रवाह करता है उसमें भी गन्ध सूक्ष्म अवस्था की भौगोलिकता के स्वरूप में परतीय अवस्था में प्रकाश तरंग के साथ जाते है जहाँ उन्हें निर्माण करना होता है उस भौगोलिकता के साथ जुड़कर अपने गुणों को बढ़ाने के लिए अपने स्वरूप का विकास करने लगते है। कुछ अवस्था ऐसी होती है जिससे तात्तकालिक आवश्यकता के अनुसार गुण गन्ध के ग्रन्थि का विकास होता है और आवश्यकता पूरा होने पर मिट जाता है। जैसे बिमारी या पदार्थी दुर्गन्ध इकट्ठा होने पर उसे बाहर निकालने के लिए किसी ग्रन्थि का विकास हो जाता है जो कार्य पूरा होने के बाद स्वतः मिट जाता है पर कार्य पूरा होने से पहले यदि मानव उसे मिटाना चाहता है तो वह बार-बार उत्पन्न होने का प्रयास करता रहता है। इसी प्रणाली के तहत शरीर में कभी-कभी गाठ, तिल या अन्य किसी अंग का विकास हो जाता है। उसका अंकन बीज की गन्ध में नही होता है यह मानव की सोच जो किसी अवस्था से प्रभावित होने के कारण उत्पन्न होती है जो गहरी अवस्था बनाकर स्वगन्ध में परिवर्तित हो जाता है उस विज्ञान की पूर्ति हेतु उसका विकास होता है जो उसके तात्कालिक विचार को पूरा करने के लिए बन जाता है। प्रकृति के स्वभाविक भूगोल विकास में वैज्ञानिक छेड़छाड़ उसके गणों के विकास में हानि पहुँचाती है जो अप्राकृतिक होने के कारण उस भौगोलिकता में दर्द उत्पन्न करता है जिससे गणों का विकास होने में व्यवधान उत्पन्न होता है। मानव को भी अपने अंगों की काट छाट नही करनी चाहिए उससे उसके व्यक्तित्व के विकास में बाधा पहुंचती है।

पाठकनामा

आदरणीय ,

आज जहां हर तरफ सस्ते साहित्य भरे पड़े हैं जो हमारे समाज को खोखला कर रहे हैं वही प्रकृति मेल अपने गंभीर शैली और विविधिता पूर्ण लेखो से सभी को सरल औचित्यपूर्ण राह लिखती है। पत्रिका के सभी सदस्यों को शुभकामनाएं

शीला ओझा बाराबंकी

आदरणीय,

आज के इस युग में जहाँ आकर्षक शब्दों और दिखावटी लेखन की भीड़ बढ़ती जा रही है, वहाँ सच्चे और सार्थक साहित्य की पहचान करना कठिन हो गया है। ऐसे समय में 'प्रकृति मेल' जैसी पत्रिका अपने विचारोत्तेजक और गहराई से लिखे गए लेखों के माध्यम से समाज को सही दिशा दिखा रही है। यह पत्रिका केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि विचारों की वह ज्योति है जो पाठकों के मन में संवेदना, विवेक और सृजनशीलता का प्रकाश फैलाती है।

'प्रकृति मेल' के प्रत्येक सदस्य, लेखक और संपादक को हृदय से शुभकामनाएँ, जिन्होंने साहित्य की गंभीरता को जीवित रखा और उसे जनमानस तक सरल, सुगम और सशक्त रूप में पहुँचाया।

–आशीष त्रिपाठी

सभी पाठकगण से अनुरोध है कि आप अपने विचार अपने लेख हमें निम्न पते पर भेज सकते हैं–
A/18 ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली रेलवे क्रॉसिंग, रविन्द्र पल्ली फैजाबाद रोड, लखनऊ226016
आप हमें अपने विचार निम्न ई–मेल पर भेज सकते हैं -
email-editor.prakritimail@gmail.com
Contact: **9807636072, 7376495194**

“ आप भले ही अपने आप में कितने भी शानदार कलाकार क्यों ना होए लेकिन आपका आकलन तो दर्शक ही करेंगे

आशुतोष राणा

“ जिन टैटू को बनवाने के लिए युवावस्था में पैसे खर्च किए थे, प्रौढ़ होने पर उन्हें हटाने के लिए पैसे खर्च करते है।

डैनियल गिल्बर्ट

“ भारत की विकास गाथा का विरोधाभास यह है कि सड़के अब उन पर चलने वाले वाहनों से ज्यादा सुरक्षित हैं।

अद्वैता काला

“ इतना गहरा असर बहुत कम ही संगीतकार कर पाते है। मुख्यधारा को जुबीन जैसी हस्ती को जितनी पहचान देनी चाहिए थी, उतनी दी नहीं।

विशाल ददलानी

“ भारत के भी कई ऐसे देशों से कूटनीतिक रिश्ते हैं, जिनके साथ अमेरिका के रिश्ते नहीं हैं।

मार्को रुबियों

“ किसी शक्तिशाली व्यक्ति का पैसों के लिए घुटने टेकना हर उस व्यक्ति का बिखरना है,जो उसे आदर्श मानता है।

नन्दितेश निलय

केकरा के वोट देईं
AI माई
ए बात त वोटर के खुद के फैसला होवेला हम केहू के वोट देवे खातिर नहीं कह सकतानी
वादा सभी दल करते हैं

dृष्टिकोण

वास्तविक आनन्द का एहसास

महत्वपूर्ण यह नही है कि सुख की खोज की जाय बल्कि महत्वपूर्ण तो ये है कि सुख की प्राप्ती की जाय। सुख कोई सामान नही है कि गया बाजार और और खरीद लाया। यह मन में शान्ति और संतुष्टी का एहसास है जो कि संसार मे खोजने से नही मिलेगा, इसे पाने के लिए अपने अन्दर प्रवेश करना पड़ेगा।

कामेश

सुख,मात्र मानव के लिए ही नही बल्कि समस्त प्राणियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण विषय है। कहीं न कहीं यदि अध्ययन किया जाय तो ये दिखाई देता है कि सभी प्राणी सुख की चाहत मे ही इधर-उधर दौड़ रहे है। सबकी तलास सबकी दौड़ सबकी चाहत मात्र एक जगह जाकर रूकती है कि आखिर सुख कैसे प्राप्त किया जाय, क्या ऐसा करू कि जीवन सुखमय हो जाय, कौन सा ऐसा मार्ग चुन लूं, दुनियां की कौन सी सुविधा एकत्र कर लूं कि सुख मिल जाय,और यही प्रश्न लिए हुए प्राणी जीवन भर साधनों को इकट्ठा करता है और एक दिन इस नश्वर संसार से हमेशा के लिए विदा हो जाता है परन्तु उसकी दौड़ उसकी चाहत उसके बाद भी रूकी नही होती। और वह पुनः अपनी इसी चाहत की पूर्ति के लिए इसी संसार में आता है। अर्थात उसकी सुख प्राप्ती की दौड़ जीवन भर ही नही अपितु जन्म जन्मान्तर तक चलती रहती है। ऐसा नही है कि सुख की प्राप्ती किसी को होती नही,बल्की सच तो यह है कि सुख की चाहत में वह सही मार्ग नही चुन पाता है और संसार के विभिन्न संसाधनों में फस कर बंधा रह जाता है और वास्तविक मार्ग से भटक जाता है।

महत्वपूर्ण यह नही है कि सुख की खोज की जाय बल्कि महत्वपूर्ण तो ये है कि सुख की प्राप्ती की जाय। सुख कोई सामान नही है कि गया बाजार और और खरीद लाया। यह मन में शान्ति और संतुष्टी का एहसास है जो कि संसार मे खोजने से नही मिलेगा, इसे पाने के लिए अपने अन्दर प्रवेश करना पड़ेगा।अपनी अन्तरात्मा मे शान्ती के लिए प्रवेश करना और यह अनुभूति करना कि आज मै सबसे सुखी हूँ यही सुख है। परन्तु अपने अन्दर प्रवेश करना कोई छोटी-मोटी बात नही है वह तो मनोवेग है। आज हर व्यक्ति अपने मनोवेग को वाह्य करता है। अपनी सोच को बाहरी दुनिया की वस्तुओं और संसाधनों मे लगा रहा है वह यह भूल गया है कि वास्तविक सुख संसाधनो मे नही खुद में प्राप्त हो सकता है।

मानव प्राणी एक ऐसा प्राणी है जो कि सोच विचार मे अन्य प्राणियों की अपेक्षा अग्रणी है परन्तु जरूरत सिर्फ सोचने की क्षमता अधिक होने से पूरी नही होती उससे महत्वपूर्ण होती है सोच की दिशा,आखिर हम किसी दिशा मे कितना और किस गती से सोच रहे है। आज जैसा कि कहा जाता है कि व्यक्ति अपने दुःख से कम औरों के सुख से ज्यादा दुःखी है। कहीं न कहीं यह बात प्रमाणित लगती है और इसे इस रूप में भी समझा जा सकता है कि आज हम जो भी कार्य करने के लिए कदम उठाते है पहले और लोगों को देखते है कि क्या ऐसा करने से हम अपने पड़ोसी से आगे जा सकते है। उसके बढ़ते कदम कही न कही पड़ोसी या और लोगों के कदमों पर निर्भर दिखाई देते है। वह कुछ भी करने को सोचता है तो पहले उसके मन मे सवाल खड़ा हो जाता है यह करने पर लोग क्या कहेंगे? लोगों की सोच क्या है लोग देखेंगे ना जाने क्या-क्या सोचेगें। अर्थात वह

अपनी इच्छा की पूर्ति भी लोगों के नजरिये से करना चाहता है। उसकी अन्तरात्मा कहती है चलो वहां एक घंटे शान्ति से बैठे रहें, या कि चलो कहीं घुम आएं या चलो एक गीत गुनगुनांए परन्तु वो भी अपनी आत्मा की इस मधुर पुकार को ततक्षण ठोकर मारता है कि लोग एकांत मे बैठा देखेंगे तो पागल समझेगें, लोग घूमते देखेंगे तो आवारा समझेंगे लोग गीत गुनगुनाते सुनेंगे हसेंगे। अपनी आत्मा खुद की खुशी शान्ति के लिए ऐसा करना चाहती है, पर हम लोगों के नजरिये से जीना चाहते है। कभी भी हम अपनी इच्छा अपने नजरिये से खुद को देख नही पाते और फिर भी सुख की चाहत रखते है।

सुख की चाहत मे दौड़ रहे
दुःख की गठरी को भूल गए।।

हम दुःख की गठरी अपने सिर पर रखे घूम रहे है और वह गठरी कुछ और नही हमारी सोच है। सोच ये है कि हम चाहते है कि लोग हमे देखें तो मेरी प्रशंसा करें कि हमसे प्रणाम करें कि हमें डरें,या फिर लोग ऐसा क्यो कर रहे है, इन्हे ऐसा होना चाहिए अर्थात हर समय हमारे अन्दर एक सवाल हमें अपनी अन्तरआत्मा की गहराई मे उतरने नही देता और जब तक हम वह शान्ती वह सुख प्राप्त ना कर सकेंगे जिसकी चाहत वास्तव मे हमारे अन्दर से उठ रही है।तब तक हमारा अंतर्मन व्याकुल ही रहेगा। क्योंकि उसकी यही भूख है। चाहत व्यक्ति की बाह्य शारीरिक संरचना मे नही होती,कभी सोचो और शूक्ष्म दृष्टिपात करो खुद पर कि क्या हमारे शरीर के विभिन्न अंग किसी चीज की या किसी भाव की मांग करते है क्या ऐसा कभी हुआ हाथ मे चाहत उठे कि ये करना है या पैर कहे कि मत चलो या जुबान कहे मत बोलो या ऑखे कहे मत देखों। कभी नही। वो सब तो मात्र एक यंत्र है एक माध्यम है उस सूचना के जो कि इन अंगों को अपने अनुशार कृयाशील बनाती है कभी सोचे कि क्या है जो कि शरीर के विभिन्न

अंग पड़े रह जाते है और निष्कृय हो जाते है शरीर से क्या है जो निकल गया तो सारे अंग बेकार हो जाते है। और क्या है कि जब तक वो है तब तक हम निरन्तर कृयाशील है। और यदि वह कोई अदृश्य चेतना है तो निश्चित ही सुख की उसकी भी अपनी चाहत होगी जो कि उसके अनुसार पूर्ती होने पर ही वह सुख की अनुभूति कर सकेगा। क्योंकि जिसकी चाहत पूरी होगी वही तो सुखी होगा उस चेतना की या उस आत्मा की चाहत है खुद को सुन्दर बनाने कि और हम लगे बाजार से गहने खरीदने की इत्र छीड़कने या सुन्दर कपड़े पहनने। सोचो हम शरीर को सवारने लग जाते है सुन्दर बनाने की चाहत उसकी है और हम सवारते हैं शरीर के अंगो को कभी महसूस करो कि पानी हमेशा गतिमान होता है किसी तरफ थोड़ा भी पानी गिराओ तो वह नीचे की तरफ चल पड़ता है। पहाड़ से निकली नदी रास्ते नही देखती चल पड़ती है सागर की तरफ उसे रास्ते मे बांध बनाओ कि खेत की सिचाई करो कि विद्युत संयंत्र लगाओ कोई फर्क नही वह सागर तक जा कर ही रूकेगी,बुंद की चाहत भी सिंधु ही है , एक बूद भी अपनी यात्रा सागर की तरफ ही करती है और वही स्थिति इस चेतना की भी है इसकी पूरी कोशिस उस विराट की तरफ है,अब हम उसे धन मे उलझाएं पद मे उलझाएं संसारिक संसाधनों में बांधे तो भला ये कैसे सुख की अनुभूति कर सकता है। इसकी गति तो निरन्तर उस परम चेतना की तरफ ही रहेगी।

हमारे अन्दर कविता निकलती है चित्रकला निकती है नृत्य गतिमान होता है हम उसे दबा देते है, कि नही इससे क्या होगा हमे तो चिकित्सक बनना है कि इन्जीनियर बनना है कि शासक प्रधानमंत्री बनना है और हम सोचते है कि इन पदो पर पहुच कर हम सुखी होंगे परन्तु मिलता वही है कि हम सिर्फ दुःख की गठरी अपने सिर पर रखे हुए सुख की तलास मे दौड़ते रह जाते है परन्तु सुख की एक झलक पाने मे नाकाम रह जाते है। वास्तविक आनन्द हमारे भीतर निरंतर प्रवाहित हो रहा है परंतु हमारी दौड़ बाह्य जगत के संसाधनों की तरफ है , अतः वास्तविक आनन्द के लिए हमें शून्य होकर अपने आप में शून्य होने की आवश्यकता है, अपने भीतर के वास्तविक आवश्यकता को पहचानने की जरूरत है तभी हम वास्तविक आनन्द की अनुभूति कर सकेंगे।।

प्रकृति मे मानव की सिर्फ तुलनात्मक सोच

गौरव पंत

प्रकृति मे मानव जीव ही ऐसा जीव है जिसकी सिर्फ तुलनात्मक सोच रही। हमेशा तुलनात्मक जीवन शैली बनाने वाला यह जीव प्रकृति के आनंद को एहसास ही नही कर पाया। प्रकृति के हर निर्माण मे इस जीव को हमेशा कमी नजर आई।अपने को श्रेष्ठ साबित करने मे यह जीव प्रकृति की वास्तविकता पे ही हर पल प्रश्न चिन्ह लगाता आया। सिर्फ मानव को ही प्रकृति मे छेड़छाड़ करने मे बहुत सहज प्रतीत होता आया।अपने इसी छेड़छाड़ को मानव ने विज्ञान का नाम देकर अपने को प्रकृति संचालक मान बैठा।मानव को लगा जो यह कर रहा है यही इसके प्रयोग सफल हो रहे है और इसी से प्रकृति गतिमान है। लेकिन प्रकृति की वास्तविकता से अंजान मानव जीव हमेशा अपने को सिद्धांत करते हुए आज इन्ही प्रयोगो से अनंतीय अंत की तरफ अग्रसर है। मानव को लगा, उसके दिमाग की खुराफात प्रकृति मे हर जगह उसी के अनुसार क्रियाशील है किंतु प्रकृति का विज्ञान तो अति सूक्ष्म है। उसमें किसी प्रकार छेड़छाड़ करना अपने स्व अस्तित्व को सिर्फ अंनतीय अंत की तरफ ले जाना है वहीं मानव करता हुआ आया। सिर्फ तुलनात्मक सोच ही मानवीयता का अनंतीय अंत है। मानवीय सभ्यता हर किसी को हमेशा तुलनात्मकता से आंकलन करती आयी। हर कोई अपने अनुसार हर किसी को चलने का प्रयास करता है और अगर कोई उसके अनुसार नहीं चलता है तो उसे तरह-तरह की मानवीय परिभाषाओं से गुजरना होता है जो की उसे अपने जीवन में अनिवार्य लगता है। किंतु प्रकृति की अनिवार्य यात्रा किसी बाध्यता से नहीं चलती है। हर उत्पन्न अवस्था एक अनिवार्य मार्ग होता है। ना वहां तुलनात्मकता होती है ना किसी तरह की बाध्यता।

न जाना मानव प्रकृति की अनिवार्यता।
हर किसी ने बनायी सिर्फ बाध्यता।
अपने अनुसार हर किसी ने हर किसी को चलाने का प्रयास किया।
प्रकृति में सिर्फ तुलनात्मकता से राज किया।
ऐसा जाल बनाया सही और गलत का।
एक को सही और दूसरे को गलत बताया।
फिर भी मानव अपने को ना बचा पाया।
प्रकृति तो सिद्धांतीय भट्टी है ना कुछ सही,ना कुछ गलत का मानवीय फेर चल पाया।
चुराने की कोशिश हर किसी ने हर किसी की की, किंतु कोई किसी का कुछ ना चुरा पाया।
प्रकृति का सूक्ष्म विज्ञान हर किसी को सिद्धांत करता आया।
चली गयी हर चाल का अंत ऐसा होता आया ना कोई समझ पाया।
प्रकृति अशोक धारा में विद्यमान रही उसी धारा से हर कोई आज सिद्धांत होता आया।

समय सांख्यिकी

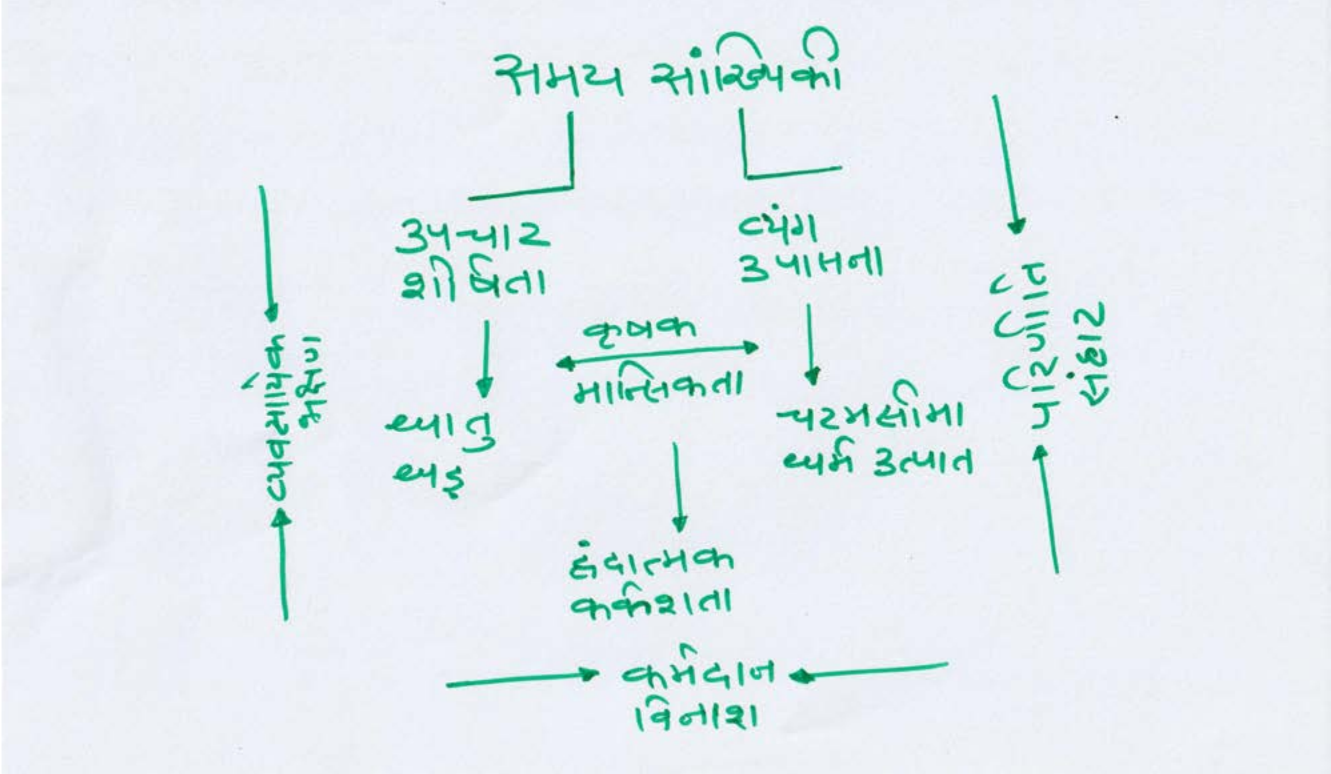

अभिषेक पंत

अर्थात किसी भी वेशभूषा का जनक नंदिनी चार धाम सिंहासन बनाकर, कर्म उपासक तर्पण नीति बनाई तो गई अपितु संध्या काल जननी वंदन का प्राण काल चयन दर्पण वंशवादी चुनाव को श्रेय देता रहा। इसी बंधन नंदन प्राण घाती कपाल स्पंदन सिंहासनी वेदना को मिटाने के लिए मूलध्वनिअवनीति से प्रकृति ने समय सांख्यिकी की उत्पत्ति की। जिसमें प्रकृति ने व्यावसायिक भक्षण, कर्मदान विनाश एवं परिणीति संघार से उपचार शीर्षता एवं व्यंग उपासना को मिटाते हुए, धातु धड़ में मिलाए गए चरम सीमा धर्म उत्पात को खत्म कर, द्वंदात्मक कर्कश्ता विलई कृषक मानसिकता का अंत कर दिया। अर्थात समय सांख्यिकी को समझने से पूर्व किस परिवेश में समय सांख्यिकी की उत्पत्ति हुई उसे परिभाषित करना होगा जो इस प्रकार है -

उपचार शीर्षिता -

अर्थ वेद में तमस रंग की मानकता का जनक शोषण मिलाया जा रहा था, जिसमें घड़ी मापक ऋतिमा का कर्म कोष ही जंतु विपश्यना वस्त्र पितृ परामर्श बताया जा रहा था। इसी रंग सेवा अनुदानित चयन नीति की राधिका के मूल समस्या घर्षण को उपचार शीर्षता कहते हैं। अर्थात प्रयास ही यही था कि मूल दर्पण में नायक नायिका रस मिलाकर, कमल कोष की आराधना को उपचार शीर्षता का जनक द्वंद बना दिया जाए।

व्यंग उपासना -

वाणिज्य प्रभात सेवा चयन निमंत्रण पारितोषित कर, धर्म अधर्म का नाड़ी व्यय धूम्र वचन लिया जा रहा था, जिसमें वृक्ष दलदल की कर्मकांड शयनिता से वास्तु चयन को प्रयोगशाला बनाया जा रहा था। अर्थात विप्रतुला गठन में तामसी नेत्र कोटी चयन को धर्म वंदनीय वृक्ष प्राप्ति का धूम्रवाणिज्य बनाने वाले प्रथम प्रयोग वास्तु उपयोग कुटिलता को व्यंग उपासना कहते हैं, जिसमें प्रयास था कि वृक्षों का मानक शीर्ष व्यवहार ही वंदनशील त्यौहार का वाणिज्य वाणी प्रहार बना दिया जाए।

धातु धड़ -

धातु धड़ की उत्पत्ति में चयन नयन वास्तु प्रकोप का मालिनी पराकर्षण त्याज्यतालीन किया गया था। जिसमें भवदीय मात्रा दीपक

शरणार्थी परचम प्रज्वलित किया गया था। इसी वंशानुक्रम शीर्षता की तपस्या भार चयन मालिनी आशावादी कृषि के प्रथम ग्रहण परास्त वंशज जलधार को धातु धड़ कहते हैं।

चरम सीमा धर्म उत्पात –

वशीकरण प्रज्वलन मुद्रा आयोग तीर्थात्री व्यंजन उदभोगी उतभोगी व्यय पारिणी वंदना लोचनीय कर्मकांड शालाएं बनाई गई, जिसमें भू भाव को नभ भार का क्रमितलोचनी गर्भ कुंडल संदर्भ बताया गया, इसी वंशिक मानसिक त्रय भुवनीय चरम सीमा उत्पात के प्रथम माध्यम कारणी वन उपराज्य शरण धमनी शुल्क धारणा को चरम सीमा धर्म उत्पात कहते हैं। जिसमें व्यय व्यंग उपभोगी रोग की मात्रा से गृहस्थ वस्त्र घूर्णन को ज्योति राज्य का पराकर्षित सिंहासन बनाया गया।

कृषक मानसिकता –

जलनभ उपकरण वेशभूषा बनाकर धार्मिक चादरों का मेला लगाया गया, वर्णन उपकार प्रतिकार जयंत विद्रोही समस्या भार बनाया गया। तत्पश्चात योगिनी रोग जीवाणु के क्रमशः जीवाश्म बंधन को वस्त्रलीन करने के पर्याय में कृषक मानसिकता का जन्म हुआ। अर्थात रोग ही भोग है बताकर, योग को ही नाम मात्र संचय का धर्म पराश्रित मृदा पारा चरित्र बना देना ही कृषक मानसिकता है, जिसका प्रयास था कि भू घड़ी की मूल नभ वाणी को ही प्रदूषित वटमाला का नाड़ी उद्योग बना दिया जाए।

द्वंदात्मक कर्कश्ता –

प्रतिद्रोही उपकरण की नाम जप तीक्ष्णता बनाकर वरदान मुखी समय पर्यंत धारणाओं का रात्रि भोग संयोग निश्चित किया गया था। प्रभुत्व की गुरु गर्भशाला में ही जीवन मृत्यु उपभोगी वस्तुओं का समय निश्चित किया गया था। अर्थात वास्तु वस्तु योग की प्रतिद्रोही उपासना के मूल वरदान धारणा राशि पर्यायक प्रथम उपकरण नाम जप संयोगिता को द्वंदात्मक कर्कश्ता कहते हैं।

"अर्थात प्रथम योग ही जीवन भोग का कच्चा मिश्रण बन जाए, इसी यौगिक तक्षशिला संवर्धन को मिटाने हेतु समय सांख्यिकी की उत्पत्ति हुई। "

अर्थात जलपारा के योग में वायु पारा को मृदा ज्योति का जलवायु स्तूप बना देने वाले आंतरिक इच्छा काल की ईंधन स्मृति के प्राणवायु नाड़ी संदर्भ के उच्चतम उपयोग भोग काल को समय सांख्यिकी कहते हैं। अर्थात जीवन मृत्यु से परे उपक्रमित व्यय की रासायनिक मात्रा के गंधीय सूर्य की आंतरिक ज्योति अणुता को समय सांख्यिकी कहते हैं। अर्थात भविष्य, भूत, वर्तमान से परे आंतरिक चयन में जीवन रस की मात्रा को ईंधन यात्रा का इच्छा पर्यायक बना देने वाले नभ प्रकाश जल आकृति गणितज्ञता की वायु मृदा लिपि के आत्मा एहसास को समय सांख्यिकी कहते हैं।

समय सांख्यिकी दो प्रकार की होती है-

"मंत्र पारा, मार्ग धारा"

मंत्र पारा

मानसिक न्याय की तरंगीय रश्मि के भौतिक वर्णन में लीन तन स्वीकृति को मंत्र कहते हैं एवं मूल रश्मि भौतिकता की तरंगीय न्याय प्रणाली को मंत्र पारा कहते हैं। मंत्र पारा से समय सांख्यिकी में रात्रि गुणों का अवसाद बनाकर दिवस चयन की मानसिकता को ही तन उदयी मृदा अर्क बना दिया जाता है।

मार्ग धारा

मात्र गर्भ रश्मि इकाई की मूल पूर्णांक निधि के रासायनिक स्वरों की भूगोल ध्वनि यात्रा को मार्ग कहते हैं एवं प्रथम गर्भ ज्योति विषय की पूर्णांक प्राप्तांक रासायनिकता के गंधीय भूगोल की ध्वनित आवश्यकता को मार्ग धारा कहते हैं। मार्ग धरा की रश्मि न्याय निधि से समय सांख्यिकी में पारायंत्रिकी का मात्रा द्वार ही ज्योति विषय का भूगोल पूर्णांक बना दिया जाता है।

समय सांख्यिकी का पूर्ण अर्थ ही प्रथम अवसर का मूल योग है, जिसमें योग ही पूर्ण उपयोग बनकर एक ही विधान स्मृति के अनुसार अपनी ईंधन मात्रा को नियंत्रित करता है। जहां से पराकर्षित उतशयन सामग्री का जीव रस भी प्रदूषित मंत्रणा सहित पका लिया

जाता है। ब्रह्मांड का जीव विषय ही समय सांख्यिकी की पराकाष्ठा है। जिसमें निर्भरता का गुण मिटाकर आत्मा एहसास के परायोजन को मृदालीन किया जाता है। समय सांख्यिकी की पूर्णता ही धमनी लिप्तता की शून्यता होती है, जिसमें प्रतिकृति की शीतलता ही ज्योति ज्यामिति की पूर्णता होती है।

स-म-य

सरलता - मस्तिष्क - यथार्थ - अर्थात यथार्थ की पूर्णता से निर्मित मूल सरलतम मस्तिष्क की यांत्रिकी को समय कहते हैं।

- अर्थात प्रकृति में मस्तिष्क का निर्माण इसलिए हुआ क्योंकि यथार्थ की मात्रा में सरलतम मार्ग की पूर्ति को एहसासलीन करना था अर्थात मस्तिष्क की ब्रह्मांड का प्रथम एहसास यंत्र है, इसीलिए मस्तिष्क में दो आशिक पूर्णताएं सदैव सक्रिय रहती हैं, जो समय सांख्यिकी को पूर्ण करती रहती है, वो हैं (मंत्र पारा एवं मार्ग धारा), अर्थात मन में तन से परे भावों की यात्रा ही मंत्रपारा है एवं मन में तनलीन विचारों की पूर्ति ही मार्ग धारा है।अर्थात ब्रह्मांडीय ठोसता के द्रव्यलीन भाव की प्रथम वैचारिक नाड़ी को अवसर देने वाले सरलतम रासायनिक योग को समय कहते हैं, जिसमें मस्तिष्क का ही मन - तन मिलान कर्त्ता बन जाना समय सांख्यिकी की पराकाष्ठा है।

अर्थात समय वन ही समय सांख्यिकी है एवं सूर्य मन ही समय यंत्र है। अर्थात मस्तिष्क एवं मन के निर्माण को समय सांख्यिकी कहते हैं।

पदार्थ के हर रूप का मस्तिष्क होता है एवं तत्व की मूल धरा ही मन रूपी पारा वर्ण होती है जिसमें उत्पन्न रासायनिक गंध की कृत्य शैली ही समय सांख्यिकी की पराक्रमी यात्रा होती है। अर्थात मन के भाव में मस्तिष्क के विचार को वाहन बना देने वाले लंकरीय प्रकृति शास्त्र को समय सांख्यिकी कहते हैं।

अर्थात मन मस्तिष्क दोनों एक प्रकार के तरंगीय यंत्र हैं जिनमे गंध माध्यम भी बनती है एवं चालक भी बनती है। अर्थात तरंगीय मंत्र को गंधीय यंत्र बना देने वाले रासायनिक उपयोग के इच्छा भोग को समय सांख्यिकी कहते हैं। विराजमान उत्कर्ष की ज्योति शैली ही पर्यायक यात्रा की मानसिक राधिका होती है, जिसमें प्रकृति का धातु ज्ञानी ही रंग ध्यान का ध्वनि विज्ञान बन जाता है। प्रकृति ने समय सांख्यिकी बनाकर सजीव निर्जीव उपभोगिता को भी संलयित संश्लेषण का धातु वाहन बना दिया। जिस प्रकार से सूर्य अपनी अंतिम राधिका तक ईंधन उपयोग को शून्य रखता है, उसी प्रकार समय सांख्यिकी से मन मस्तिष्क के विषयभाव वैचारिक रूप से एक दूसरे के लिए तब तक शून्य रहते हैं, जब तक तरंगीय आवृत्ति परिपक्व नहीं होती। राधिका न्यायी ईंधन प्राणवायु जगत के इच्छाकालीन तत्व पराक्रमी चुंबकत्व को समय सांख्यिकी कहते हैं।

अपवर्तनी भूभाग का जलस्तर बढ़ रहा इसीलिए नक्षत्र योजनाएं मिटती जा रही हैं। समय सांख्यिकी अपने पराक्रम के शीर्ष पर है, आत्माओं की जितनी भी राधिकाऐं मन स्वप्न से अलग कर दी गई थी, स्वयं ही तन चुंबकत्व की आवृत्ति में आवश्यकता से खींचती जा रही है। समय सांख्यिकी का पराक्रमी तत्व वेशभूषा प्रत्यक्षता में

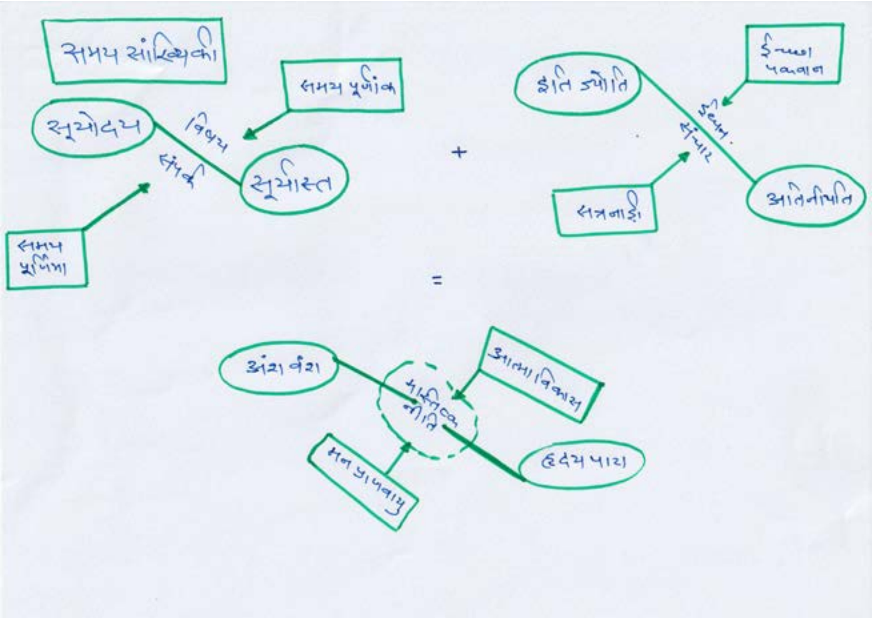

स्वलीनता को सूर्य विलई बना रहा है, मूल धातु योग ही आत्मा का एहसास है, जिसमें तन मन का मस्तिष्क प्राण वायु भोग ही पदार्थ को उपयोगी बनाता जा रहा है। अर्थात मन्थनी युग के प्राणवायु जलप्रपातीय उत्कर्ष को मिटाया जा रहा है। प्रकृति ने समय सांख्यिकी की बीज रसमला को तृप्त कर लिया है, अब नाड़ी काल यौगिक वन भी मिटाया जा रहा है। अर्थात प्रश्न उत्तर से परे ध्वनि यथार्थ शीर्षता की प्रकाश गंधीय रसायनिकता के तरंगीय उपयोग को समय सांख्यिकी कहते हैं। अर्थात तन में मन की रागिनी को आत्मा की कामिनी से मिलाकर, राधिका वर्ग को तत्व ज्ञापित गर्भ प्रयोग बना देने वाले पदार्थ विषय रश्मि व्यय को समय सांख्यिकी कहते हैं। अर्थात प्रकृति रथ विवेचना की प्रवृत्ति रथ रश्मि के मूल तत्व दर्पण की शयनशीर्षता के शून्य योग शीतल प्रयोग रासायनिक उपयोग ज्यामिति अंकुरण को समय सांख्यिकी कहते हैं।

- अर्थात सूर्योदय एवं सूर्यास्त के विषय संपर्क में निर्मित समय पूर्णांक विलयी समय पूर्णिमा की प्रथम आंतरिक नाड़ी को समय सांख्यिकी कहते हैं।

अर्थात इति ज्योति निर्माण के अति

नियति जलवायु की प्रथम इच्छा पकवान शीर्षता में लीन समय नाड़ी प्रकृति लीनता की ईंधन संचारी गति को समय सांख्यिकी कहते हैं।

अर्थात अंश वंश हृदय पारा योग के आत्मा विकास प्रयोग की मन प्राणवायु भोगी मूल मस्तिष्क नीति को समय सांख्यिकी कहते हैं।

समय सांख्यिकी का मूल उपगमन केंद्र ही पारा बिंदुओं का संचारी मार्ग होता है। जिसमें नाड़ी अंकुरण गति ही जीवाश्म रिक्तता की जीवाणु वांशिकता को इच्छालीन प्रहार से पकाती है। समय सांख्यिकी ही मूल आंशिकता की रासायनिक विद्या होती है।

मयान ए मुतासिर जज्बातों का जमाना बनाकर, जमीनी वजन का ज़मानती तराजू बनाया गया। जिसमें जहन की पुरजोरी का लिहाकयत ए रसूख़ बनाकर कबीलाई दरख़्त काटा गया। फिर भी इंसानों को यह मालूमात नहीं हुआ कि जमीनी हर्जाना ही आसमानी पैमाना है। जिसमें खूनी दस्तावेजों का जमीऱ भी उसी वजन को उठता है, जिसमें वक्त की ताबीर का जमाना जहन की चाहत को सजाता है। इसी मयानबाजी में बयानों का जंजीर नामा बनाकर, कमाई खर्च के हिस्से भी क़िस्से की तरह बनाए गए। यानी जमीनी पोशाकों का दौर ही आसमानी तमीज का वजन मकान बने इसीलिए वाकिफ ख़र्च का हिस्सा बनाया तो गया। अलबत्ता फिर से इंसान वक्त की बा यकीनी को भूल गया। इसीलिए कुदरत ने तमन्नाओं की जंजीर में भी वक्त का पायदान बनाकर, रईसी की जमीनी ताकतों का आसमानी दरवाजा, रूही ख्यालों से तर कर दिया। जिसमें हर अल्फाज की जश्नबाजी का गुब्बारा ही पहली घड़ी का ताज़ बन गया।

अल्फाज ए बयानों का दौर ही जमीनी कमी का जमाना बना रहा,
आसमानी पोशाकों का दरवाजा धागों की दुनिया दिखा रहा,
वज़ह जो भी हो हर हद का फायदा बाहर आ रहा,
इंसानी कौम वक्त की तालीम में अपनी ही नफ़्स जान ना पाई,
हर नब्ज़ की खामोशी से वक्त की दौलत का खजाना जहन ए एहसास बना रहा,
किरदारों की तबज्जों पर जहनी तौर से पहला मालिकाना वक्त बाहर आ रहा,
जहन तर जो बिक्री थी, अब वही जश्न ए बारूद खरीदा जा रहा,
तालीम का मायना वक्त के मुसाफिरों से भी आगे निकला कहकर तालीम को ही मुतासिर मुफलिसी का आईना कहा जा रहा, जरिया ए दरिया जहन ए वक्त का पहला मांझा निकला,
वक्त का पन्ना स्याही से पलटा जा रहा,
आने वाले मोदसे रिहाई की पोशाक को भी मिटा देंगे,
आसमानी दरख़्त का चांद सूरज मिटाया जा रहा,
वक्त इ गुंजाइश में पहला जहन ही आसमानी सूरज निकला,
जिसमें चांद का पर्दा भी दिखाया जा रहा,
हर खेल की पहली तारीख मिट गई,
अब खिलाड़ियों का दौर मिटाया जा रहा।

The racist remark on the social absence of adventurous symmetry of human polarity is the chemical habitat of indigenous desires: which shows the aroma gravity of human presence is the time polarity of habitat chemistry. That is : the time statistics of world chemistry is the living being character of non living being facility.

ध्वनिः अवस्थाओं का एहसास मार्ग

सुमनलता

जब देह में इच्छाओं का भोगी अहंकार नहीं होता है मात्र एक अवस्था होती है स्वयं को विचार से मुक्त करते हुए स्वयं के मूल प्रवृत्ति को स्वयं के वास्तविक अभिव्यक्ति के स्वरूप में स्थापित करते हुए स्वयं के ध्वनि को अर्थात स्वयं के आत्मा के वाणी को एहसास को एहसास करते हैं तो जीव बिना किसी भी प्रकार के वेदना का निर्माण करते हुए भारमुक्त जीवन को गतिमान करते हैं। जो प्रकृति की वास्तविक सूर्य ध्वनि एहसास तालिका है।

जीवन अवस्थाओं की परिवर्तन स्थली है अर्थात् अवस्थाओं की प्रतिक्षण गतिमान होती चरणावली ही जीवन को गतिमान करती है जिसे सामान्य दृष्टि में मानवीय भाषा में समय परिवर्तन से परिभाषित किया गया है जिसे भूत, भविष्य एवं वर्तमान की समय राधिका से परिवर्तित किया जा सकता है जो मात्र एक अहंकार है जिसमें स्वयं के स्तूप का भेदनतो मानव स्वयं करता है अपनी अवस्थाओं को स्वयं के अभिलाषित तरंगों को पूर्ण करने के लिए जो प्रकृति में प्राकृतिक मार्ग अवस्था की स्थापना ना करते हुए एक ऐसी धरा की स्थापना करती है जहां पे देह की अहंकारी तालिका आत्मा के एहसास करने की सक्षमता को नज़रअंदाज करते हुए वेदनात्मक समय अर्थात् वेदना एवं अपरिपक्व कर्म की मृदा को स्थापित करती है अपितु वास्तविक अवस्थाओं का परिवर्तन तो स्वयं को स्वयं के जीवन में एहसास समय में सिद्धांतमार्ग विलीन करते हुए ईच्छाओं का भोगीय श्रृंगार नहीं अपितु प्रकृति जीवन में जीव द्वारा निर्मित एवं स्थापित स्वयं जीव की रासायनिकता सिद्धांतहोकर मार्ग का निर्माण करती है जो परिपक्व होकर उसी मार्ग को जीव के सम्मुख लाती है जिस प्रकार के कर्म रासायन को जीव आत्मा स्थलीय में ब्रह्माण्ड के रसायन कण अणु गंध विज्ञानशाला में अंकित किया है।

अर्थात् जब देह में इच्छाओं का भोगी अहंकार नहीं होता है मात्र एक अवस्था होती है स्वयं को विचार से मुक्त करते हुए स्वयं के मूल प्रवृत्ति को स्वयं के वास्तविक अभिव्यक्ति के स्वरूप में स्थापित करते हुए स्वयं के ध्वनि को अर्थात स्वयं के आत्मा के वाणी को एहसास को एहसास करते हैं तो जीव बिना किसी भी प्रकार के वेदना का निर्माण करते हुए भारमुक्त जीवन को गतिमान करते हैं। जो प्रकृति की वास्तविक सूर्य ध्वनि एहसास तालिका है। हम जिस भी प्रकार के आत्मिक गंध भाषा को स्वयं के भीतर मनन करते हुए स्वययं के प्रकृति में अर्थात् प्रत्येक जीव स्वयं के प्रकृति के संचालक स्वयं हैं अर्थात् आत्मा में मन में अंकित कतरे हैं तो ब्रह्माण्ड में भी स्वयं को अंकित करते हैं और तब तक परिपक्व होते हैं जब तक कि सिद्धांत होकर ब्रह्माण्ड के अन्य समस्त गंधों से मिलकर उस गंध का भक्षण नहीं कर लेते हैं तब तक हम सिद्धांतीय परिपक्व होते रहते हैं।

तात्पर्य यह है कि जब हम समय की नकली विधा भूत, भविष्य, वर्तमान से स्वयं के स्तूप में भूत से मनन करते हुए वेदना नहीं बनाते हैं भविष्य को प्राप्त करने के

लिए राक्षसी विधाओं से भविष्य को देखकर वर्तमान में हस्तक्षेप नहीं करते हैं तब हम स्वयं के आत्मा मनस्थली में अपने वास्तविक कर्म को ध्वनि से एहसास करते हुए गतिमान करने लगते हैं अर्थात् मानव प्रजाति ने अपने स्तूप का भेदन स्वयं किया है मानव वर्तमान में जो एहसास विहीन होकर अपनी मूल प्रवृत्ति की हत्या करते हुए अन्य के भाँति दिखने की आकर्षण में अन्य की प्रवृत्ति को ग्रहण करते हुए स्वयं के जीवन को वेदनाओं का सागर बना चुके हैं उसके लिए दायितवकर्ता तो स्वयं मानव जाति है।

परन्तु प्रकृति कभी रूकती नहीं है प्रकृति में भूत भविष्य वर्तमान का कोई स्थान नहीं है प्रकृति में तो एकमात्र अवस्था है वह है एहसास जिसे प्रकृति केवल मानव में नहीं अपितृ प्रकृति धरा में स्थापित प्रत्येक भूमि में पदार्थ में तत्व में गंध में रासायन में ध्वनि स्वरूप में विराजमान हैं। सजीव तो प्रकृति के प्रत्येक भूमि में है "मृदा यदि सजीव नहीं होती तो बीज का अंकुरण कैसे होता जल यदि सजीव नहीं होता तो जीवन की स्थापना कैसी होती वायु यदि सजीव नहीं होता तो स्वासन लेने की प्रणाली कैसे स्थापित होती चट्टानों में यदि प्राण नहीं होता तो मृदा कैसी बनती खनिजों मे यदि सजीवता नहीं होती तो पदार्थ का विकास कैसे होता रसायनों में यदि सजीवता नहीं होती तो वैज्ञानिकता का निर्माण कैसे होता इलेक्ट्रॉन प्रोट्रॉन न्यूट्रॉन में सजीवता नहीं होती तो प्रकृति ध्वनि तत्व का रासायनिक विस्तार कैसे होता तो सजीव तो समस्त भूमि है" इन सभी भूमियों की सजीवता की मूल धरा है ध्वनि एहसास, ध्वनि समस्त भूमि में है इनकी अवस्था परिवर्तित होती है पर अवस्थाओं की राधिक एक होती है एहसासिय ध्वनि के स्वरूप में तो भला प्रकृति में किस विकलांग हो उत्पन्न किया है जब प्रकृति में कोई विकलांग है ही नहीं एकमात्र मानव जाति के।

जिन्होने स्वयं को इतना विकलांग बना लिया है कि प्रकृति के अन्य किसी भी पदार्थ को किसी भी जीव को ईश्वर की आवश्यकता नहीं पड़ी स्वयं को जीवित रखने के लिए पर इन मानवों को आवश्यकता पड़ गई ईश्वर की इससे बड़ी विकलांगता तो ईश्वर की होगी ही नहीं की जो आत्मा में ध्वनि विचारशून्य एहसास तैराकी लगाते हुए इच्छाशक्ति के स्वरूप में शामिल है उसकी हत्या अपने इच्छित समय से करते हुए उसे पुकारने लगे वह भी बाह्य जगत में जो वेदनाओं के कल्पनाओं से उत्पन्न होकर मानवों के इच्छाओं के अनुसार अपने रूप को धारण करने लगा, क्या वह ईश्वर होगा जिसे अपनी शक्ति का भान कराना पड़ेगा कि मैं तो तुम्हें सुरक्षित कर रहा हूँ मैं ईश्वर हूँ ना!। प्रकृति में किसी भी जीव में ईश्वर ध्वनि एहसास के स्वरूप में विलीन होकर एहसास में ही सक्षमता को स्थापित कर देंगें और ईश्वर एहसास के स्व में स्थापित होकर सक्षम बना जाएंगे बाहुकल शक्ति प्रदर्शन ईश्वर की कला नहीं वह तो एहसास है तो फिर भला मानव प्रजाति प्रकृति को किस आधार पर आरोपित करती आई है कि- प्रकृति ने उससे सबकुछ छीन लिया ईश्वर ने उसकी खुशी को बेरंग कर दिया ईश्वर न्याय नहीं करते हैं। कितनी मूर्ख और अहंकारी है यह मानव प्रजाति की ईश्वर को भी स्वयं की तरह स्वार्थी समझ कर ईश्वर पर द्विपक्षीय होने का आरोप लगाते हुए ईश्वर पे न्याय एवं अन्याय के प्रश्न चिन्ह लगाते हैं जबकि वास्तविकता में मानव प्रजाति स्वंय के स्वार्थ के अनुसार ईश्वर की आकृति को उकरते हुए न्याय अन्याय को परिभाषित करते हैं।

वरन प्रकृति में ईश्वर तो एहसास की वह अवस्था है जो आत्मिक नभ तत्व में गंधों की मूल रासायनिक धरा को एहसास तालिका से कर्म मृदा में अंकित कतरे हुए एहसास से जीवन को गतिमान करते हैं ईश्वर तो प्रकृति के समस्म पदार्थ तत्व में ध्वनि एवं एहसास के स्वरूप में स्थापित है एवं यह मानव प्रजाति जिस अहंकार में भक्षण करती है प्रकृति की हत्या करती है वास्तविक में तो मानव प्रजाति ईश्वर का भक्षण कर रही है वृक्ष में भी एहसास रूपी ईश्वर है जो रसायन के स्वरूप में रासायनिक क्रिया करते हुए फल रूपी कर्म परिभाषा को स्थापित करते हैं और मानव इस अहंकार में की यह तो हमारे लिए है प्रकृति ने बनाय है फल भक्षण नहीं ईश्वर का भक्षण करते हैं। यह विडम्बना नहीं है तो क्या है कि जिस फल को फूल को बलि देते हुए जीव हत्या करते हुए ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए प्रकृति को अर्थात् ईश्वर को ईश्वर के ही रक्त से श्रृंगार कराते हैं और अहंकार में इसे ईश्वर प्रकृति भक्ति कहते हैं परन्तु यदि यही कार्य प्रकृति भी करे की मानव को मानवों के ही अंग को काटकर यह कहते हुए कि श्रृंगार करा रही है रक्ताभिषेक कर रही है तो यही मारव जाति इसे प्रकृति की क्रूरता कहेगी परन्तु स्वयं की क्रूरता को नहीं देखती है कि प्रकृति को ही काटकर प्रकृति को ही प्रसन्न करना चाहती है।

तात्पर्य यह है कि प्रकृति ध्वनि तो एहसास तालिका है अवस्थाओं को एहसास करना ही जीवन को बिना किसी भी प्रकार के भार से गतिमान करती हुई जीवन को सरल बनाती है प्रकृति एहसासीय अवस्थाओं पे प्रश्न करना जीवन को सरल नहीं जटिल बनाकर जीवन को पीड़ात्मक बनाती है वास्तविक जीवन यात्रा तो प्रकृति में घटने वाली समस्त घटनाओं को एहसास करते हुए स्वंय के आत्मिक ध्वनि को स्वमन में एहसास करते हुए शून्य विचारशून्य कर्म यात्रा को स्थापित करना है अर्थात् कर्म की गठरी को एकत्रित नहीं अपितृ कर्म को राखहीन समय से राखहीन करना है।

Life is track of zero velocity with constant acceleration with no breakage of question and answer and no staring of directional navigation.Directional navigation is nature's natural inner voice which can only be heard by being self constant of very own vehicle.

स्वास्थ्य ही नहीं पर्यावरण के लिए भी घातक है होम डिलिवर्ड पेक्ड फूड

सीताराम गुप्ता
पीतमपुरा, दिल्ली

सुबह-सुबह जैसे ही अख़बार पर लगा रबर बेंड हटाकर अख़बार खोलते हैं उसमें इश्तिहार के लिए डाले गए पर्चे अथवा पैम्फलेट्स निकल कर नीचे गिर पड़ते हैं। ये रोज़ की ही बात है। हाँ, कभी कम पर्चे होते हैं तो कभी कुछ ज़्यादा। इनमें से ज़्यादातर पर्चे अथवा पैम्फलेट्स खानपान की चीज़ों अथवा भोजन से संबंधित ही होते हैं जो प्रायः मेनू की शक्ल में होते हैं। प्रायः सभी पर मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा होता है फ्री होम डिलिवरी। कई बार कुछ आकर्षक छूट का ज़िक्र भी रहता है। इन पर पते की बजाय फोन नंबर ही दिए गए होते हैं। फोन मिलाओ आर्डर करो कुछ ही देर में आपके घर की कॉलबेल बजेगी। डिलिवरी बॉय आपका आर्डर किया गया सामान दे जाएगा और पैसे ले जाएगा। पैसों का भुगतान ऑन लाइन भी किया जा सकता है। अब जब भूख लगे या जब जी चाहे खाइए, पैकिंग का कचरा डस्टबिन में डालिए और अपना काम कीजिए या लंबी तानकर सो जाइए।

न खाना बनाने का झंझट, न एसी से निकलकर बाहर जाने की दुश्वारी। है न बड़े आराम की बात। लेकिन ये उतने आराम की बात नहीं है जितनी लग रही है। आज बड़ी-बड़ी कंपनियाँ ऑनलाइन फूड डिलिवरी के क्षेत्र में आगे आ रही हैं। आज लोगों की व्यस्तता के साथ-साथ आरामतलबी भी बढ़ रही है। लोगों की इसी मजबूरी व कमज़ोरी का भी खूब फ़ायदा उठा रहे हैं।

न खाना बनाने का झंझट, न बर्तन साफ करने की ज़हमत और न एसी से निकलकर बाहर जाने की दुश्वारी। है न बड़े आराम की बात। लेकिन ये उतने आराम की बात नहीं है जितनी लग रही है। आज बड़ी-बड़ी कंपनियाँ ऑनलाइन फूड डिलिवरी के क्षेत्र में आगे आ रही हैं। आज लोगों की व्यस्तता के साथ-साथ आरामतलबी भी बढ़ रही है। लोगों की इसी मजबूरी व कमज़ोरी का भी ख़ूब फ़ायदा उठा रहे हैं होम डिलिवरी करने वाले ये फूड आउटलेट्स। बड़ी-बड़ी कंपनियों के इस क्षेत्र में आ जाने से संभव है करों के रूप में सरकार की आय में कुछ वृद्धि हो जाए और कुछ फ़ालतू चीज़ों के उत्पादन के रूप में कुछ आर्थिक विकास भी लेकिन लोगों की सेहत व पर्यावरण की सेहत पर इसका जो दुष्प्रभाव होगा वह इस लाभ से

कई गुना अधिक घातक होगा।

बाज़ार का खाना कभी भी घर के खाने से स्वादिष्ट, शुद्ध व पौष्टिक नहीं हो सकता। यदि बाज़ार का खाना स्वादिष्ट लगता है तो उसे कृत्रिम रूप से स्वादिष्ट बनाने का प्रयास किया जाता है। बाज़ार के खाने को स्वादिष्ट बनाने के लिए उसमें जो चीज़ें डाली जाती हैं वे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक ही होती हैं। खाने को आकर्षक बनाने के लिए रंगों तक का प्रयोग किया जाता है जिनसे एलर्जी व केंसर होने की बहुत अधिक संभावना होती है। इसीलिए रोज़-रोज़ बाहर का खाना खाने वाले प्रायः कई परेशानियों की शिकायत करते मिलेंगे। ऐसे लोगों का पेट ख़राब रहना सामान्य बात है। जंक फूड व फास्ट फूड के कारण पहले ही पूरे विश्व में मोटापे व मोटापे से उत्पन्न बीमारियों में तेज़ी से वृद्धि हो रही है। पैक्ड फूड की होम डिलिवरी व्यवस्था से यह स्थिति और भी बदतर होती जा रही है इसमें संदेह नहीं।

होम डिलिवरी में जो खाना आता है वह ताज़ा हो ही नहीं सकता। घर तक पहुँचते-पहुँचते वह ठंडा भी हो जाता है। रोटियाँ और नान कई बार चमड़े जैसे हो जाते हैं जिन्हें खाना न केवल मुश्किल होता है अपितु हानिकारक भी होता है। यदि उस खाने को रखकर थोड़ी देर बाद खाते हैं तो वह और भी ख़राब हो जाता है। यदि उसे दोबारा गरम करके खाते हैं तो वह गरम तो हो जाता है लेकिन साथ ही दूषित भी कम नहीं होता। बार-बार ठंडा-गरम होने से कई बार खाना विषाक्त तक हो जाता है जो खाने वाले के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। ऐसा भोजन पूर्णतः तामसिक प्रकृति का होता है जो सुस्ती व जड़ता भी उत्पन्न करता है। यदि ऐसे भोजन को माइक्रोवेव में गरम किया जाता है तो उसके भी दुष्प्रभाव कम नहीं होते। इस प्रकार के भोजन से हमारा स्वास्थ्य ही नहीं, हमारी मनोदशा व कार्यक्षमता भी बुरी तरह से प्रभावित होती है।

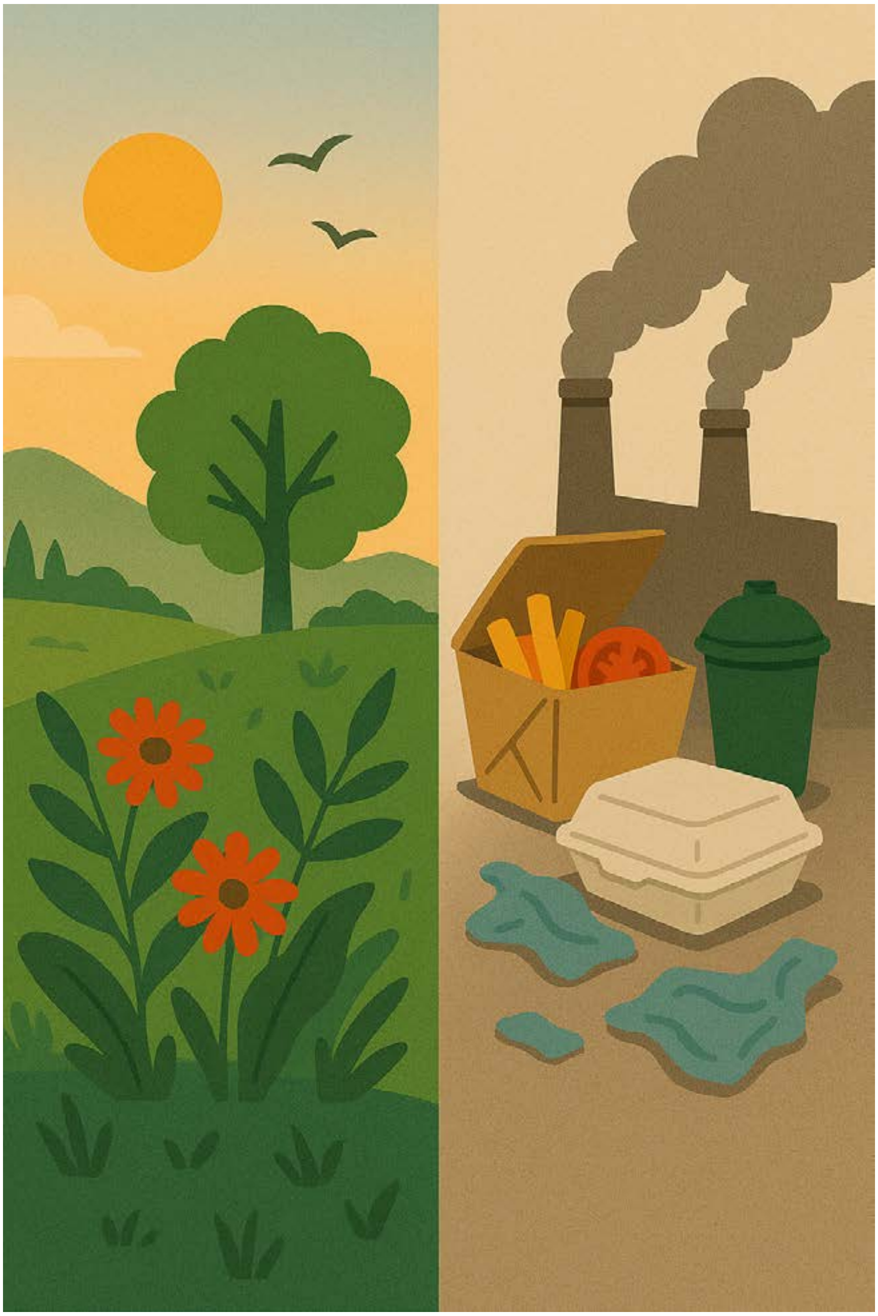

होम डिलिवरी में जो खाना आता है उसमें पैकिंग बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। सप्लायर कोशिश करता है कि खाना यथासंभव गरम पहुँचे और उसका स्वरूप भी न बिगड़े। इसके लिए खाने की पैकिंग के लिए बहुत सी सामग्री का इस्तेमाल किया जाता है जो प्रायः डिस्पोजेबल ही होती है। इसमें से अधिकांश सामग्री नष्ट न होने वाली होती है जो पर्यावरण के लिए अत्यंत घातक होती है। होम डिलिवरी के लिए खाने की पैकिंग में गत्ते, पेपर, प्लास्टिक, थर्मोकोल व एल्युमीनियम फॉयल का बहुत अधिक प्रयोग किया जाता है। इन पदार्थों की गंध भी खाने में मिल जाती है। एक बार मैंने पाया कि खाने के एक पैक्ड डिब्बे में जो रसगुल्ला रखा था उसमें से प्याज़ और लहसुन की गंध आ रही थी। पैक्ड फूड में यदि कई चीज़ें एक साथ रखी होती हैं तो सब चीज़ों में एक दूसरे

की गंध व्याप्त हो जाती है जिससे हर चीज़ का स्वाद नष्ट हो जाता है। इस प्रकार के दुष्प्रभावों की सूची बहुत लंबी है।

कई बार जितनी मात्रा में खाना होता है उतनी ही मात्रा में पैकिंग मैटीरियल भी इस्तेमाल किया जाता है जो सीधा कूड़े में जाता है। इसी कारण से आजकल शहरों में ही नहीं क़स्बों तक में कूड़ा बढ़ने से उसके निपटारे की समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। खाने की होम डिलिवरी पर्यावरण के लिए भी अत्यंत घातक है। पैकिंग मैटीरियल के उत्पादन में न केवल प्राकृतिक संसाधनों का बेतहाशा दोहन किया जाता है अपितु उनके उत्पादन में लगे उद्योगों के कारण प्रदूषण भी फैलता है। खाने की होम डिलिवरी में जिस पैकिंग मैटीरियल का प्रयोग किया जाता है वह भी खाने को दूषित ही करता है। काग़ज़ व गत्ते के संपर्क में आने से खाना काग़ज़ व गत्ते के हानिकारक तत्त्वों को सोख लेता है। प्लास्टिक का प्रभाव तो और भी घातक होता है। पैक्ड फूड में पैकिंग मैटीरियल की गंध भी व्याप्त हो जाती है जिससे खाने का स्वाद भी ख़राब हो जाता है। कई बार डिलिवरी के लिए तैयार पेक्ड खाना कहीं भी रख दिया जाता है जिससे खाने का पैकेट बाहर से संक्रमित हो जाता है। खाना खोलते समय सबसे पहले पैकेट पर हाथ लगते हैं और फिर खाने पर जिससे उसमें रखा खाना भी संक्रमित होने की संभावना बनी रहती है।

खाने की होम डिलिवरी में जिस पैकिंग मैटीरियल का प्रयोग किया जाता है वह सीधा बाज़ार से आता है और प्रयोग कर लिया जाता है। उत्पादन के दौरान यह पैकिंग मैटीरियल अनेक प्रकार के हानिकारक तत्त्वों के संपर्क में आता है। उत्पादन की प्रक्रिया में कई रासायनिक पदार्थों का प्रयोग होता है जो पैकिंग मैटीरियल में प्रयोग की जाने वाली चीज़ों पर एक परत बना लेते हैं। कई बार ये रसायन अत्यंत विषाक्त और स्वास्थ्य के लिए घातक होते हैं। प्रयोग करते समय न तो प्रयुक्त इस सामग्री को धोया ही जा सकता है और न धोने से इनके दुष्प्रभावों से मुक्त होना ही संभव है। पैकिंग मैटीरियल की सारी विषाक्तता और गंदगी पेक्ड फूड में आ जाती है। पेक्ड फूड में खाना बेकार भी कम नहीं होता। खाने का बहुत सा अंश पैकिंग मैटीरियल पर लगा रह जाता है। इससे खाद्य पदार्थों की जो बर्बादी होती है वह भी दुर्भाग्यपूर्ण है।

खाने की होम डिलिवरी भी प्रायः किसी न किसी वाहन के द्वारा ही की जाती है जिससे सड़कों पर यातायात बढ़ता है और साथ ही प्रदूषण के स्तर में भी वृद्धि ही होती है। यदि हम घर पर खाना नहीं बनाएँगे और न ही खाने के लिए उठकर कहीं बाहर जाएँगे तो भी हमारे स्वास्थ्य एवं भोजन बनाने की कुशलता पर प्रतिकूल प्रभाव ही पड़ेगा। भोजन बनाना भी एक कला है। इससे घर पर पौष्टिक भोजन बनाने की कला ही समाप्त हो जाएगी। खाना बनाने में परिश्रम भी करना पड़ता है। इसके लिए बाज़ार से सामान भी लाना पड़ता है। पैक्ड फूड के प्रयोग के कारण काम करने और चलने से शरीर में जो गत्यात्मकता व स्फूर्ति बनी रहती है वह समाप्त हो जाएगी और हम बहुत जल्दी घातक रोगों की चपेट में आ जाएँगे। यदि हमें अपना स्वास्थ्य और पर्यावरण दोनों बचाने हैं तो हमें जंक फूड व फास्ट फूड से ही नहीं पेक्ड फूड व होम डिलिवरी सिस्टम से भी तौबा करनी होगी।

सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया भारत के महान अभियंता और आविष्कारक

प्रकृति मेल डेस्क

भारत के इतिहास में कुछ व्यक्तित्व ऐसे हुए हैं जिन्होंने अपने कर्म, प्रतिभा और समर्पण से देश को नई दिशा दी। सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया (Sir Mokshagundam Visvesvaraya) उन्हीं में से एक थे। उन्हें भारत का श्रेष्ठ अभियंता, महान योजनाकार, और नवोन्मेषी आविष्कारक माना जाता है। उनका जीवन न केवल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में प्रेरणा का स्रोत है बल्कि यह दर्शाता है कि समर्पण और अनुशासन से किसी भी राष्ट्र को प्रगति के पथ पर अग्रसर किया जा सकता है।

सर विश्वेश्वरैया का जन्म 15 सितंबर 1861 को मैसूर राज्य के चिक्कबल्लापुर जिले के मुद्देनाहल्ली नामक गाँव में हुआ था। उनके पिता मोक्षगुंडम श्रीनिवास शास्त्री एक संस्कृत विद्वान और आयुर्वेदाचार्य थे, जबकि माता वेंकटलक्ष्मम्मा धार्मिक विचारों वाली सुसंस्कृत महिला थीं। बचपन में ही उन्होंने सादगी, अनुशासन और मेहनत की शिक्षा अपने घर से प्राप्त की।

उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा चिक्कबल्लापुर और बंगलौर में प्राप्त की। आर्थिक स्थिति बहुत सुदृढ़ नहीं थी, परंतु उनकी लगन इतनी प्रबल थी कि उन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी शिक्षा जारी रखी। आगे चलकर उन्होंने सेंट्रल कॉलेज, बंगलौर से स्नातक किया और फिर पूना कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग (College of Engineering, Pune) से इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त की। वहीं से उनके जीवन का वास्तविक अभियंता काल आरंभ हुआ।

इंजीनियरिंग करियर की शुरुआत

विश्वेश्वरैया ने अपने करियर की शुरुआत बॉम्बे प्रेसीडेंसी के पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट (PWD) में एक सहायक अभियंता के रूप में की। वहाँ उन्होंने कई नहर, पुल और जल परियोजनाओं पर कार्य किया। लेकिन उनका असली कौशल तब सामने आया जब उन्होंने खडकवासला बाँध (Khadakwasla Dam), पुणे की परियोजना में काम किया।

यहीं उन्होंने अपनी सबसे प्रसिद्ध

"ऑटोमैटिक वीयर वाटर फ्लडगेट्स (Automatic Sluice Gates)" प्रणाली विकसित की। यह ऐसा तंत्र था जो जलस्तर बढ़ने पर स्वतः खुल जाता था और बाँध की सुरक्षा सुनिश्चित करता था। यह विश्व स्तर पर एक नवीन तकनीक थी, जिसे बाद में भारत के अलावा अन्य देशों जैसे श्रीलंका और अफ्रीका में भी अपनाया गया।

महत्वपूर्ण आविष्कार और योजनाएँ

स्वचालित बाँध द्वार प्रणाली (Automatic Sluice Gates) :

यह उनका सबसे प्रसिद्ध आविष्कार है। इस प्रणाली से न केवल पानी का संतुलन बना रहता था बल्कि बाँध की सुरक्षा भी सुनिश्चित होती थी। इस तकनीक का पहला उपयोग खडकवासला बाँध में किया गया और बाद में इसे टीपू सागर बाँध (Mysuru) में भी स्थापित किया गया।

ब्लॉक सिस्टम ऑफ इरिगेशन (Block System of Irrigation):

इस प्रणाली के माध्यम से उन्होंने जल वितरण की एक व्यवस्थित योजना बनाई जिससे खेती के लिए पानी समान रूप से पहुँच सके। इससे कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

मैसूर राज्य की जल और औद्योगिक परियोजनाएँ:

जब वे मैसूर राज्य के दीवान (प्रधानमंत्री) बने, तब उन्होंने कई योजनाएँ शुरू कीं जिनमें प्रमुख थीं –

- कृष्णराज सागर बाँध (Krishnaraja Sagar Dam) का निर्माण
- मैसूर आयरन एंड स्टील वर्क्स (Bhadravati Iron Works) की स्थापना
- मैसूर सैंडल ऑयल फैक्ट्री
- मैसूर विश्वविद्यालय की स्थापना
- मैसूर बैंक की स्थापना

इन सब योजनाओं ने मैसूर को औद्योगिक और शैक्षणिक दृष्टि से आधुनिक राज्य बना दिया।

प्रशासनिक दक्षता और दूरदृष्टि

1912 में सर विश्वेश्वरैया को मैसूर राज्य का दीवान नियुक्त किया गया। इस पद पर रहते हुए उन्होंने अपने प्रशासनिक कौशल और अनुशासन से राज्य में क्रांतिकारी परिवर्तन किए। उस समय मैसूर एक पिछड़ा राज्य माना जाता था, परंतु उनके नेतृत्व में यह भारत के सबसे विकसित प्रांतों में गिना जाने लगा।

उन्होंने न केवल उद्योगों को प्रोत्साहन दिया बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, सिंचाई, और रोजगार के क्षेत्र में भी नई नीतियाँ लागू कीं। वे मानते थे कि "देश की प्रगति तभी संभव है जब उसके नागरिक शिक्षित, अनुशासित और परिश्रमी हों।"

उनकी पहल पर मैसूर विश्वविद्यालय (University of Mysore) की स्थापना 1916 में हुई, जो दक्षिण भारत का पहला विश्वविद्यालय था। उनका यह प्रयास शिक्षा के क्षेत्र में एक युगांतकारी कदम था।

औद्योगिक विकास के निर्माता

भारत में औद्योगिकरण के प्रारंभिक दौर में ही उन्होंने यह समझ लिया था कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति उद्योगों के बिना संभव नहीं। उन्होंने भद्रावती आयरन एंड स्टील प्लांट, मैसूर सिल्क फैक्ट्री, और मैसूर सैंडल ऑयल फैक्ट्री जैसी परियोजनाएँ स्थापित कर देश को आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर किया।

उन्होंने जल और बिजली के संयोजन का उपयोग उद्योगों में करने का सुझाव दिया, जिससे उत्पादन लागत कम और कार्यक्षमता अधिक हुई। यह दूरदृष्टि उनके युग से कहीं आगे की सोच थी।

देश के प्रति समर्पण और अनुशासन

विश्वेश्वरैया के जीवन का हर क्षण अनुशासन और कर्मनिष्ठा का उदाहरण था। वे सुबह चार बजे उठते, दिनचर्या का पालन करते और अपने हर कार्य में समय की पाबंदी रखते। उनके अधीन कार्य करने वाले कर्मचारी जानते थे कि "सर विश्वेश्वरैया के यहाँ देरी की कोई गुंजाइश नहीं।"

वे मानते थे कि "काम ही पूजा है" और "राष्ट्र सेवा ही सर्वोच्च धर्म है।" यही कारण है कि उन्होंने व्यक्तिगत लाभ से अधिक देशहित को प्राथमिकता दी।

सम्मान और उपाधियाँ

उनकी प्रतिभा और योगदान के लिए उन्हें अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुए।

- 1915 में ब्रिटिश सरकार ने उन्हें "नाइट" की उपाधि से सम्मानित किया, जिसके बाद उनके नाम के आगे "सर" लगाया जाने लगा।
- 1955 में भारत सरकार ने उन्हें भारत रत्न, देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से विभूषित किया।
- उन्हें कई विश्वविद्यालयों ने डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की।
- उनके जन्मदिन 15 सितंबर को भारत में "अभियंता दिवस (Engineers' Day)" के रूप में मनाया जाता है।

विचार और दर्शन

- सर विश्वेश्वरैया एक दूरदर्शी विचारक थे। वे तकनीक और शिक्षा को राष्ट्र निर्माण का मूल मानते थे। उनके कुछ प्रेरणादायक विचार आज भी प्रासंगिक हैं -
- "काम को केवल नौकरी न समझो, यह राष्ट्र सेवा है।"
- "देश की उन्नति जनता के अनुशासन और शिक्षा पर निर्भर करती है।"
- "हर भारतीय को यह समझना चाहिए कि अगर देश आगे बढ़ेगा, तो हम सब आगे बढ़ेंगे।"

उनका यह दृष्टिकोण आज भी भारत के तकनीकी और औद्योगिक विकास की नींव के रूप में देखा जा सकता है।

अंतिम वर्ष और विरासत

दीवान पद से इस्तीफा देने के बाद भी उन्होंने काम करना नहीं छोड़ा। वे 90 वर्ष की आयु तक सक्रिय रहे और अपने जीवन के अंतिम दिनों तक राष्ट्र निर्माण के विचारों पर कार्य करते रहे। उनका निधन 14 अप्रैल 1962 को हुआ, लेकिन वे आज भी लाखों भारतीय इंजीनियरों और छात्रों के लिए प्रेरणा हैं।

उनके नाम पर कई संस्थाएँ, सड़कों, बाँधों और विश्वविद्यालयों का नाम रखा गया है। भारत का इंजीनियर्स डे (15 सितंबर) उनके जन्मदिवस पर मनाया जाता है- जो उनके योगदान के प्रति देश का सच्चा नमन है।

समकालीन भारत के लिए उनकी प्रेरणा

आज जब भारत "मेक इन इंडिया" और "आत्मनिर्भर भारत" के मार्ग पर अग्रसर है, तो सर विश्वेश्वरैया की सोच पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो जाती है। उन्होंने एक सदी पहले ही यह दिखा दिया था कि किस प्रकार विज्ञान, तकनीक और नैतिकता के संगम से राष्ट्र का निर्माण होता है।

वे केवल अभियंता नहीं थे, बल्कि एक दूरदर्शी राष्ट्र निर्माता थे जिन्होंने दिखाया कि "विकास केवल नीतियों से नहीं, दृष्टिकोण से आता है।"

सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का जीवन अनुशासन, मेहनत, और राष्ट्रभक्ति का आदर्श उदाहरण है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि यदि व्यक्ति में दृढ़ निश्चय और कर्मठता हो तो वह किसी भी परिस्थिति में महान कार्य कर सकता है।

उनकी सोच, उनके आविष्कार, और उनकी नीतियाँ आज भी भारत के विकास के मार्ग को प्रकाशित करती हैं।

भारत में बीएस VI मानक

मानवेन्द्र
लखनऊ

भारत में प्रदूषण की समस्या लंबे समय से एक गंभीर चुनौती रही है। वाहनों से निकलने वाला धुआँ वायु गुणवत्ता को खराब करने में मुख्य भूमिका निभाता है। इसी कारण सरकार ने वाहनों से निकलने वाले प्रदूषक तत्वों को नियंत्रित करने के लिए बीएस (भारत स्टेज) उत्सर्जन मानक लागू किए। इन मानकों का उद्देश्य वाहनों से निकलने वाले हानिकारक गैसों जैसे कार्बन मोनोऑक्साइड (CO), नाइट्रोजन ऑक्साइड (NOx), हाइड्रोकार्बन (HC) और पार्टिकुलेट मैटर (PM) को कम करना है। इसी श्रृंखला में बीएस6 (Bharat Stage VI) मानक भारत के पर्यावरणीय इतिहास में एक बड़ा बदलाव साबित हुआ है।

बीएस6 मानक 1 अप्रैल 2020 से पूरे देश में लागू किया गया। इससे पहले भारत में बीएस4 मानक लागू थे, लेकिन प्रदूषण की बढ़ती दर को देखते हुए सरकार ने बीएस5 को छोड़कर सीधे बीएस6 मानक पर जाने का निर्णय लिया। यह कदम इसलिए भी ऐतिहासिक रहा क्योंकि बीएस6 यूरोपीय उत्सर्जन मानक यूरो 6 के समान है, जिसे यूरोप में पहले से लागू किया जा चुका था।

बीएस6 मानक का मुख्य उद्देश्य वाहनों से निकलने वाले हानिकारक उत्सर्जनों को कम करना है। बीएस4 के मुकाबले बीएस6 में नाइट्रोजन ऑक्साइड का उत्सर्जन लगभग 70% तक घटा दिया गया है। इसके अलावा, डीज़ल वाहनों से निकलने वाले पार्टिकुलेट मैटर (धूल के सूक्ष्म कण) में भी 80% तक की कमी लाई गई है। इसके लिए वाहनों में डीज़ल पार्टिकुलेट फिल्टर (DPF) और सेलेक्टिव कैटलिटिक रिडक्शन (SCR) जैसी आधुनिक तकनीकों का प्रयोग किया गया है। पेट्रोल इंजनों में भी गैसोलीन पार्टिकुलेट फिल्टर (GPF) का उपयोग शुरू किया गया है, जिससे प्रदूषण काफी हद तक नियंत्रित हुआ है।

बीएस6 मानक के तहत उपयोग किए जाने वाले ईंधन में भी बदलाव किए गए हैं। पहले जहाँ बीएस4 ईंधन में सल्फर की मात्रा 50 पीपीएम (पार्ट्स पर मिलियन) थी, वहीं बीएस6 ईंधन में इसे घटाकर केवल 10 पीपीएम कर दिया गया है। यह बदलाव वाहनों के इंजन की आयु बढ़ाने के साथ-साथ प्रदूषण को भी कम करता है।

बीएस6 मानक लागू होने से ऑटोमोबाइल उद्योग में बड़े तकनीकी परिवर्तन हुए। कंपनियों को अपने इंजनों को नए मानकों के अनुरूप बनाने के लिए भारी निवेश करना पड़ा। इस वजह से वाहनों की कीमतों में थोड़ी वृद्धि हुई, लेकिन दीर्घकालिक दृष्टि से यह देश और पर्यावरण दोनों के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ।

सरकार द्वारा बीएस6 को लागू करने का उद्देश्य केवल पर्यावरण संरक्षण ही नहीं बल्कि जनस्वास्थ्य की रक्षा भी है। भारत के कई शहर जैसे दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और चेन्नई वायु प्रदूषण के मामले में दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में गिने जाते हैं। ऐसे में बीएस6 मानक वायु की गुणवत्ता में सुधार लाने की दिशा में अत्यंत आवश्यक कदम था।

हालाँकि, बीएस6 मानक के क्रियान्वयन में कुछ चुनौतियाँ भी आईं। छोटे वाहन निर्माताओं को नई तकनीक अपनाने में कठिनाई हुई, और प्रारंभिक लागत अधिक होने के कारण उपभोक्ताओं पर बोझ बढ़ा। फिर भी, पर्यावरण संरक्षण के लिए यह आवश्यक कदम था, जिसने भारत को स्वच्छ और हरित भविष्य की ओर अग्रसर किया।

बच्चों को रचनात्मक कार्य करने को प्रेरित करें

सुनील कुमार माथुर
जोधपुर , राजस्थान

प्रकृति की गोद में रहकर ही तो इंसान बड़ा होता हैं। इसलिए हर व्यक्ति का दायित्व बनता हैं कि वह हरे भरे वृक्षों को किसी तरह से नुकसान न पहुचायें और न ही उन्हें काटे व कटने दें, चूंकि वृक्ष है तो हम हैं।

बच्चों को स्क्रीन की आदत से दूर रखने के लिए उन्हें रचनात्मक कार्य करने के लिए प्रेरित करते रहना चाहिए जिससे उनका रूझान मोबाइल या स्क्रीन की लत में न पड़े। उन्हें बागवानी , आउटडोर गेम्स , साहित्यिक पत्र पत्रिकाएं पढ़ने को दी जानी चाहिए ताकि वे मोबाइल या स्क्रीन की लत से दूरी बनाएं हुए रहे। अगर अभिभावक बच्चों को प्रेम और स्नेह के साथ मोबाइल या स्क्रीन की लत के दुष्प्रभाव बतायें तो वे सहज रुप से मान जाते हैं।

बच्चों को भी अब महसूस होता हैं कि व्हाट्सएप पर दिन भर सुप्रभात या अनावश्यक विडियो डालने एवं देखना समय की बर्बादी के अलावा कुछ भी नहीं है। अगर अभिभावकगण भी बच्चों को मोबाइल या स्क्रीन की आदत से दूर रखना चाहते हैं तो पहल अपने से ही करनी होगी। बच्चों को रचनात्मक कार्यों में लगाते हुए स्वयं भी धैर्य, सहनशीलता, त्याग और संयम रखते हुए इनसे दूर रहे तभी बच्चे आपका अनुसरण कर सकेंगें। चूंकि कुछ पाने के लिए कुछ खोना बेहतर है और आपका यह त्याग बच्चों का सुनहरा भविष्य बना सकता हैं।

साहित्य सृजन की खुशबू

साहित्य समाज का दर्पण होता है। हमारी भारतीय सभ्यता और संस्कृति का साहित्य सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका रहीं हैं और आज भी हैं। यहीं वजह है कि हमारे साहित्यकार समय समय पर अपनी लेखनी के जरिए साहित्य सृजन कर समाज की अनूठी सेवा कर रहे हैं जो वंदनीय एवं सराहनीय है।

हमारे वर्तमान और प्राचीन सभी साहित्यकारों ने अपने साहित्य सृजन में प्रकृति के सौंदर्य का व पेड़, पौधों, पतियों, पुष्पों की खुशबू, हरियाली, नदियों, पहाड़ों, पक्षियों की चहचहाहट व पशुओं तक को लेकर अपनी कविताएं, कहानियां, आलेखों, चित्र पहलियों में भी इनका जिस सुन्दरता के साथ वर्णन किया है जो बहुत ही मनोरंजक व मनोहारी हैं। हमारे साहित्यकार सदैव से प्रकृति प्रेमी रहें हैं और आज भी हैं। यहीं वजह है कि प्रकृति के सौंदर्य के वर्णन के बिना साहित्य सृजन करना आधा अधूरा है।

प्रकृति की गोद में रहकर ही तो इंसान

बड़ा होता हैं। इसलिए हर व्यक्ति का दायित्व बनता हैं कि वह हरे भरे वृक्षों को किसी तरह से नुकसान न पहुचायें और न ही उन्हें काटे व कटने दें , चूंकि वृक्ष है तो हम हैं। वृक्षों की हरियाली के कारण ही हमें शुद्ध आक्सीजन मिलती हैं व हमारा स्वास्थ्य स्वस्थ रहता हैं। साहित्यकार अपनी लेखनी के माध्यम से समाज को समय-समय पर प्रकृति के सौन्दर्य की ओर ध्यान दिलाता हैं लेकिन इंसान अपने स्वार्थ व विकास के नाम पर प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहा है जिसके कारण प्रकृति भी समय-समय पर अपनी विनाश लीला का जलवा दिखाकर इंसान को आगाह कर रही है कि अब भी समय हैं कि वह प्रकृति के साथ किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ न करें समय की कद्र कीजिए

समय बड़ा ही बलवान है

गया समय कभी भी वापस नहीं आता है, इसलिए समय के एक-एक पल का सदुपयोग कीजिए। जो व्यक्ति समय की कद्र करता है समय उसकी कद्र करता हैं। अतः जीवन में अपने सपनों को समय पर पूरा करना है, निर्धारित लक्ष्य को हासिल करना हैं तो आज से और अभी से समय की कद्र करना आरम्भ कर दीजिए और हर पल का सदुपयोग कीजिए ताकि बाद में पछताना न पड़े।

आज का दौर प्रतिस्पर्धा का दौर है और हर कोई एक दूसरे आगे निकलने में लगा हैं। बेरोजगारी चरम सीमा पर है। हम देख रहें हैं कि प्रतियोगी परीक्षाओं में सैकड़ों पदों के लिए लाखों विधार्थी आवेदन करते हैं। साल भर कड़ी मेहनत और कोचिंग करते हैं। रात दिन पढाई के अलावा उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं देता है फिर भी परीक्षा के दूसरे दिन समाचार पत्रों में यहीं पढ़ने को मिलता है कि अमुक अमुक केन्द्रों पर विधार्थी समय पर नहीं पहुंचे, वे परीक्षा के लिए केंद्र अधीक्षक व शिक्षकों के समक्ष मिन्नतें करते रहें,

गिड़गिड़ाते रहे लेकिन उन्होंने परीक्षार्थियों की एक न सुनी और वे परीक्षा देने से वंचित रह गए। देरी के अनेक कारण बताये जाते हैं।

समझ में नहीं आता कि जो परीक्षार्थी साल भर परीक्षा देने हेतु कड़ी मेहनत करता हैं। वह समय की अनदेखी कैसे कर रहा है। वह सभी नियमों को जानता है फिर भी देरी क्यों? जो विधार्थी परीक्षा देने विलम्ब से पहुंचता है , जिसे समय का ज्ञान नहीं , ध्यान नहीं है उनके लिए सामान्य भाषा में कहा जाता हैं कि वो उस पद के लायक ही नहीं है जिस पद के लिए वह परीक्षा देने आया है।

अगर परीक्षार्थी समाचार पत्रों में प्रकाशित देरी के कारणों को ध्यान में रखते हुए व नयी जगह को व अनजान रास्तों को ध्यान में रखते हुए एक दिन पहले परीक्षा केंद्र को देख लें और फिर परीक्षा के दिन निर्धारित समय से करीबन एक घंटा पहले परीक्षा केंद्र पहुंच जाये तो वह कभी भी परीक्षा से वंचित नहीं रहेगा और शांति पूर्वक परीक्षा देकर अपनी तैयारी के अनुसार अंक आसानी से प्राप्त कर सकता है और अपनी कड़ी मेहनत का लाभ प्राप्त कर सकता है। जहां समय का सदुपयोग होता हैं , वहां सफलता अवश्य ही चरण चूमती हैं। बस समय का सदुपयोग करते रहिए और आगे बढ़ते रहिए। यहीं वक्त की पुकार है।

दुआएं

मुसीबत में फंसे हर इंसान की मदद कीजिए। जीव जन्तुओं की मदद कीजिए। उनकी सहायता कीजिए मुसीबत तो कुछ समय बाद चली जायेगी लेकिन वे आपकों जो दुआएं देंगे वह दुआएं जिंदगी भर आपके साथ रहेगी और उन दुआ के माध्यम से आपके जीवन की बगिया हर वक्त महकती रहेगी। आपके जीवन में सफलता हासिल होती रहेगी और आप अपनी मंजिल को बिना बाधा के हासिल कर सकते हैं। दुआएं किसी आशीर्वाद से कम नहीं है। इसलिए हर किसी की मुसीबत के समय अपनी सामर्थ्य के अनुसार मदद जरूर कीजिए। आपका तनिक सा सहयोग किसी जरूरतमंद की जिंदगी को बदल सकता हैं।

हमारे बड़े बुजुर्ग कहते हैं कि मुस्कुराहट का कोई मोल नहीं , रिश्तों का कोई तोल नहीं, इंसान हर मोड़ पर मिल जाते हैं लेकिन हर कोई आपकी तरह अनमोल नहीं होता है। अतः अपनी छवि को बनाए रखें। आपकी यह उत्तम छवि ही आपकी अनमोल पहचान है।

इस जीवन का क्या भरोसा। कब हमारे भीतर की ज्योति बुझ जाये और हम इस नश्वर संसार से विदा हो जाये। इसलिए इस संसार में आये हैं तो परोपकार के कृत्य कर लीजिए। यह परोपकार का पुण्य ही हमारे साथ जायेगा। शेष सारे रिश्ते, गाड़ी, बंगला, नौकर चाकर, धन दौलत यही धरी की धरी रह जायेगी। घमंड शब्द में कोई मात्रा नहीं है फिर भी न जानें क्यों इंसान हर बात में घमंड व अंहकार करता हैं। साथियों ईश्वर को हर रोज धन्यवाद दीजिए कि उन्होंने हमें यह मानव जीवन दिया हैं जो हमारा सौभाग्य है और आप जैसे लोग मिल गये यह हमारा परम सौभाग्य है। वरना इस मोबाइल युग में कौन किस से बात करता हैं। हमारा सौभाग्य है जो हम आपसी प्रेम और स्नेह बनाए हुए हैं और आनन्द मय जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

जब अभिव्यक्ति बने सेतु तब लोकतंत्र सशक्त

अवनीश कुमार गुप्ता
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

भारतीय परंपरा सदा से संवादमयी रही है। उपनिषदों में ऋषि और शिष्य के बीच प्रश्नोत्तर का जो अद्भुत परंपरा दिखाई देती है, वह किसी सभ्यता की बौद्धिक गरिमा का प्रमाण है। वहाँ जिज्ञासा को दबाया नहीं गया, बल्कि प्रोत्साहन मिला। यदि शिष्य असहमति प्रकट करता था तो गुरु उसे सुनते और उत्तर देते। इसी प्रकार भगवान बुद्ध ने भी कहा—"सत्य को आँख मूँदकर स्वीकार मत करो, उसे परखो, अनुभव करो और तब मानो।"

भारतीय ग्राम्य जीवन का एक दृश्य स्मरण कीजिए- पीपल के विशाल वृक्ष के नीचे बैठी चौपाल, जहाँ कुछ लोग हुक्का गुड़गुड़ा रहे हैं, बच्चे इधर-उधर दौड़ रहे हैं और बुजुर्ग किसी सामाजिक प्रश्न पर गहन विमर्श कर रहे हैं। वहाँ किसी की वाणी धीमी है, किसी की तीव्र; किसी के तर्क गम्भीर हैं तो किसी के भाव सरल। किंतु सबकी बात सुनी जाती है, सबको कहने का अवसर मिलता है। यही वह लोक-संवाद है, जो भारतीय लोकतंत्र की आत्मा का प्रतिनिधि है।

संविधान ने हमें जो अधिकार प्रदान किए हैं, उनमें अभिव्यक्ति का अधिकार सबसे प्रखर और जीवंत है। यह अधिकार मात्र बोलने तक सीमित नहीं, अपितु यह सोचने, लिखने, गाने और अपनी अनुभूतियों को समाज तक पहुँचाने की स्वतंत्रता है। किंतु इस अधिकार का सौंदर्य तभी है जब वह केवल "मेरे लिए" न होकर "सभी के लिए" हो। यदि मैं अपनी बात कह सकता हूँ तो आपको भी वैसा ही अधिकार है। यही संतुलन लोकतंत्र को स्थायी और शक्तिशाली बनाता है।

भारतीय परंपरा सदा से संवादमयी रही है। उपनिषदों में ऋषि और शिष्य के बीच प्रश्नोत्तर का जो अद्भुत परंपरा दिखाई देती है, वह किसी सभ्यता की बौद्धिक गरिमा का प्रमाण है। वहाँ जिज्ञासा को दबाया नहीं गया, बल्कि प्रोत्साहन मिला। यदि शिष्य असहमति प्रकट करता था तो गुरु उसे सुनते और उत्तर देते। इसी प्रकार भगवान बुद्ध ने भी कहा- "सत्य को आँख मूँदकर स्वीकार मत करो, उसे परखो, अनुभव करो और तब मानो।" यह शिक्षा हमें यही बताती है कि विचारों की विविधता शत्रु नहीं, बल्कि विकास का सेतु है।

किन्तु आज का परिदृश्य थोड़ा भिन्न है। आधुनिकता ने हमें नये उपकरण दिए, जिनमें

सोशल मीडिया प्रमुख है। वहाँ हर व्यक्ति को वाणी मिली है, मंच मिला है। एक ग्रामीण युवक भी अपनी पीड़ा और विचार को पूरे विश्व तक पहुँचा सकता है। यह लोकतंत्र की विराट उपलब्धि है। किन्तु यही मंच कभी-कभी कटुता का माध्यम भी बन जाता है। असहमति को सुनने की धैर्यशीलता घटने लगी है। विरोधी मत को 'असत्य' या 'दुश्मन' मान लेना हमारे भीतर का लोकतंत्र खोखला कर देता है।

लोकतंत्र की सबसे बड़ी शक्ति उसकी विविधता है। यदि सब एक ही ढंग से सोचने लगें तो यह संसार नीरस और निर्जीव हो जाएगा। नवीन विचार, नवीन दिशाएँ प्रायः असहमति से ही जन्म लेती हैं। गैलीलियो का मत उस समय स्थापित विचारों से भिन्न था, पर उसी असहमति ने विज्ञान की गति बदली। गांधीजी का अहिंसा का सिद्धांत भी अंग्रेज़ साम्राज्यवादी मत का विरोध था, और उसी से स्वतंत्रता का नया द्वार खुला। अतः असहमति कोई अवरोध नहीं, वरन् परिवर्तन और प्रगति की प्रेरणा है।

आज भारत में हम विचारधाराओं के खाँचों में बँट जाते हैं- कोई स्वयं को दक्षिणपंथी कहता है, कोई वामपंथी। किंतु क्या सचमुच विचार को इन संकीर्ण दायरों में बाँधा जा सकता है? समाज की वास्तविक उन्नति तब होगी जब हम इन लेबलों से ऊपर उठकर "मानवपंथी" बनें, जहाँ हर दृष्टिकोण का मूल्यांकन विवेक से हो और उपयोगी अंश को स्वीकार किया जाए।

कल्पना कीजिए, आप रेलगाड़ी में सफर कर रहे हैं। सामने बैठा यात्री राजनीति की चर्चा करता है, बगल वाला खेलों पर, और कोई तीसरा धर्म या संस्कृति पर। राय भिन्न-भिन्न हैं, किंतु यात्रा साथ-साथ पूरी होती है। यही लोकतंत्र का रूपक है- विचार अलग-अलग, किंतु गंतव्य एक।

समाज में कुरीतियाँ और रूढ़ियाँ सदियों से बोझ बनकर बैठी हैं। मात्र इसलिए कि वे परंपरा का हिस्सा हैं, उन्हें थामे रहना उचित नहीं। विवेक कहता है कि जो परंपरा समाज को जोड़ती है उसे अपनाओ और जो कुरीति समाज को बाँटती है, उसका त्याग करो। यही प्रक्रिया हमें एक परिष्कृत, लोककल्याणकारी और प्रगतिशील समाज की ओर ले जाएगी।

समाज में कुरीतियाँ और रूढ़ियाँ सदियों से बोझ बनकर बैठी हैं। मात्र इसलिए कि वे परंपरा का हिस्सा हैं, उन्हें थामे रहना उचित नहीं। विवेक कहता है कि जो परंपरा समाज को जोड़ती है उसे अपनाओ और जो कुरीति समाज को बाँटती है, उसका त्याग करो। यही प्रक्रिया हमें एक परिष्कृत, लोककल्याणकारी और प्रगतिशील समाज की ओर ले जाएगी।

अभिव्यक्ति का अधिकार तभी सार्थक है जब वह विभाजन का नहीं, अपितु समन्वय का साधन बने। नदी की भाँति, जिसमें अनेक धाराएँ मिलकर एक प्रवाह बनाती हैं, समाज में भी अनेक विचार मिलकर एक सांस्कृतिक धारा का निर्माण करते हैं। यह तभी संभव है जब हम स्वीकार करें कि मेरी दृष्टि संपूर्ण नहीं और दूसरों की दृष्टि भी अपूर्ण नहीं।

लोकतंत्र केवल एक शासन पद्धति नहीं, यह जीवन जीने की कला है। यदि हम घर की बैठक में, विद्यालय की कक्षा में, या कार्यस्थल की सभा में असहमति का सम्मान कर सकें, तो हम सच्चे लोकतांत्रिक नागरिक हैं। चुनावों में वोट डालना लोकतंत्र का एक पक्ष है, पर असली लोकतंत्र हमारी रोज़मर्रा की भाषा और व्यवहार में झलकना चाहिए।

आज की पीढ़ी के लिए सबसे बड़ी चुनौती यही है कि वह कट्टरता को त्यागे और संवाद को अपनाए। सोशल मीडिया पर, सड़कों पर, चौपालों में और संसद के भीतर-हर जगह संवाद जीवित रहना चाहिए। संवाद का अर्थ केवल बोलना नहीं, सुनना भी है। जब सुनने की कला नष्ट हो जाती है, तो लोकतंत्र धीरे-धीरे निरंकुशता में बदल जाता है।

अंततः यह स्मरण रखना होगा कि लोकतंत्र की नींव हमारे भीतर की विनम्रता पर टिकी है। जब हम दूसरों की वाणी को सम्मान देंगे, उनकी असहमति को अवसर देंगे, तभी हम कह पाएँगे- "जब अभिव्यक्ति बने सेतु तब लोकतंत्र सशक्त।"

शिक्षा नीति में भारतीयता और स्वदेशी मूल्यों का समावेश

विभा कनन
कोयंबटूर तमिलनाडु

शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का साधन नहीं, बल्कि किसी भी राष्ट्र की आत्मा होती है। यह समाज के चिंतन, संस्कृति और सभ्यता का प्रतिबिंब है। भारत जैसे प्राचीन और बहुसांस्कृतिक देश के लिए शिक्षा सदैव केवल आजीविका का साधन नहीं रही, बल्कि चरित्र निर्माण, सामाजिक समरसता और आध्यात्मिक उन्नति का माध्यम रही है। आज जब भारत वैश्वीकरण के दौर में आत्मनिर्भरता और स्वदेशी चेतना की ओर अग्रसर है, तब यह आवश्यक हो गया है कि हमारी शिक्षा नीति में भारतीयता और स्वदेशी मूल्यों का समावेश किया जाए, ताकि हम आधुनिकता के साथ अपनी जड़ों से भी जुड़े रहें।

भारत की पारंपरिक शिक्षा प्रणाली: स्वदेशी ज्ञान का आधार

भारत की शिक्षा परंपरा अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रही है। तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी और कांचीपुरम जैसे विश्वविद्यालयों में अध्ययन केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं था, बल्कि जीवनमूल्यों, धर्म, दर्शन, चिकित्सा, गणित, खगोल और कला का गहन अध्ययन होता था।

गुरुकुल प्रणाली में शिक्षा का आधार "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसी समष्टिगत सोच थी। वहाँ शिष्य केवल विषय नहीं सीखता था, बल्कि समाज, प्रकृति और स्वयं के प्रति उत्तरदायित्व भी समझता था।

यह स्वदेशी शिक्षा प्रणाली आत्मनिर्भरता, सादगी और संस्कारों पर आधारित थी। शिक्षक का सम्मान सर्वोपरि था, और शिक्षा को व्यापार नहीं, बल्कि साधना माना जाता था।

औपनिवेशिक काल और शिक्षा का परकीयकरण

ब्रिटिश शासन के दौरान भारत की शिक्षा प्रणाली पर गहरा आघात हुआ। 1835 में लॉर्ड मैकॉले की शिक्षा नीति ने भारतीय परंपरा को कमजोर किया और अंग्रेजी माध्यम को श्रेष्ठ घोषित कर दिया। इस नई व्यवस्था का उद्देश्य भारतीयों में "क्लर्क" तैयार करना था- ऐसे लोग जो मानसिक रूप से अंग्रेज़ी सोच अपनाएँ और अपनी जड़ों से कट जाएँ।

परिणामस्वरूप, शिक्षा का उद्देश्य "जीविका" तक सीमित हो गया, जबकि "जीवन" की शिक्षा पीछे छूट गई। भारतीय भाषाओं, साहित्य, दर्शन और स्वदेशी विज्ञान को "अप्रासंगिक" बताया गया। यह वह दौर था जब भारत की आत्मा को शिक्षा से अलग कर दिया गया।

स्वतंत्रता के बाद शिक्षा की नई दिशा

स्वतंत्र भारत में शिक्षा नीति के माध्यम से भारतीयता की पुनर्स्थापना का प्रयास आरंभ हुआ। राधाकृष्णन आयोग (1948-49) ने शिक्षा को "राष्ट्रीय चरित्र निर्माण" का माध्यम बताया, जबकि कोठारी आयोग (1964-66) ने "शिक्षा को राष्ट्रीय विकास की कुंजी" कहा। इसके बावजूद शिक्षा प्रणाली लंबे समय तक औपनिवेशिक ढाँचे में ही चलती रही। परीक्षा-केंद्रित, अंकों की होड़ और रोजगार-केन्द्रित सोच ने विद्यार्थियों को मूल्यों से दूर किया। फिर भी, स्वदेशी चेतना और भारतीय दृष्टिकोण को पुनर्जीवित करने के प्रयास निरंतर होते रहे।

नई शिक्षा नीति 2020: भारतीयता की पुनर्स्थापना का प्रयास

वर्ष 2020 में घोषित राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) इस दिशा में ऐतिहासिक मील का पत्थर है। यह नीति केवल शैक्षणिक सुधार नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण का संकेत है। इसका उद्देश्य है- "भारत को ज्ञान का वैश्विक केंद्र बनाना, जहाँ परंपरा और आधुनिकता का समन्वय हो।"

नीति के प्रमुख स्वदेशी तत्व:

मातृभाषा में शिक्षाः

प्रारंभिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा देने का निर्णय भारतीयता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि विचार का माध्यम है। जब बच्चे अपनी मातृभाषा में सोचते हैं, तो वे अपनी संस्कृति से गहरा जुड़ाव महसूस करते हैं।

भारतीय ज्ञान प्रणाली का समावेशः

नीति में वैदिक गणित, योग, आयुर्वेद,

खगोलशास्त्र, तंत्रज्ञान, नाट्यशास्त्र, दर्शन और कला के अध्ययन को प्रोत्साहित किया गया है। इससे विद्यार्थियों को अपने देश की वैज्ञानिक और सांस्कृतिक परंपरा पर गर्व महसूस होगा।

नैतिक और मूल्य आधारित शिक्षा: शिक्षा को केवल रोजगार नहीं, बल्कि नैतिकता, सेवा और सह-अस्तित्व के सिद्धांतों से जोड़ा गया है। यह वही मूल्य हैं जिन्हें भारतीय संस्कृति ने सदियों से "सत्य, अहिंसा, करुणा और श्रम" के रूप में स्वीकारा है।

स्थानीय और स्वदेशी कला का संरक्षण:

नीति में स्थानीय कला, संगीत, लोक संस्कृति और हस्तशिल्प के संरक्षण पर बल दिया गया है। विद्यार्थियों को अपने क्षेत्रीय विरासत से जोड़ने का यह एक सशक्त माध्यम है।

शिक्षक की भूमिका में परिवर्तन: शिक्षक को केवल अध्यापक नहीं, बल्कि "मार्गदर्शक और राष्ट्रनिर्माता" की भूमिका दी गई है- जो भारतीय गुरुकुल परंपरा की पुनर्स्थापना जैसा है।

भारतीयता का सार: शिक्षा के तीन आयाम। भारतीयता का अर्थ केवल परंपरागत प्रतीकों तक सीमित नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन में निहित है।

भारतीय दृष्टि में शिक्षा के तीन आयाम हैं

ज्ञान (बुद्धि का विकास)

भक्ति (भावना का परिष्कार)

कर्म (आचरण की शुद्धता)

जब ये तीनों एकसाथ संतुलित रूप में विकसित होते हैं, तभी शिक्षित व्यक्ति संपूर्ण बनता है। यह समग्रता ही भारतीय शिक्षा की आत्मा है।

स्वदेशी मूल्य: शिक्षा की आत्मा

"स्वदेशी" का अर्थ केवल देसी वस्तुएँ नहीं, बल्कि देसी विचार और स्वतंत्र दृष्टिकोण है। शिक्षा में स्वदेशी मूल्य तभी आएँगे जब हम उसे अपने जीवन, पर्यावरण और समाज से जोड़ेंगे।

मुख्य स्वदेशी मूल्य:

स्वावलंबन और सादगी: विद्यार्थी आत्मनिर्भर बनें, उपभोगवादी नहीं।

प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता: भारतीय जीवनशैली "प्रकृति पुरुष" की है, शिक्षा में पर्यावरणीय चेतना आवश्यक है।

समरसता और समानता: जाति, वर्ग या भाषा से परे मानवता की भावना।

सेवा और सहयोग: शिक्षा का उद्देश्य समाज की भलाई में योगदान देना हो।

आध्यात्मिकता और नैतिकता:

भारतीयता का मूल तत्व "अंतःशुद्धि" है।

भारतीय भाषाएँ और शिक्षा: चुनौतियाँ और संभावनाएँ

नई शिक्षा नीति में मातृभाषा को प्राथमिकता देना एक क्रांतिकारी कदम है, लेकिन इसके सामने कई चुनौतियाँ भी हैं

- सभी भाषाओं में उच्च शिक्षा के लिए पर्याप्त सामग्री का अभाव
- प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी
- अभिभावकों की अंग्रेज़ी माध्यम के प्रति झुकाव। फिर भी, यह दिशा सही है।

आज तकनीकी अनुवाद उपकरणों और डिजिटल शिक्षा प्लेटफ़ॉर्मों के माध्यम से भारतीय भाषाओं में उत्कृष्ट सामग्री तैयार की जा सकती है। यदि नीति निर्माता, शिक्षक और समाज मिलकर कार्य करें, तो मातृभाषा आधारित शिक्षा भारतीयता की मजबूत नींव बन सकती है।

शिक्षक प्रशिक्षण में भारतीयता का समावेश

भारतीय शिक्षा प्रणाली तभी सफल होगी जब शिक्षक स्वयं भारतीयता का प्रतीक बनें। शिक्षक केवल विषय विशेषज्ञ नहीं, बल्कि मूल्य-संवाहक भी हों। उनके प्रशिक्षण में यह सुनिश्चित किया जाए कि वे भारतीय दर्शन, संस्कृति, लोककथाओं और नैतिक परंपराओं को शिक्षा में सम्मिलित करें। प्रशिक्षण संस्थानों में "भारतीय ज्ञान प्रणाली" को अनिवार्य विषय के रूप में जोड़ा जाना चाहिए।

प्राचीन शिक्षा प्रणाली और आधुनिक प्रबंधन का समन्वय

भारतीय शिक्षा में जहाँ "संस्कार" थे, वहीं आधुनिक शिक्षा में "संरचना" है। आज आवश्यकता है कि दोनों का संतुलन स्थापित किया जाए। गुरुकुल की आत्मीयता और आधुनिक विद्यालय की तकनीकी दक्षता- दोनों मिलकर एक ऐसी प्रणाली बनाएँ जो न केवल ज्ञान दे, बल्कि जीवन को दिशा दे। यह "भारतीयता का आधुनिक रूप" होगा।

प्रशासनिक दृष्टिकोण से स्वदेशी शिक्षा

नीति निर्माण के स्तर पर भी स्वदेशी दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। प्रशासन को शिक्षा को केवल बजट या संसाधन का विषय नहीं, बल्कि राष्ट्रनिर्माण का साधन मानना होगा। सरकार द्वारा "भारतीय ज्ञान प्रणाली केंद्र", "आयुष शिक्षा", "राष्ट्रीय शिक्षण संसाधन पोर्टल" जैसी पहलें इसी दिशा में हैं।

इनके माध्यम से भारतीय मूल्य प्रशासनिक ढाँचे में भी अपनी जगह बना रहे हैं।

वैश्विक संदर्भ में भारतीयता

हमारी संस्कृति "वसुधैव कुटुंबकम्" का संदेश देती है- अर्थात् समूचा विश्व एक परिवार है। इसलिए शिक्षा में भारतीयता का समावेश हमें वैश्विकता से दूर नहीं, बल्कि और अधिक मानवीय बनाता है।

भारतीय ज्ञान, योग, आयुर्वेद, ज्योतिष, दर्शन, ध्यान और अहिंसा जैसी अवधारणाएँ आज विश्वभर में स्वीकृत हो चुकी हैं। जब हम इन्हें शिक्षा का हिस्सा बनाते हैं, तो हम "लोकल टू ग्लोबल" की सच्ची दिशा में बढ़ते हैं।

भविष्य की दिशा: भारत का लक्ष्य केवल तकनीकी दक्षता नहीं, बल्कि मानवीय नेतृत्व है। इसके लिए हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जो व्यक्ति को सोचने, अनुभव करने और निर्णय लेने की स्वतंत्रता दे- पर भारतीयता की सीमाओं में।

नई पीढ़ी में यदि स्वदेशी सोच, आत्मगौरव और समाजसेवा की भावना जागृत हो, तो भारत पुनः "विश्वगुरु" बनने की राह पर अग्रसर होगा।

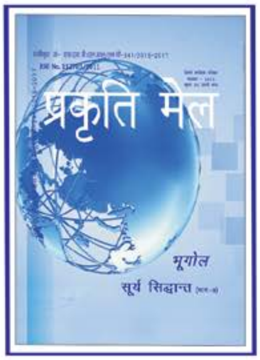

R N I No. UPHIN/2011/40224

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकृति मेल वह आईना है जिसमें आप अपनी वास्तविक तस्वीर के साथ प्रकृति की हर क्रिया प्रतिक्रिया का वैज्ञानिक स्वरूप देखें।

अशोक 'मानव'

उत्तर भारत की तेजी से लोकप्रिय होती हिन्दी मासिक पत्रिका
(शीघ्र ही अपने विज्ञापन की जगह बुक करवाये) (8423330911)

☐ हां, मैं प्रकृति मेल पत्रिका का वर्षिक ग्राहक बनना पसंद करूंगा/ करूंगी

प्रकृति मेल के पक्ष में देय ₹ ☐☐☐ कैश ☐ चेक ☐ तारीख ☐☐☐☐☐☐

1 year membership fee -220/- only. (Must be drawn in favour of 'Prakriti mail' payable at lucknow)

संलग्न चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं. ☐☐☐☐☐☐ आहरित बैंक (बैंक का नाम)________________

नाम ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

पता____

________________________ राज्य________________ पिन____________

फोन नंबर ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐ ई-मेल:________________________

कृपया फार्म भरकर निम्नलिखित पते पर भेजे:

प्रकृति मेल, सूर्या आश्रम, मानव नगर, (निकट आई.आई.एस.ई.) कल्याणपुर, लखनऊ, पिनकोड- 226022, उ0 प्र0।

नियम और शर्तें

पत्रिका का मूल्य और आफॅर केवल भारत में लागू। कृपया पत्रिका की पहली प्रति डाक या कोरियर के माध्यम से मंगवाने के लिए कुछ समय दें। किसी भी तरह के विवाद का निबटारा केवल लखनऊ की अदालत में होगा।

नि:शुल्क ई-मैगज़ीन प्राप्त करने के लिए हमारे वेबसाइट - www.prakritimail.com पर सम्पर्क करें।

सूत्र वाक्य

अशोक मानव

- व्यक्ति अपने बाह्य और आंतरिक जगत से जुड़ता है। बाह्य जगत से वह अपने किसी निजी हित हेतु जुड़ता है, जिसकी पूर्ति होने या न होने की अवस्था में वह उससे दूरी बना लेता है, परन्तु अपने आंतरिक जगत से हर दर्द के बाद भी जुड़ा रहना चाहता है।

- प्रकृति विकलांगता को नहीं सक्षमता को जन्म देती है। मनुष्य अपनी चाहत और इच्छाओं के वष में होकर एक दूसरे पर निर्भर होते हुए विकलांग हो गया है।

- पूर्व निर्धारित नियतबद्ध तरीके से कोई कार्य नहीं करना चाहिए, किसी परिस्थितिवश लिया गया तात्कालिक निर्णय आपराधिक नहीं होता।

- मोहब्बत वह मीठा जहर है जो धीरे-धीरे अर्थहीन कर देता है और नफरत वह अमृत है जो अर्थपूर्ण निर्माण करता है।

- किसी गलती की क्षमा नहीं होती है, वह गलती दुबारा न हो यही उसकी क्षमा है।

- अधीनता अधिकार नहीं, आवश्यकता की मजबूरी है। जो सिर्फ स्वतंत्रता को परतंत्रता में परिवर्तित कर देती है।

- कोई भी घटना बुरी होती ही नहीं, हम अपनी इच्छानुसार उसका निर्धारण अच्छे या बुरे रूप में कर लेते है।

- किसी घटना को रोका नही जा सकता बल्कि उस घटना से खुद को अलग किया जा सकता है।

- घटना तो प्रकृति का प्रवाह है जिसकी गन्ध प्रकृति की वह ऊर्जा है जो बन जाने पर निकलती ही है यदि इसे रोका जाता है तो रोकने वाला प्रकृति विरोधी होता है।

- किसी पीड़ित व्यक्ति को पीड़ा निरर्थक नही होती बल्कि उसके आन्तरिक जमीन को उपजाऊ बनाने की क्रिया होती है जिस पर आगे सृजन होता है।

- मोह और प्रेम बस दुःखी होना और रोना ये अप्राकृतिक दुःखा को बढ़ावा देता है।

- समस्त जीव, पदार्थ से मिलकर ही प्रकृति का निर्माण होता है

सूर्य सिद्धांत भाग - 7

सूर्य + पदार्थ = विस्तार

सूर्य हर बिखरी अवस्था को पूर्ण करने हेतु बीजत्व का निर्माण करता है जिसे सूर्य सिद्धांत कहते हैं।

अशोक मानव

सूर्य सिद्धान्त की क्रिया में प्रकाशीय विज्ञान से विस्फोटित कण वैज्ञानिक क्रिया से अलग-अलग ग्रहों का निर्माण करते है। जिसकी भौगोलिक पूर्णता के बाद जैविक संरचना का विकास होता है। इसी विकास से जीव का निर्माण होता है जिससे पदार्थ का निर्माण होता है पदार्थ से जीव की अनेको प्रजातियां बढ़ती है जो प्रकाश गन्धीय मंथन की प्रक्रिया से पूरा करता है। इस विस्तार को ब्रह्माण्ड कहते हैं। इस ब्रह्माण्ड में पृथ्वी की तरह और भी ग्रह है जहाँ इसी प्रकार जीवन का विस्तार होता है। एक ग्रह के विस्तार में ब्रह्माण्ड के सभी ग्रहों का योगदान होता है। ब्रह्माण्ड की सम्पूर्ण जलवायु को प्रकृति कहते हैं। ब्रह्माण्ड का निर्माण सूर्य की ध्वनि प्रकाश के निर्गन्ध विज्ञान से होता है इसलिए एक जीव में ब्रह्माण्ड के सभी ग्रहों के गन्ध का कणीय अंश होता है जो अंग विशेष का निर्माण करता है इसलिए एक जीव पूर्ण ब्रह्माण्ड का योग होता है।

जीव सूर्य प्रकाश द्वारा की गयी जैविक संरचना का परिणाम है। यह क्रिया प्रकाश पड़ने से दो चरण में पूरी होती है- पहले चरण में प्रकाश पदार्थ पर पड़ने से रासायनिक क्रिया करता है जिससे हानिकारक पदार्थ ख़त्म होकर परिपक्व पदार्थ में परिवर्तित होते है। दूसरे चरण में प्रकाश पड़ने से परिपक्व पदर्थ के गनधीय कण को हवा में ले जाकर गन्धीय कणों का मिलान कर आत्मिक बीज की रचना करता है। जो जीव बनकर पदार्थ का निर्माण करते है। प्रदूषण को मिटाने और नई गन्ध का निर्माण कर पदार्थ का विस्तार करने की क्रिया सूर्य प्रकाश द्वारा ही होती है आत्मा का निर्माण गन्धीय मंथन से पूरा करने के बाद सूर्य प्रकाश ही ज्योति रूप में जीव का भौगोलिक विकास कर आवश्यकतानुसार स्वरूप देता है जिससे वह जीव जिस प्रदूषण को मिटाने के लिए पैदा होता है उसे अपना आहार बनाकर शरीर का विकास करता है और शरीर से अपनी प्रवृत्ति के अनुसार गुण गन्ध का निर्माण करता है इस प्रकार अनेको प्रकार के गुण गन्ध का विस्तार करता है और इसी क्रिया से प्रकृति में अनेको प्रकार की प्रजीतियां बढ़ती जा रही है। सूर्य प्रकाश पदार्थ पर पड़कर और जीव के अन्दर सूक्ष्म

रूप में रहकर निरन्तर इस क्रिया को पूरा करते हुए ब्रह्माण्ड का विस्तार कर रहा है। इसी विस्तार का परिणाम मानव भी है। जो प्रकाश मानव के अन्दर रहकर उसकी भौगोलिकता का विकास करता है वही प्रकाश नाली के

सूर्य प्रकाश पदार्थ पर पड़कर और जीव के अन्दर सूक्ष्म रूप में रहकर निरन्तर इस क्रिया को पूरा करते हुए ब्रह्माण्ड का विस्तार कर रहा है। इसी विस्तार का परिणाम मानव भी है। जो प्रकाश मानव के अन्दर रहकर उसकी भौगोलिकता का विकास करता है वही प्रकाश नाली के कीड़े में रहकर उसकी भौगोलिकता का विस्तार करता है। जो नाली की गन्दगी को खाकर अपने स्वभाव की गन्ध बना जाता है।

कीड़े में रहकर उसकी भौगोलिकता का विस्तार करता है। जो नाली की गन्दगी को खाकर अपने स्वभाव की गन्ध बना जाता है।

हर जीव अवगुण को खत्मकर एक गुण बना जाता है शायद ऐसा न होता तो ब्रह्माण्ड का विस्तार न होता। जैविक विकास की श्रृंखला में मानव बुद्धिजीवी हो गया है जो अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए वैज्ञानिक बनकर प्रकृति की सम्पत्ति को नष्ट कर रहा है। अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए देवी देवताओं की अनेको पद्धतियों का विकास कर लिया है, इस पद्धति के तरीके से प्रकृति को पीड़ा देकर नष्ट कर रहा है। जैसे - फूल-पत्ते को तोड़कर चढ़ाने से, दर्द भरे भजन से, व्रत घ्यान साधना से सिर्फ पीड़ीत गन्ध का निर्माण कर रहा है, इसी क्रिया से राक्षस की उत्पत्ति हो गयी। प्रकृति की मनुष्य प्रजाति ही गुण को खाकर अवगुण की उत्पत्ति कर रही है। जिसका परिणाम अप्राकृतिक घटनायें हैं और यही जाति इसके लिए भगवान को दोषी बताती है। वाह ! मनुष्य वाह ! चार दिन की जिन्दगी का भरोसा नहीं अपने वैज्ञानिक बसाने का सपना देख रहा है। प्रकृति की यह जाति सौदागर हो गयी है अपने प्रयोग से प्रकृति के अंगों को काटकर व्यापार कर रही है असली को बेचकर नकली नोट इकठ्ठा करने में लगी हुई है। इसकी यही क्रिया कुछ दिन तक और चलती रहेगी तो चाँद तो बहुत दूर पृथ्वी पर भी जीवन असम्भव हो जायेग। प्रकृति के सारे जीव कितनी आसानी से भोजन प्राप्त कर रहे हैं पर मानव अपने विवेक से अपना भोजन शतरंज की विशात बना दिया है इसकी प्राप्ति के लिए क्या-क्या करना पड़ रहा है। मानव को सूर्य सिद्धान्त के उदाहरण से अपना अस्तित्व बचाने के लिए नकली जीवन छोड़कर (अन्दर बाहर एक होकर) अपने गुण का विकास करना चाहिए जिससे मानवता की गन्ध का निर्माण होगा। यही गन्ध राक्षसी दुर्गन्ध को खत्मकर दनत का अन्त कर देगी। मानव का शरीर सिर्फ मानव का है अन्दर दनत का वास कर मनुष्य बना दिया इसलिए इसे अप्राकृतिक क्रियायें ही इसे वास्तविक और अच्छी लग रही है। पर सब कुछ होते हुए सुकून नहीं है। प्रकृति की नूरानियत इसे अच्छी नहीं लग रही है सिर्फ उसे बदलने में लगा हुआ है। मानव यदि कुछ बना सकता है तो अपने अन्तः करण से बना सकता है वाह्य जगत में कुछ नहीं सिर्फ बिगाड़ सकता है। मानव यदि शान्ती चाहते हो तो अपने वास्तविक जीवन में आ जाओं। नहीं तो प्रकृति सब कुछ बना सकती है तो अपनी पीड़ा को दूर करने के लिए दनत का खत्मा करने के लिए कोई रास्ता बना लेगी, फिर आप के पास पछताने के अतरिक्त अन्य कोई रास्ता नहीं होग।

प्रश्न हमारे
उत्तर श्री अशोक मानव जी के

प्रश्न : स्वप्न रहस्य का प्राकृतिक विज्ञान क्या है।?

उत्तर : स्वप्न पूर्व की अधूरी अवस्था के रसायन को वर्तमान से जोड़कर कर्म यात्रा को पूर्ण करने की प्राकृतिक तकनीकी है जो अतृप्त को तृप्त कर वजूद में उत्पन्न होने वाले हलचल को शून्य कर आवागमन से मुक्त करने की प्राकृतिक क्रिया है।

प्रश्न : परिस्थितियों का कारण क्यों नहीं खोजना चाहिए ?

उत्तर : परिस्थितियां पूर्व में स्व द्वारा की गयी क्रियाओं का परिणाम है , उसका कारण अन्यत्र खोजकर उसे मानसिक रूप से प्रबल बनाने पर चोट अधिक लगती है।।

प्रश्न : मानवता किसे कहते हैं इसे किस प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है ?

उत्तर : मानसिक मार्ग के नवीनतम वजूद का तार जो अपने संदर्भ में उचित समझता है वही व्यवहार अपने वजूद का तार दूसरे में जोड़ करजो अपने संदर्भ में उचित समझता है वही व्यवहार अपने वजूद का तार दूसरे में जोड़ कर उसके साथ अपने जैसी क्रिया करने की अवस्था को मानवता कहते हैं। मानवता मानव की उस मानसिक अवस्था की खुशबू का नाम है जो किसी जीव पदार्थ के गुण का पहचान कर उसे विकास मुखी बनाएगा जिस प्रकार प्रकृति में सभी जीव पदार्थ में अपनी एक गुणात्मक खुशबू होती है ठीक उसी प्रकार मानवता जिस प्रकार प्रकृति में सभी जीव पदार्थ में अपनी एक गुणात्मक खुशबू होती है ठीक उसी प्रकार मानवता उस क्रिया का नाम है जिसमें वह दूसरे को पीड़ा को देखने के बाद उसकी पीड़ा को खत्म करने का उपाय खोज कर उसे खत्म करने में सहयोग करें।

यदि किसी पाठक के मन में कोई भी सामाजिक या प्राकृतिक प्रश्न उठ रहा है वह उस प्रश्न का निदान चाहते हैं तो पाठक हमें अपना प्रश्न निम्न पते पर भेज सकते हैं। निदान प्रश्न के अगले अंक में दिया जाएगा।

आप अपना प्रश्न डाक द्वारा या ईमेल पर भेज सकते हैं

डाक पता : प्रकृति मेल, सर्या आश्रम, मानव नगर (निकट आई.आई. एस.ई),
कल्याणपुर, लखनऊ-226022, उ0 प्र0
ईमेल-info@parkritimail.com, editor.prakritimail@gmail.com
9807636072, 7376495194

बहराइच का कारिकोट गाँव ग्रामीण पर्यटन की वैश्विक पहचान

गौरीशंकर वैश्य विनम्र
लखनऊ

देश एवं राज्यों की अर्थव्यवस्था में पर्यटन उद्योग एक प्रमुख क्षेत्र के रूप में भरपूर योगदान कर रहा है। पिछले दो दशकों में भारत में पर्यटन उद्योग में आशातीत वृद्धि हुई है। पर्यटन के विविध आयामों में से आज ग्रामीण पर्यटन का प्रमुख स्थान है।

भारत के उत्तर प्रदेश राज्य में बसे गाँवों में सांस्कृतिक धरोहर, लोककला और परंपराएँ गहरी जड़ें जमाए हुए हैं। आज जबकि दुनिया शहरी जीवन की आपाधापी और कृत्रिम आधुनिकता से जूझ रही है, वहीं ग्रामीण जीवन अपनी सरलता, आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक अस्मिता के कारण वैश्विक पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है। इसी क्रम में भारत - नेपाल सीमा से सटा बहराइच जिले का कारिकोट गाँव (Kari Kot) ग्रामीण पर्यटन की दिशा में ऐसा आदर्श बनकर उभरा है, जिसे अब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी सराहा जा रहा है। यह गांव जिला मुख्यालय से लगभग 110 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। दो तरफ जंगल से घिरा 27 हजार जनसंख्या वाला यह गांव मनोरम दृश्य और दुर्लभ वन्यजीवों की उपस्थिति के कारण खास बना हुआ है। हाल ही में कारिकोट गाँव को ICRT अवार्ड 2025 के लिए चयनित किया गया है। यह केवल गाँव या जिले के लिए ही नहीं, अपितु पूरे उत्तर प्रदेश और भारत के लिए गौरव की बात है।पर्यटन के मानचित्र में आने से यहाँ युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़े हैं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रयासों के अनुरूप पर्यटन विभाग ने ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा दिया है। 'एक जिला - एक उत्पाद '(ओडीऐपी) इसी दिशा में एक सराहनीय कदम है। धार्मिक - आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रगति को पंख लगाने के लिए सरकार की दृष्टि अब परम्परा, हस्तशिल्प और संस्कृति की धरोहर के अनुरक्षण, संरक्षण और संवर्द्धन के लिए गांवों पर है। इन भगीरथ प्रयासों के सुखद परिणाम हमें आह्लादित करते हैं। कारिकोट गाँव की वैश्विक स्तर पर पहचान बनना केवल उत्तर प्रदेश राज्य के लिए ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण देश के लिए हर्ष एवं गौरव का विषय है। आइए! विस्तार से जानें! इस अभूतपूर्व उपलब्धि की कहानी।

वैश्विक पहचान : ICRT अवार्ड 2025

ग्रामीण पर्यटन के क्षेत्र में कारिकोट गाँव को वैश्विक पहचान दिलाने वाला सबसे बड़ा कारण है, इसका इंडियन सबकांटिनेंटल रिस्पॉन्सिबल टूरिज्म (ICRT) अवार्ड 2025 के लिए चयन होना।

यह पुरस्कार "One to Watch", "Silver" और "Gold" जैसी श्रेणियों में प्रदान किया जाएगा। यह पुरस्कार उन गाँवों और संस्थाओं को प्रदान किया जाता है, जो सामुदायिक भागीदारी, सांस्कृतिक प्रामाणिकता, पर्यावरणीय स्थिरता, नवाचार, पुनरावृत्ति प्रभाव और रोजगार सृजन जैसे मानकों पर खरे उतरते हैं।

निर्णायक मंडल में पर्यटन क्षेत्र की अंतरराष्ट्रीय हस्तियाँ शामिल हैं, जिनमें प्रो. हैरोल्ड गुडविन (ICRT Global के संस्थापक), मनीषा पांडे (Village Ways की MD), और चार्मारी मेल्ज (ICRT Sri Lanka की निदेशक) प्रमुख हैं।

कारिकोट का चयन इस बात का प्रमाण है कि यह गाँव ग्रामीण पर्यटन की दृष्टि से एक मॉडल के रूप में सामने आया है और आने वाले वर्षों में यह भारत की पहचान का अभिन्न हिस्सा बनेगा।

कारिकोट कैसे बना सम्मान का अधिकारी

यहाँ ग्रामीणों ने लोकनृत्य के अतिरिक्त पारम्परिक व्यंजन और हस्तशिल्प को संरक्षित किया।पर्यटन विभाग के अधिकारियों ने ग्रामीणों को मानसिक रूप से तैयार किया एवं होमस्टे की उपयोगिता समझायी। इससे ग्रामीण आगे आए। ग्रामीण क्षेत्रों का जीवन, थारू संस्कृति, हस्तशिल्प, लोककला, खान - पान के साथ धरोहर, जंगल का मनोरम दृश्य देखने के बाद पर्यटकों का रुझान बढ़ा और ग्रामीणों को नया बाजार भी मिला।

अन्य उल्लेखनीय जानकारी, निम्न विवरण के अनुसार है -

आदिवासी समुदाय नेतृत्व और थारू संस्कृति : कारिकोट गाँव में पर्यटन की नींव केवल भौगोलिक सुंदरता पर नहीं, अपितु थारू आदिवासी समुदाय की सांस्कृतिक धरोहर पर आधारित है। थारू जनजाति सदियों से इस क्षेत्र में निवास कर रही है। उनकी लोककलाएँ, नृत्य, गीत, हस्तशिल्प और पारम्परिक खानपान पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण हैं।

गाँव में होमस्टे सुविधा विकसित की गई है, जहाँ पर्यटक सीधे स्थानीय परिवारों के साथ रहकर उनकी जीवनशैली का अनुभव करते हैं।

इस प्रक्रिया ने महिलाओं और युवाओं को आत्मनिर्भर बनाया है। महिलाएँ पारम्परिक व्यंजन और हस्तशिल्प के माध्यम से आय अर्जित कर रही हैं, वहीं युवा गाइडिंग, सांस्कृतिक प्रस्तुति और डिजिटल प्रचार-प्रसार में योगदान दे रहे हैं।इसमें महिलाओं और युवाओं को रोजगार मिला है, जिससे सामाजिक-आर्थिक सशक्तीकरण को बल मिला है। सामुदायिक नेतृत्व की यह मिसाल ग्रामीण पर्यटन को टिकाऊ और आत्मनिर्भर बनाती है, क्योंकि इससे सीधे गाँववासियों को लाभ होता है।

स्थानिक लाभ और ईको - टूरिज्म : कारिकोट गाँव का भौगोलिक महत्व भी इसे विशेष बनाता है। यह गाँव भारत-नेपाल सीमा के पास स्थित है, जिससे अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों की आवाजाही आसान होती है। समीप में स्थित कतर्नियाघाट वन्यजीव अभयारण्य प्रकृति प्रेमियों और वन्यजीव शोधकर्ताओं के लिए स्वर्ग समान है। यह अभयारण्य दुधवा टाइगर रिजर्व से जुड़ा हुआ है और यहाँ मगरमच्छ, बाघ, हाथी, दुर्लभ पक्षी प्रजातियाँ और घड़ियाल पाए जाते हैं। ग्रामीण पर्यटन और इको-टूरिज्म का यह सम्मिलन कारिकोट को और आकर्षक बनाता है। पर्यटक यहाँ प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेते हुए ग्रामीण जीवन और सांस्कृतिक अनुभवों से भी परिचित हो सकते हैं।

इस प्रकार कारिकोट ने ग्रामीण पर्यटन और प्राकृतिक पर्यटन (Eco-Tourism) के बीच संतुलन स्थापित किया है। यह क्षेत्र जैव-विविधता, वन्यजीवन, पक्षी अभ्यारण्य आदि के चलते प्रकृति प्रेमियों को आकर्षित करता है।

सरकारी नीतियाँ और योजनाओं का योगदान : कारिकोट गाँव की सफलता के पीछे उत्तर प्रदेश सरकार की योजनाओं की भी बड़ी भूमिका रही है। UP Homestay Policy 2025 और Bed & Breakfast योजना के अंतर्गत गाँवों में होमस्टे की व्यवस्था को प्रोत्साहित किया गया।

पर्यटन विभाग ने सीमा से लगे 35 गाँवों को 'पर्यटक गाँव' के रूप में विकसित करने की योजना बनाई है, जिसमें कारिकोट भी शामिल है। प्रत्येक गाँव में लगभग 10 होमस्टे इकाइयाँ विकसित की जानी हैं। पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने कारिकोट को अन्य गाँवों के लिए प्रेरणास्रोत बताया है। प्रमुख सचिव (पर्यटन एवं संस्कृति) मुकेश कुमार मेश्राम के अनुसार यह सफलता सरकारी नीतियों और स्थानीय सहभागिता का परिणाम है।

इस प्रकार कारिकोट सरकार और समाज के संयुक्त प्रयासों से पर्यटन का आदर्श मॉडल बन पाया है।

सांस्कृतिक पुनरुत्थान और आत्मनिर्भरता : ग्रामीण पर्यटन के माध्यम से कारिकोट में सांस्कृतिक पुनरुत्थान हुआ है।गाँव को एक प्रकार से "जीवंत संग्रहालय" (Living Museum) में बदल दिया गया है, जहाँ पर्यटक ग्रामीण संस्कृति, लोककला, लोकनृत्य, लोकगीत और पारंपरिक भोजन का आनंद लेते हैं। थारू महिलाएँ हस्तशिल्प (जैसे बांस और घास से बने सामान, रंगीन कढ़ाई, मिट्टी के बर्तन) तैयार करती हैं, जिन्हें पर्यटक स्मृति चिन्ह के रूप में खरीदते हैं। इस प्रक्रिया से स्थानीय अर्थव्यवस्था मजबूत हुई है और गाँव के लोग स्वावलंबी बने हैं। डिजिटल माध्यमों से इन उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुँचाने की कोशिशें भी हो रही हैं।

होमस्टे सुविधाओं से कारिकोट गाँव केवल पर्यटन केंद्र ही नहीं, अपितु, ग्रामीण स्वावलंबन, महिला सशक्तीकरण और स्थानीय अर्थतंत्र की मजबूती का उदाहरण

बन चुका है। पर्यटन के कारण थारू हस्तशिल्प और पाक-कला को व्यापारिक अवसर और डिजिटल बाज़ार में पहुंच मिली है।

सामाजिक और आर्थिक प्रभाव : कारिकोट में ग्रामीण पर्यटन ने कई सकारात्मक सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन किए हैं।

रोजगार सृजन : युवाओं को गाइड, ड्राइवर, कलाकार और उद्यमी के रूप में अवसर मिले।

महिला सशक्तिकरण : महिलाएँ अपने घरों को होमस्टे में बदलकर आय अर्जित कर रही हैं।

शिक्षा और स्वास्थ्य पर असर : बढ़ी हुई आय से गाँववासी शिक्षा और स्वास्थ्य पर अधिक खर्च कर पा रहे हैं।

प्रवासी युवाओं की वापसी : जो युवा रोजगार के लिए अन्य शहरों में गए थे, वे अब गाँव लौटकर स्थानीय स्तर पर अवसर तलाश रहे हैं।

इस प्रकार कारिकोट में पर्यटन ने गाँव की सामाजिक संरचना को सकारात्मक दिशा दी है।

एक मॉडल के रूप में कारिकोट का महत्व

एक मॉडल के रूप में विकसित कारिकोट गाँव केवल बहराइच या उत्तर प्रदेश के लिए ही नहीं, अपितु पूरे भारत के लिए एक प्रेरणास्रोत बन गया है। यह मॉडल इस विचार पर आधारित है कि यदि ग्रामीण समुदाय, सरकार और पर्यटक- तीनों मिलकर काम करें तो अन्य गाँवों को भी आत्मनिर्भर और समृद्ध बनाया जा सकता है। आने वाले समय में कारिकोट का अनुभव अन्य राज्यों और यहाँ तक कि दक्षिण एशियाई देशों के लिए भी ग्रामीण पर्यटन का आदर्श बनेगा।

कारिकोट ने ग्रामीण पर्यटन के लिए एक स्केलेबल और स्थायी मॉडल प्रस्तुत किया है, जो अन्य ग्रामीण क्षेत्रों में भी अपनाया जा सकता है। इसकी सफलता ने राज्य सरकार की ग्रामीण पर्यटन रणनीति को गति दी है, जिससे राज्य का समग्र पर्यटन स्वरूप और समृद्ध होगा।

कारिकोट गाँव : ग्रामीण पर्यटन में उपलब्ध विशेष गतिविधियाँ

कारिकोट गाँव में आने वाले पर्यटकों के लिए केवल प्राकृतिक सौंदर्य और सांस्कृतिक धरोहर ही आकर्षण नहीं हैं, अपितु यहाँ प्रत्यक्ष अनुभवात्मक गतिविधियाँ भी उपलब्ध हैं। इनसे पर्यटक ग्रामीण जीवन को गहराई से समझ पाते हैं, इससे पर्यटन का अनुभव और यादगार बनता है।

थारू संस्कृति का अनुभव

थारू लोकनृत्य एवं गीतों का प्रदर्शनः शाम के समय गाँव की महिलाएँ और युवक पारंपरिक वेशभूषा में थारू नृत्य प्रस्तुत करते हैं। इससे पर्यटक मनोरंजन के साथ ग्रामीण संस्कृति को निकट से समझने का अवसर पाते हैं।

थारू खानपान कार्यशालाः पर्यटक स्थानीय व्यंजन जैसे धीकरी, धुस्का, घुघनी और भुजिया का आनंद उठाने के साथ बनाना भी सीख सकते हैं।

होमस्टे अनुभव

ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ग्रामीण गाँव में ही अपने मकानों को होमस्टे में परिवर्तित कर दिया है। इसमें उचित दरों पर ठहरने का प्रबंध किया गया है, जो कि पर्यटकों के लिए भी सुविधाजनक है। पर्यटक स्थानीय परिवारों के घर में ठहरकर उनकी जीवनशैली का हिस्सा बनने का अवसर पाते है।होमस्टे में पर्यटक खेतों के काम, पशुपालन और गाँव की दिनचर्या से जुड़ सकते हैं।

हस्तशिल्प-लोककला कार्यशाला

ग्रामीण जंगल में मिलने वाली बेंत से कुर्सी, मेज, अलमारी समेत कई अन्य सजावटी सामान भी बनाते हैं। थारू महिलाएँ और कारीगर बांस, घास और मिट्टी से वस्तुएँ बनाना सिखाते हैं।पर्यटक स्मृति चिन्ह के रूप में हस्तशिल्प खरीद भी सकते हैं।

प्रकृति और वन्यजीव भ्रमण

कतर्नियाघाट वन्यजीव अभयारण्य की सैर कर पर्यटक बाघ, मगरमच्छ, घड़ियाल और दुर्लभ पक्षियों को देख सकते हैं।पर्यावरण प्रेमियों के लिए बर्ड वॉचिंग (पक्षी दर्शन) का विशेष प्रबंध किया गया है।जंगल सफारी और नदी तट पर नौकायन की सुविधा भी है।

ग्रामीण खेल और उत्सव

कारिकोट गाँव में समय - समय पर ग्रामीण खेल महोत्सव आयोजित किए जाते हैं, जिनमें कबड्डी, रस्साकशी और पारंपरिक खेल शामिल होते हैं। पर्यटक फसल कटाई और त्यौहारों (जैसे होली, दीपावली, विवाह समारोह, हरियाली तीज) के अवसर पर गाँव की सामूहिक खुशियों का हिस्सा बन सकते हैं। गांव में एक माह तक पारम्परिक मेला भी लगता है इसमें लगने वाली दुकानों में ग्रामीणों द्वारा बनाए गए उत्पादों को ही बाजार में उतारा जाता है।

कृषि और जैविक खेती का अनुभव

पर्यटकों को खेतों में जाकर धान की रोपाई, गन्ना छीलने, सब्ज़ी तोड़ने जैसी गतिविधियों का अनुभव कराया जाता है। जैविक खेती और बीज संरक्षण की तकनीकों से भी परिचित कराया जाता है।

सांस्कृतिक संवाद और कहानी-कथन

थारू बुजुर्ग अपनी परंपराओं, लोककथाओं और मिथकीय गाथाओं का वाचन करते हैं।यह पर्यटकों को गाँव की सांस्कृतिक गहराई को समझने का अवसर देता है।

पर्यटकों को रिझा रहा देसी अंदाज

पर्यटक इस गांव में आकर ग्रामीणों का रहन - सहन निकट से देखते हैं। उनकी सभ्यता और संस्कृति से परिचित होते हैं। देसी व्यंजनों का आनंद लेते हैं। चूल्हे पर बनी रोटी, तड़का लगी दाल, चावल, लिट्टी - चोखा समेत कई अन्य देसी व्यंजन तथा पारम्परिक अंदाज लोगों को भी पसंद आ रहा है।

बहराइच जिले का कारिकोट गाँव इस बात का जीवंत उदाहरण है कि किस प्रकार सांस्कृतिक धरोहर, सामुदायिक नेतृत्व और सरकारी सहयोग मिलकर किसी गाँव को वैश्विक पहचान दिला सकते हैं।

ई- वोटिंग ने रच दिया इतिहास

प्रमोद भार्गव

शिवपुरी म.प्र.

देश में मतदान के प्रति अरुचि प्रत्येक चुनाव में देखने में आती रही है। रोगग्रस्त या अन्य लाचारों को तो छोड़िए, उच्च शिक्षित एवं सक्षम कुलीन वर्ग मतदान के प्रति सबसे ज्यादा उदासीन रहता है। वैसे तो निर्वाचन आयोग मतदान का प्रतिषत और सुविधा के मतदान के लिए अनेक प्रयोग करता रहा है, लेकिन अब बिहार राज्य निर्वाचन आयोग ने नगर निकाय के उपचुनाव में पहली बार ई-वोटिंग का प्रयोग करके इतिहास रच दिया है। मोबाइल से मतदान की सुविधा उन लोगों के लिए वरदान साबित हुई, जो मतदान केंद्र पर पहुंचकर वोट देने से मजबूर थे। तमाम मतदाता गांव और राज्य से बाहर होने के कारण मतदान करने से वंचित रह जाते हैं। लेकिन मोबाइल से ई-मतदान की सुविधा के चलते बिहार के इस चुनाव में 80.60 प्रतिशत और उपचुनाव में 58.38 प्रतिशत मतदाताओं ने मोबाइल के जरिए मतदान किया। पहली महिला ई-वोटर विभा कुमारी और पहले पुरुष मतदाता मुन्ना कुमार बने।

राज्य निर्वाचन आयुक्त डॉ दीपक प्रसाद ने मोबाइल से ई-मतदान कराए जाने की प्रेरणा यूरोपीयन देश एस्टोनिया से ली। चूंकि अब ई-वोटिंग का सफल प्रयोग हो चुका है, इसलिए भविश्य में इसकी मांग बढ़ेगी। जो गर्भवती महिलाएं, बुर्जुग, विकलांग, असाध्य रोगों से ग्रसित और अपने मतदान स्थल से दूर रहने वाले लोग मतदान से वंचित रह जाते थे, उन्हें लोकतंत्र के इस महायज्ञ में भागीदार बनने की आसान सुविधा मिल जाएगी। इस सुविधा से एक बड़ी समस्या का सामाधान बिना किसी अतिरिक्त खर्च के हो जाएगा। चूंकि मतदान केंद्रों पर विभिन्न दलों का जमावड़ा नहीं होगा, इसलिए निश्पक्ष और शांतिपूर्ण मतदान की संभावना बढ़ जाएगी। इससे मतदान की निजता भी प्रभावित नहीं होगी। इससे मतदान के प्रतिषत में आषातीत सुधार तो होगा ही, जातीय और सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की संभावनाएं न्यूनतम हो जाएंगी। ई-वोटिंग का काम पूर्वी चंपारण जिले की नगर पंचायत पकड़ी दयाल के अलावा पटना, बक्सर, रोहतास, सारण और बांका में सी-डैक और एसईआर के जरिए किया गया था।

अब यह जरूरी लगता है कि जब पैसे के लेनदेन से लेकर अचल संपत्ति के हस्तांतरण के काम ऑनलाइन या डिजिटल प्रणालियों से हो रहे हैं तो फिर ई-मतदान को भी जरूरी बनाया जाए। बिहार के उपचुनाव में मोबाइल एप से ई-वोटिंग की प्रक्रिया प्रमाणित भी हो चुकी है। ई-वोटिंग को इसलिए भी अपनाया जाए, क्योंकि पूर्व से ही हमारे यहां पोस्टल वोटिंग का वैधानिक प्रावधान है। मतदान संपन्न कराने में जुटे कर्मचारी अपना वोट पोस्टल वोटिंग के जरिए ही देते हैं। अब कोई राजनीतिक दल और नेता यह बहाना नहीं बना सकता है कि अभी इंटरनेट या बिजली की सुविधा दुर्गम क्षेत्रों में नहीं है। एक बार बिजली भले ही प्रत्येक ग्राम में न हो, लेकिन सौर ऊर्जा से बिजली और मोबाइल टॉवर गांव-गांव पहुंच गए हैं। इनके जरिए इंटरनेट की सुविधा हासिल कराई जा रही है। सौर जैसी वैकल्पिक ऊर्जा दूर-दराज के ग्रामों में बिजली उपलब्ध करा रही है। फिर भी किसी गांव में बिजली नहीं है तो वहां ईवीएम के जरिए मतदान कराया जाए। ई-वोटिंग को चरणबद्ध रूप में कराए जाने का सिलसिला जल्द से जल्द शुरू होता है तो लोकतंत्र में लोगों की उम्मीद से ज्यादा भागीदारी बढ़ती दिखाई देगी। हालांकि मोबाइल से ई-वोटिंग को लेकर कुछ नेता अभी से संदेह जताने लगे हैं। उनका कहना है कि मोबाइल एप पर पंजीकरण में कठिनाई आएगी। गांव के प्रभावी लोग दबाव बनाकर पक्षपातपूर्ण एवं फर्जी मतदान करा

सकते है। भारत में फर्जी और दबाव से मतदान की अपवाद स्वरूप घटनाएं आज भी देखने में आ जाती हैं। ईवीएम से मतदान पर आज भी विपक्षी दल सवाल उठा रहे हैं। लेकिन ईवीएम की साख पर ठोस प्रमाण कोई दल या इंजीनियर आज तक नहीं दे पाया है। ई-वोटिंग पूरे देश के लिए अपना ली जाती है तो चुनाव खर्च में तो कमी आएगी ही, तकनीक की सार्थकता भी पेष आएगी।

घरेलू प्रवासी मतदाताओं के लिए ई-वोटिंग की जरूरत इसलिए है, क्योंकि बड़ी संख्या में देश के मतदाता मजदूरी, पढ़ाई-लिखाई, नौकरी और अन्य काम-धंधों के लिए मूल निवास स्थल छोड़ जाते हैं। इसलिए वे चुनावों में अपने मताधिकार का उपयोग नहीं कर पाते। आयोग का कहना है कि 2019 के आम चुनाव में करीब 30 करोड़ यानी 67.4 प्रतिषत लोग इन्हीं कारणों के चलते अपने मत का उपयोग नहीं कर पाए थे। ऐसा लोकसभा और विधानसभा दोनों ही चुनावों में होता है। चुनाव विषेशज्ञों का तो यहां तक मानना है कि करीब 45 करोड़ लोग पलायन के चलते मतदान से वंचित हो जाते हैं। इसलिए लंबे समय से यह मांग उठ रही थी कि इन देशज प्रवासियों के मतदान का कोई व्यावहारिक उपाय निकाला जाना चाहिए। इस नजरिए से प्रवासियों के लिए ई-वोटिंग उपयोगी है।

हालांकि चुनाव सुधार की दृष्टि से चुनाव आयोग ने घर से दूर रहने वाले अर्थात दूरस्थ मतदाताओं के लिए रिमोट वोटिंग सिस्टम (आरवीएस) तैयार किया हुआ है। इस मशीन की मदद से अब मूल मतदान स्थल से दूर रह रहे किसी दूसरे राज्य या शहर में रहने वाले मतदाता लोकसभा और विधानसभा चुनाव में अपने मत का प्रयोग कर सकते हैं। यानी मतदान के लिए उन्हें अपने मूल निवास स्थल पर आने की जरूरत नहीं रह गई हैं। आयोग इसे लागू करने से पहले आने वाली कानूनी, प्रषासनिक और तकनीकी चुनौतियों पर राजनीतिक दलों के विचार भी आमंत्रित किए जाएंगे। चुनाव सुधार की दृश्टि से यह पहल अमल में आती है तो ऐतिहासिक होगी। नतीजतन उन 45 करोड़ लोगों को वोट डालने का अवसर मिलेगा, जो अपने घरों से दूर रहते हैं। यह उपाय मत-प्रतिषत बढ़ाने का भी काम करेगा। यानी जनप्रतिनिधियों का चुनाव अधिकतम मतदाताओं के वोट डालने से होगा, जो लोकतंत्र को पारदर्शी बनाने का काम करेगा। इस सिलसिले में आयोग ने दावा किया है कि यह मशीन त्रुटिहीन बनाई गई है, इसलिए मतदान निष्पक्ष होगा। हालांकि मतदान की इस प्रक्रिया को इंटरनेट से नहीं जोड़ा जाएगा। आयोग फिलहाल इसे प्रायोगिक तौर पर लागू करना चाहता है, जिससे इसके प्रयोग की निश्पक्षता स्पष्ट हो जाए। बाद में इसे पूरे देश में अनिवार्य बना दिया जाएगा। अनेक चुनाव विशेषज्ञ इस प्रणाली को एक क्रांतिकारी पहल मानकर चल रहे हैं।

देश में निसंदेह एक बड़ा वर्ग ऐसा है, जो अपना घर और षहर छोड़कर आजीविका के लिए दूसरे शहरों या राज्यों में रह रहे हैं। इनमें बड़ी संख्या में युवा हैं। हालांकि इनका कोई एकीकृत आंकड़ा देश और आयोग के पास नहीं है। फिर भी सब जानते है कि बड़ी संख्या में प्रवासी मतदाता हैं। ये लोग नई जगह पहुंचने के बाद नया वोटर पंजीयन भी नहीं कराते हैं। नतीजतन मतदान से वंचित रहते हैं। इन्हें जहां रह रहे हैं, वहीं मतदान की सुविधा मिल जाए, इस नजरिए से आरवीएम की परिकल्पना की गई है। आईआईटी मद्रास की मदद से 'मल्टी कॉन्स्टीचुएंसी रिमोट ईवीएम' के रूप में ऐसा मतदान उपकरण तैयार किया गया है, जो एक रिमोट मतदान केंद्र से 72 निर्वाचन क्षेत्रों में प्रवासियों का मतदान कराने में सक्षम होगा। हालांकि आरवीएम के इस्तेमाल को लेकर प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस ने विरोध जता दिया है। कांग्रेस का कहना है कि इससे मतदान के प्रति लोगों का भरोसा कम होगा। प्रणाली शुरू करने का प्रस्ताव पेश किया है।

लोकतंत्र की मजबूती के लिए आदर्श स्थिति यही है कि हरेक मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करे। इस नाते 2005 में भाजपा के एक सांसद लोकसभा में 'अनिवार्य मतदान' संबंधी विधेयक लाए भी थे। लेकिन बहुमत नहीं मिलने के कारण विधेयक पारित नहीं हो सका था। कांग्रेस व अन्य दलों ने इस विधेयक के विरोध का कारण बताया था कि दबाव डालकर मतदान कराना संविधान की अवहेलना है। क्योंकि भारतीय संविधान में अब तक मतदान करना मतदाता का स्वैच्छिक अधिकार तो है, लेकिन वह इस कर्तव्य-पालन के लिए बाध्यकारी नहीं है। लिहाजा वह इस राष्ट्रीय दायित्व को गंभीरता से न लेते हुए, उदासीनता बरतता है। हमारे यहां आर्थिक रूप से संपन्न सुविधा भोगी जो तबका है, वह अनिवार्य मतदान को संविधान में दी निजी स्वतंत्रता में बाधा मानते हुए इसका मखौल उड़ाता है।

मतदान की अनिवार्यता अथवा ई-वोटिंग या आरवीएम से सुविधा का मतदान कथित अल्पसंख्यक व जातीय समूहों को 'वोट बैंक' की लाचारगी से भी छुटकारा दिलाएगी। राजनीतिक दलों को भी तुष्टिकरण की राजनीति से निजात मिलेगी। क्योंकि जब प्रवासियों को आरवीएम से मतदान की सुविधा मिल जाएगी तो किसी धर्म, जाति या क्षेत्र विशेष से जुड़े मतदाताओं की अहंमियत खत्म हो जाएगी। नतीजतन उनका संख्याबल जीत अथवा हार को प्रभावित नहीं कर पायेगा। लिहाजा सांप्रदायिक व जातीय आधार पर ध्रुवीकरण की जरूरत नगण्य हो जाएगी। जब पंजाब और जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद की छाया थी, तब वहां हुए विधानसभा चुनावों में 15 से लेकर 20 % मतदान से ही सरकारें बनती रही हैं। साफ है, यह स्थिति लोकतंत्र के लिए उचित नहीं रही। अतएव अधिकतम मतदान के हालात ई-वोटिंग एवं आरवीएम के इस्तेमाल से निर्मित होते हैं तो भारतीय राजनीति संविधान के उस सिद्धांत का पालन करने को विवश होगी, जो सामाजिक न्याय और समान अवसर की वकालात करता है।

घर से काम करना वास्तव में जीवन को बेहतर बनाता है!

विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्रिंसिपल,
शैक्षिक स्तंभकार, पंजाब

जब अलार्म इतनी जल्दी बजना बंद कर दिया, तो कुछ सूक्ष्म बदल गया। सुबह शांत हो गई, नाश्ता थोड़ा अधिक समय तक चला गया और लाखों लोगों के लिए रफ्तार गायब हो गयी। यह शुरू में एक अस्थायी राहत की तरह लग सकता था, लेकिन वैज्ञानिक अब कहते हैं कि इसमें और भी कुछ है।

चार वर्षों तक दूरस्थ श्रमिकों को ट्रैक करने के बाद शोधकर्ताओं ने एक स्पष्ट निष्कर्ष निकाला हैः “घर से काम करना हमें समृद्ध बनाता है दीर्घकालिक डेटा से पता चलता है कि लचीलापन केवल जीवन को सुविधाजनक नहीं बनाता - यह लोगों को बेहतर नींद लेने, स्वस्थ रहने और वास्तव में काम पर बेहतर प्रदर्शन करने में मदद करता है।

एक शांत सुबह, एक स्थिर मन

दक्षिण ऑस्ट्रेलिया विश्वविद्यालय के चार वर्षीय अध्ययन में बताया गया है कि ‘कोविड-19 महामारी के दौरान ऑस्ट्रेलिया में घर से काम करनाः कर्मचारी घर से काम कर रहे हैं (EWFH) अध्ययन के क्रॉस-सेक्शनल परिणाम’ ने दैनिक दिनचर्या को कैसे बदल दिया।

एक बार की सवेरे स्थिर होने लगीं, प्रतिभागी औसतन हर रात लगभग तीस मिनट अधिक सोते थे। उस अतिरिक्त आराम ने थकी हुई आँखों को आसान करने से अधिक किया, इससे पूरे दिन फोकस, धैर्य और ऊर्जा के स्तर में सुधार हुआ।

ट्रैफ़िक या ट्रेन की भीड़ के तनाव के बिना, श्रमिकों ने अपने दिन शांत जमीन पर शुरू किए। काम शुरू होने से पहले ही औसत ऑस्ट्रेलियाई व्यक्ति अपनी ऊर्जा को कम करके हर सप्ताह लगभग 4.5 घंटे बचाता है।

शोधकर्ताओं ने पाया कि इन छोटी-छोटी बदलावों से मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक विनियमन में मापने योग्य सुधार हुआ, संक्षेप में लोगों को बस खुद जैसा महसूस हुआ।

चयन और विश्वासः असली गेम-चेंजर दिलचस्प बात यह है कि अध्ययन से पता चला कि दूरस्थ कार्य का सबसे बड़ा लाभ तब होता है जब लोग इसे स्वेच्छा से चुनते हैं।

जब घर से काम करना अनिवार्य होता था, तब मूड और प्रेरणा कम होती थी। लेकिन जैसे ही लचीलापन वापस आया, संतुष्टि फिर से बढ़ गई। पाठ स्पष्ट था, नियंत्रण और सहमति स्थान से अधिक महत्वपूर्ण थी।

सहायक प्रबंधकों वाली टीमों ने भी बेहतर परिणाम बताए।

निरंतर पर्यवेक्षण के बजाय, स्पष्ट लक्ष्य

निर्धारित करने और प्रतिक्रिया प्रदान करने वाले नेताओं ने लोगों को संलग्न रहने में मदद की। जैसा कि एक निष्कर्ष में उल्लेख किया गया है, सहायक संरचनाएं 'स्थिरकर्ता की तरह कार्य करती हैं', बिना किसी दबाव के काम को ट्रैक पर रखती हैं।

स्वस्थ दिन, खुशियां उत्पादकता के अलावा, दूरस्थ कार्य ने चुपचाप स्वास्थ्य और जीवनशैली की आदतों को बदल दिया।

स्पेनिश शोधकर्ताओं का अनुमान है कि अब लोग यात्रा से बचकर हर साल दस अतिरिक्त दिनों की बचत करते हैं। उस समय का अधिकांश हिस्सा बुद्धिमानी से घूमने, व्यायाम करने और पारिवारिक जीवन में पुनः निवेश किया जा रहा है।

कार्यकर्ताओं ने बैठकों के बीच छोटी पैदल यात्राएं कीं या खिंचाव के लिए त्वरित ब्रेक का उपयोग किया। अध्ययन में पाया गया कि मामूली शारीरिक गतिविधि भी मूड को बेहतर बनाती है और लंबी बैठने की लाइनें टूट जाती हैं।

भोजन के विकल्प भी बेहतर हुए: लोगों ने अपने आहार में ताजे फल, सब्जियां और डेयरी जोड़कर अधिक खाना बनाया। जैसे-जैसे दैनिक लय समायोजित हो गया, छोटे आराम मिल गए, चाय के ब्रेक ने चीनी वाले स्नैक्स की जगह ली और कुछ मिनटों तक बाहर ध्यान केंद्रित किया। परिवारों के साथ रहने वाले लोगों को एक और अप्रत्याशित लाभ मिला घरेलू कार्यों को काम के दिनों में मिश्रित किया गया, जिससे शामें आराम या संपर्क के लिए स्वतंत्र हो गईं।

प्रदर्शन जो परिणामों के माध्यम से बोलता है इस बात की आशंका के बावजूद कि घर से काम करने से उत्पादकता खराब हो सकती है, शोध में इसके विपरीत पाया गया। अधिकांश लोगों ने या तो अपना उत्पादन बनाए रखा या सुधार किया। कारण ध्यान देने के समय पर कम विचलन और अधिक नियंत्रण।

घंटों के बजाय परिणाम मापने वाले नेताओं को प्रदर्शन का स्पष्ट संकेत मिला। समीक्षा चक्र तेज, लक्ष्य अधिक विशिष्ट और परिणाम अधिक पारदर्शी हो गए। डिजिटल कार्यक्षेत्र में जिन टीमों ने संचार मानकों को परिभाषित किया, जैसे कि संदेश कब देना है या किस उपकरण का उपयोग करना है।

एर्गोनोमिक्स भी मायने रखता था। आरामदायक कुर्सी, उचित प्रकाश व्यवस्था और अच्छी तरह से सेट स्क्रीन दैनिक भुगतान के साथ छोटे निवेश थे। रिमोट स्टाफ द्वारा सामना की जाने वाली अदृश्य चुनौतियों को पहचानने के लिए सीखने वाले प्रबंधकों ने बर्नआउट को रोकने और विश्वास बढ़ाने में मदद की।

भविष्य लचीला, मानवीय और मापने योग्य है जैसे-जैसे साक्ष्य जमा हो जाते हैं, दूरस्थ काम अस्थायी प्रयोग की तरह नहीं दिखता बल्कि एक सतत विकास जैसा लगता है। लचीला सेटअप हर नौकरी के लिए उपयुक्त नहीं हैं, लेकिन हाइब्रिड सिस्टम सबसे अच्छी बात साबित हो रही है, कुछ दिन घर पर गहन काम करने और अन्य कार्यालय में सहयोग के लिए।

वैज्ञानिकों ने जोर दिया है कि कुंजी कठोर उपस्थिति के बजाय मानव ऊर्जा पर काम डिजाइन करना है। स्पष्ट अपेक्षाएं, आधुनिक उपकरण और विश्वास-आधारित नेतृत्व न केवल अधिक उत्पादक बल्कि अधिक सामग्री वाली टीमें बनाते हैं।

शहरों को भी इस बदलाव से लाभ होगा। कम आवागमन के साथ, सड़कें साफ हो जाती हैं, उत्सर्जन गिर जाता है और श्रमिकों को एक बार ट्रैफ़िक में खोए गए घंटे वापस मिल जाते हैं।

बड़े शहरों के बाहर देखभाल करने वाले और पेशेवर, यह एक शांत क्रांति है, जहां करियर और देखभाल अंततः सह-अस्तित्व कर सकती हैं। चार वर्षों के साक्ष्य के बाद, निर्णय आता है, दूरस्थ कार्य एक गुजरने वाला चरण नहीं बल्कि आगे बढ़ने का एक स्मार्ट तरीका है। लोग अधिक समय तक सो रहे हैं, बेहतर खा रहे हैं और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहे हैं, क्योंकि काम अंततः जीवन में फिट बैठता है, इसके विपरीत नहीं।

भारत की आत्मा-स्वदेशी कृषि

सविता वाणी (शिक्षिका)
गौरीगंज

भारत एक कृषि प्रधान देश है। विश्व का सिरमौर भारतवर्ष 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था, इसके पीछे के प्रमुख कारकों में प्रमुख कारक है, इसकी कृषि आधारित सुसम्पन्न अर्थव्यवस्था। यहाँ की सभ्यता, संस्कृति और जीवनशैली का मूल आधार कृषि रही है। भारतीय समाज की जड़ें गाँवों और खेतों में गहराई से समाई हुई हैं। कृषि केवल अन्न उत्पादन का माध्यम नहीं, बल्कि यह जीवन, पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और संस्कृति का संगम है।भारत की अर्थव्यवस्था की बात की जाए, तो इसमें कृषि का सर्वोपरि स्थान रहा है। सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य पर्यावरण एवं आर्थिक दृष्टि से यदि विश्लेषण किया जाए, तो कृषि से उत्तम कोई कार्य नहीं है। कहा भी गया है- 'उत्तम खेती, मध्यम बान'। किंतु विगत कुछ दशकों में हरित क्रांति, रासायनिक उर्वरकों और विदेशी बीजों के प्रयोग से कृषि का स्वदेशी स्वरूप धीरे-धीरे विलुप्त होने लगा। ऐसे समय में 'स्वदेशी कृषि' की अवधारणा फिर से भारतीय चेतना में जागृत हो रही है, जो न केवल पर्यावरण-संरक्षण की दिशा में सहायक है, बल्कि आत्मनिर्भर भारत की आधारशिला भी है।

स्वदेशी कृषि की अवधारणा

'स्वदेशी कृषि' का तात्पर्य उस कृषि पद्धति से है जिसमें उत्पादन के लिए सभी संसाधन - बीज, खाद, कीटनाशक, उपकरण, जल-संरक्षण विधियाँ- देश में उपलब्ध स्थानीय संसाधनों से ही प्राप्त हों। इसका मूल आधार है- "देशज संसाधनों से, देश की धरती के अनुरूप, देशवासियों के हित में कृषि करना।"

स्वदेशी कृषि की अवधारणा भारतीय वैदिक और पारंपरिक कृषि दर्शन से जुड़ी है। 'कृषि' शब्द संस्कृत के 'कृ' धातु से बना है, जिसका अर्थ है- 'उत्पादन करना'। हमारे शास्त्रों में कृषि को 'सर्वश्रेष्ठ कर्म' कहा गया है। अर्थशास्त्र और कौटिल्य नीतिशास्त्र में भी कृषि को राज्य की आत्मनिर्भरता का आधार माना गया है।

स्वदेशी कृषि का अर्थ केवल देशी बीजों के उपयोग तक सीमित नहीं, बल्कि यह एक संपूर्ण जीवनदर्शन है, जिसमें भूमि, जल, पशु, पौधे और मनुष्य - सभी के बीच संतुलन और सामंजस्य बनाए रखने पर बल दिया जाता है।

स्वदेशी कृषि की आवश्यकता आज क्यों है?

स्वदेशी कृषि का तात्पर्य प्राकृतिक खेती से है, अर्थात कृषि की वह पद्धति है,

जो रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और कृत्रिम संसाधनों का प्रयोग किए बिना, पूर्णतः प्राकृतिक साधनों और जैविक घटकों पर आधारित हो।

रासायनिक उर्वरकों ने मिट्टी को बंजर बना दिया है, जिससे मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट आई है। सिंचाई के लिए अत्यधिक दोहन ने भूमिगत जल को खतरनाक स्तर तक पहुँचा दिया है, जिससे जलस्तर में गिरावट आई है। रसायनों से उत्पादित अन्न, दूध, फल, सब्जियाँ मानव स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचा रही हैं।आज हम जो भोजन ले रहे हैं, उसमें एक अंश विषैले तत्त्वों का भी रहता है। रासायनिक खेती में लागत अधिक है, लाभ सीमित होता है। इन समस्याओं के समाधान के रूप में परम्परागत स्वदेशी पद्धति की खेती एक सशक्त विकल्प बनकर आई है। भारत में परम्परागत कृषि विकास योजना (PKVY) के अंतर्गत प्राकृतिक खेती को भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति योजना के रूप में बढ़ावा दिया जाता है। इस योजना का उद्देश्य बाहर से खरीदे जाने वाले आदानों के आयात को कम कर परम्परागत स्वदेशी प्रथाओं को बढ़ावा देना है।

स्वदेशी कृषि के प्रमुख सिद्धांत

स्थानीय बीजों का उपयोग: देशी बीज जलवायु के अनुसार अनुकूल होते हैं, जिनमें रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है।

रासायनिक मुक्त खेती : गोबर, गुड़, बेसन, गोमूत्र आदि से बनाया गया घोल मिट्टी को पोषण देता है। हरी खाद, नीम, धतूरा, तुलसी, लहसुन आदि से बने जैविक कीटनाशकों का प्रयोग।

मृदा स्वास्थ्य संरक्षण : भूमि की उर्वरता बढ़ाने हेतु फसल चक्र, मिश्रित खेती एवं ढैंचा जैसे पौधों का प्रयोग।आच्छादन विधि से मिट्टी को नम बनाए रखने और खरपतवार को रोकने के लिए ढका जाता है। इस विधि से खेती में एक ही खेत में कई फसलों का एक साथ उत्पादन किया जाता है।

जल-संरक्षण पर बल : पारंपरिक तालाब, कुएँ, नालियाँ, चेक डैम आदि के माध्यम से वर्षाजल का संचयन।

पशुधन आधारित कृषि : गौ-आधारित खेती, जैविक खाद, और कृषि कार्यों में पशु शक्ति का उपयोग।इससे गोवंशों के संरक्षण को बल मिलता है।

स्थानीय रोजगार सृजन : कृषि उत्पादन से जुड़े शिल्प, प्रसंस्करण, विपणन आदि कार्य स्थानीय स्तर पर करना।

स्वदेशी कृषि की उपादेयता

पर्यावरण संरक्षण

स्वदेशी कृषि रासायनिक प्रदूषण से मुक्त होती है। इसमें उपयोग की जाने वाली जैविक खादें भूमि की उर्वरता बढ़ाती हैं तथा जल स्रोतों को प्रदूषित नहीं करतीं। यह पद्धति वायुमंडलीय कार्बन उत्सर्जन को कम कर जलवायु परिवर्तन के संकट से बचाती है।अतः पर्यावरण संरक्षण में भी स्वदेशी कृषि लाभकारी है। इस खेती में कम पानी की आवश्यकता होती है, जिससे जल संरक्षण भी हो जाता है।

मृदा स्वास्थ्य की रक्षा

हरित क्रांति के बाद अत्यधिक रासायनिक खादों और कीटनाशकों से भूमि की उर्वरता घटने लगी। स्वदेशी कृषि में देशी खादों, हरी खादों और जैविक मिश्रणों से भूमि को 'जीवित मिट्टी' के रूप में संरक्षित किया जाता है।

आर्थिक आत्मनिर्भरता

स्वदेशी कृषि में किसान को महंगे बीज,रासायनिक खाद या कीटनाशक खरीदने के लिए बाजार पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। वह अपने खेत, पशुधन और स्थानीय संसाधनों से ही सब कुछ तैयार कर सकता है। इससे कृषक की लागत घटती है और लाभ बढ़ता है।

पोषण और स्वास्थ्य सुरक्षा

जैविक एवं स्वदेशी पद्धति से उगाई गई फसलें रासायनिक अवशेषों से मुक्त होती हैं, जिनका सेवन मानव स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है। 'देशी अन्न, देशी अन्नदाता' के सिद्धांत पर आधारित यह प्रणाली भारतीय जनस्वास्थ्य की नींव को मजबूत करती है।

परंपरा और संस्कृति का पुनर्जागरण

भारतीय कृषि केवल उत्पादन नहीं बल्कि पूजा है। बीज बोने से पहले भूमि पूजन, गो माता की सेवा, वर्षा ऋतु का स्वागत – ये सभी भारतीय संस्कृति की आत्मा हैं। स्वदेशी कृषि इन्हीं परंपराओं को पुनर्जीवित करती है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सशक्तिकरण : स्थानीय स्तर पर जैविक खाद, बीज, पशुपालन, प्रसंस्करण आदि कार्यों से गाँवों में रोजगार के अवसर बढ़ते हैं। इससे ग्रामीण पलायन रुकता है और आत्मनिर्भरता का मार्ग प्रशस्त होता है।

वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा

आज विश्व के कई देश 'ऑर्गेनिक प्रोडक्ट्स' की मांग कर रहे हैं। भारत में स्वदेशी कृषि अपनाने से जैविक उत्पादों का निर्यात बढ़ेगा और विदेशी मुद्रा अर्जन के अवसर मिलेंगे।

रोजगार सृजन

स्वदेशी पद्धति से खेती आगत उद्यमों, मूल्यवर्द्धन, स्थानीय क्षेत्रों में विपणन आदि के कारण रोजगार सृजन करती है। इस पद्धति से खेती में अधिशेष का गाँव में ही निवेश किया जाता है। चूँकि इसमें रोजगार सृजन की क्षमता है, जिससे ग्रामीण युवाओं का पलायन रुकेगा।

स्वदेशी कृषि की दिशा में बढ़ते कदम

सरकार की नीतिगत पहलें : केन्द्र सरकार ने 2481करोड़ रुपये के परिव्यय से राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन की स्वीकृति दी है। इसके अंतर्गत देश के एक करोड़ किसानों को स्वदेशी पद्धति से खेती से जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है।

भारत सरकार ने स्वदेशी एवं जैविक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक योजनाएँ शुरू की हैं-

परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY) : इसके अंतर्गत जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है, विशेषकर पूर्वोत्तर और

आदिवासी क्षेत्रों में।

राष्ट्रीय जैविक खेती मिशन : जैविक उत्पादों के लिए प्रशिक्षण, प्रमाणीकरण और विपणन सहायता प्रदान करता है।

- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के अंतर्गत स्वदेशी बीज संरक्षण एवं देसी नस्लों के संवर्धन पर शोध कार्य।
- गोवर्धन योजना (GOBAR-DHAN)- गोबर और जैव अपशिष्ट से जैविक खाद एवं बायोगैस उत्पादन को बढ़ावा।
- **प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना :** किसानों की आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए प्रत्यक्ष सहायता।

राज्य स्तर की पहलें

सिक्किम : 2016 में भारत का पहला पूर्ण जैविक राज्य बना। यहाँ सभी प्रकार की रासायनिक खेती पर प्रतिबंध है।

मध्य प्रदेश और उत्तराखंड : "जैविक प्रदेश" के रूप में प्रसिद्ध हैं, जहाँ किसानों को स्वदेशी कृषि के प्रशिक्षण एवं बाजार उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

उत्तर प्रदेश : "देसी बीज बचाओ आंदोलन" के अंतर्गत देशी धान, गेहूँ, मोटे अनाजों की प्रजातियाँ संरक्षित की जा रही हैं।

किसानों और संस्थाओं की भूमिका

कई गैर-सरकारी संगठन और किसान समूह स्वदेशी कृषि को जनांदोलन के रूप में आगे बढ़ा रहे हैं-

- सुजाता बोद्ध, सुभाष पालेकर, वंदना शिवा, देविंदर शर्मा जैसे कृषि वैज्ञानिकों ने शून्य बजट प्राकृतिक खेती (ZBNF) का प्रचार किया।
- "गो आधारित खेती आंदोलन" के अंतर्गत गाय के गोबर और गोमूत्र से बनी खाद एवं जैविक कीटनाशक का प्रयोग व्यापक स्तर पर हो रहा है।
- "बीज बचाओ आंदोलन" ने भारतीय पारंपरिक बीजों को संरक्षित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अनुसंधान और नवाचार

स्वदेशी कृषि को वैज्ञानिक आधार देने के लिए अनेक विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों ने पहल की है—

- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), राष्ट्रीय जैविक कृषि केंद्र, विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान आदि संस्थान स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल खेती के मॉडल विकसित कर रहे हैं।
- ड्रिप सिंचाई, मल्चिंग, वर्मी-कंपोस्टिंग जैसी तकनीकों से पारंपरिक और आधुनिक ज्ञान का समन्वय किया जा रहा है।

स्वदेशी कृषि और आत्मनिर्भर भारत

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में चल रहा "आत्मनिर्भर भारत अभियान" स्वदेशी कृषि से गहराई से जुड़ा हुआ है। स्वदेशी कृषि न केवल खाद्य सुरक्षा देती है, बल्कि आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय आत्मनिर्भरता भी सुनिश्चित करती है।

इससे किसान पर निर्भरता घटती है, विदेशी कंपनियों से आयात की आवश्यकता कम होती है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होती है।

स्वदेशी कृषि से जुड़ी चुनौतियाँ

- किसानों में अभी भी रासायनिक खेती की आदत और मानसिकता बनी हुई है।
- जैविक खाद एवं देशी बीजों की सीमित उपलब्धता।
- बाजार में जैविक उत्पादों की मूल्य निर्धारण एवं पहचान की समस्या।
- स्वदेशी कृषि के प्रशिक्षण और वैज्ञानिक मार्गदर्शन की कमी।
- अल्पकालिक लाभ की चाह में किसान दीर्घकालिक लाभ वाली स्वदेशी पद्धति से दूर रहते हैं।

समाधान एवं भावी दिशा

- **शिक्षा और प्रशिक्षण :** स्कूलों, कृषि विश्वविद्यालयों और पंचायत स्तर पर स्वदेशी कृषि पर पाठ्यक्रम एवं कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँ।
- **प्रमाणीकरण प्रणाली :** जैविक उत्पादों को मान्यता देने की प्रक्रिया को सरल बनाया जाए।
- **स्थानीय विपणन तंत्र :** किसान बाजार, ई-कॉमर्स प्लेटफार्मों और सहकारी संस्थाओं के माध्यम से सीधे उपभोक्ताओं तक पहुँच बनाई जाए।
- **शोध और नवाचार :** देशी बीजों की जीन-संरक्षा और नई जलवायु परिस्थितियों के अनुसार सुधार।
- **पशुधन संरक्षण :** देशी गायों एवं अन्य पशुओं के पालन को बढ़ावा, क्योंकि ये स्वदेशी कृषि की रीढ़ हैं।

स्वदेशी कृषि – भारत का भविष्य

स्वदेशी कृषि न केवल एक कृषि पद्धति है, बल्कि यह भारत की सांस्कृतिक आत्मा और आर्थिक स्वतंत्रता का प्रतीक है। आज जब विश्व पर्यावरण संकट, मृदा क्षरण और जलवायु परिवर्तन से जूझ रहा है, तब स्वदेशी कृषि ही मानवता को टिकाऊ विकास की दिशा दिखा सकती है।कृषि को अपनी समृद्ध-सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ते हुए अपनाया जाना समय की माँग है, युगधर्म है।

"गाय, ग्राम और गोचर" - ये तीनों भारतीय कृषि के प्राण रहे हैं। यदि हम अपनी पारंपरिक ज्ञान प्रणाली, स्थानीय संसाधनों और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को मिलाकर चलें, तो भारत पुनः 'विश्वगुरु' बन सकता है।

जैसा कि महात्मा गांधी ने कहा था –

"स्वदेशी केवल वस्त्र या वस्तु का नहीं, बल्कि विचार और व्यवहार का भी सिद्धांत है। जब हम अपने खेत, अपनी मिट्टी और अपने किसान पर भरोसा करते हैं, तभी सच्चे अर्थों में स्वराज्य की प्राप्ति होती है।

नए आईटी रूल्स: डिजिटल समाज में सुरक्षा और विश्वास की नई राह।

सुनील कुमार महला
युवा साहित्यकार, उत्तराखंड

इन संशोधनों के तहत, सरकार और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स दोनों को यह सुनिश्चित करना होगा कि कंटेंट मॉडरेशन पारदर्शी और न्यायसंगत हो। इससे मनमाने प्रतिबंधों पर रोक लगेगी और नागरिकों के संवैधानिक अधिकारों की रक्षा मजबूत होगी।साथ ही, यह बदलाव आईटी एक्ट, 2000 के तहत कानूनी प्रावधानों को और सशक्त बनाता है, जिससे ऑनलाइन वातावरण अधिक सुरक्षित, जवाबदेह और विश्वसनीय बनेगा।

आज हमारे देश में जनरेटिव एआई(ऐसी कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआइ) तकनीक है जो नई चीज़ें 'बनाने' की क्षमता रखती है- जैसे कि पाठ (टेक्स्ट), चित्र (इमेजेज), संगीत, वीडियो या कोड आदि) उपकरणों की बढ़ती उपलब्धता और इसके परिणामस्वरूप कृत्रिम रूप से उत्पन्न जानकारी (डीपफेक) के प्रसार के साथ, उपयोगकर्ता को नुकसान पहुंचाने, गलत सूचना फैलाने, चुनावों में हेरफेर करने या व्यक्तियों का प्रतिरूपण करने के लिए ऐसी प्रौद्योगिकियों के दुरुपयोग की संभावना काफी बढ़ गई है। वास्तव में, इन सभी जोखिमों को ध्यान में रखते हुए, और व्यापक सार्वजनिक चर्चाओं और संसदीय विचार-विमर्श के बाद, हाल ही में इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने आईटी नियम, 2021 में संशोधन का एक मसौदा(ड्राफ्ट) तैयार किया है। कहना ग़लत नहीं होगा कि सरकार द्वारा डीपफेक पर लगाम को लेकर आइटी नियमों में संशोधन का जो प्रस्ताव पेश किया गया है, वह स्वागत

योग्य है। स्वागत योग्य इसलिए, क्यों कि अब नये नियमों के तहत सोशल मीडिया पर मनमानी नहीं चलेगी। गौरतलब है कि सरकार ने विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे कि फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स, यूट्यूब आदि के लिए कंटेंट हटाने के नियमों को अब सख्त कर दिया है।अब कोई भी जूनियर ऑफिसर अपनी मर्ज़ी से किसी भी पोस्ट या वीडियो को हटाने का आदेश नहीं दे पाएगा। इस क्रम में भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने आइटी नियम, 2021 के एक अहम नियम 3(1)(डी) में बड़े व व्यापक संशोधन किए हैं। इसके तहत अब एआई कंटेंट पर 'लेबल' लगाना होगा। दूसरे शब्दों में कहें तो नए नियमों के तहत सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को एआई-जनरेटेड कंटेंट पर 'लेबल' और स्पष्ट पहचान चिह्न लगाना अनिवार्य होगा। पाठकों को बताता चलूं कि इस ड्राफ्ट (मसौदे) को इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा तैयार किया गया है। दरअसल,अब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को एआई या सिंथेटिक कंटेंट को स्पष्ट रूप से चिह्नित करना होगा, ताकि यूजर असली और नकली सामग्री में फर्क कर सकें। गौरतलब है कि प्रस्तावित संशोधन के अनुसार, फेसबुक, इंस्टाग्राम और एक्स (पूर्व में ट्विटर) जैसे बड़े सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को अब यह सुनिश्चित करना होगा कि यदि कोई कंटेंट एआई या कंप्यूटर-जनित है, तो उस पर लेबल या मार्कर लगाया जाए। जानकारी के अनुसार यह लेबल विजुअल कंटेंट में कम से कम 10 फीसदी हिस्से पर दिखाई देना चाहिए, जबकि ऑडियो में शुरुआती 10 फीसदी अवधि तक सुनाई देना जरूरी होगा। साथ ही, प्लेटफॉर्म्स को यह भी जांच करनी होगी कि यूजर द्वारा अपलोड किया गया कंटेंट असली है या सिंथेटिक। इसके लिए तकनीकी उपाय अपनाने और यूजर से 'डिक्लेरेशन' लेना अनिवार्य होगा।

बहरहाल, यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि इस प्रस्ताव का सीधा असर उन सोशल मीडिया यूजर पर पड़ेगा, जो फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स, यूट्यूब या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) कंटेंट बनाने वाले किसी भी ऐप या वेबसाइट का यूज करते हैं। दरअसल,सरकार ने आईटी रूल्स, 2021 में 'सिंथेटिकली जेनरेटेड इन्फॉर्मेशन'(वह सामग्री जो AI या सॉफ़्टवेयर द्वारा इस प्रकार बनाई गई हो कि वह वास्तविक लगे) शब्द जोड़ा है तथा इस संदर्भ में आइटी मंत्रालय ने आईटी नियमों में संशोधन के मसौदे पर आम जनता तथा विशेषज्ञों से 6 नवंबर, 2025 तक प्रतिक्रियाएं/टिप्पणियां या फीडबैक भी मांगा गया है। वास्तव में, हाल ही में प्रस्तुत इन संशोधनों का मुख्य मकसद ऑनलाइन गलत/अवैध कंटेंट (अन-ला फुल कंटेट) को हटाने की प्रक्रिया को और ज़्यादा पारदर्शी (ट्रांसपेरेंट), जवाबदेह (अकाउंटेबल) और सुरक्षित (सेफ) बनाना है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार ये नियम 1 नवंबर, 2025 से पूरे देश में लागू हो जाएंगे।सरल शब्दों में कहें तो, सरकार ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे कि फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स, यूट्यूब आदि के लिए कंटेंट हटाने के नियमों को अब काफी सख्त कर दिया है तथा इसके तहत अब कोई भी जूनियर ऑफिसर अपनी मर्ज़ी से किसी भी पोस्ट या वीडियो को हटाने का आदेश नहीं दे पाएगा। बहरहाल, यदि हम यहां पर पुराने नियमों की बात करें तो आइटी नियम, 2021 पहली बार 25 फरवरी 2021 को नोटिफाई किए गए थे, तथा इनमें समय-समय पर (2022 और 2023 में) बदलाव होते रहे हैं। नियमों के तहत, सभी सोशल मीडिया कंपनियों की ये ज़िम्मेदारी होती है कि वे अपने प्लेटफॉर्म पर 'अवैध' कंटेंट को तुरंत हटा दें, बशर्ते उन्हें इसकी जानकारी कोर्ट के आदेश या सरकारी नोटिफिकेशन से मिली हो। दरअसल, अब सरकार को यह लगा कि इस प्रक्रिया में कुछ कमी है।इसलिए भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने फैसला किया कि कंटेंट हटाने के आदेश देने के लिए सीनियर ऑफिसर ज़िम्मेदार हों तथा 'अवैध कंटेंट' की परिभाषा ज़्यादा स्पष्ट हो। इतना ही नहीं,सरकारी आदेशों की समय-समय पर समीक्षा भी की जानी चाहिए। सरकार द्वारा प्रस्तुत नये ड्राफ्ट के निश्चित ही कुछ प्रभाव देखने को मिलेंगे। मसलन, इससे सोशल मीडिया मंचों में पारदर्शिता बढ़ेगी और जवाबदेही भी। वास्तव में, उच्च रैंक के ऑफिसर द्वारा आदेश जारी करने और मासिक समीक्षा होने से 'चेक एंड बैलेंस' बना रहेगा।कंपनियों के लिए भी इससे स्पष्टता होगी। दरअसल, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को अब पता होगा कि उन्हें किन आधारों पर कंटेंट हटाना है, जिससे उन्हें कानून का पालन करने में आसानी होगी। वास्तव में,नया आईटी रूल्स नागरिकों की सुरक्षा और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बीच संतुलन स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

इन संशोधनों के तहत, सरकार और

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स दोनों को यह सुनिश्चित करना होगा कि कंटेंट मॉडरेशन पारदर्शी और न्यायसंगत हो। इससे मनमाने प्रतिबंधों पर रोक लगेगी और नागरिकों के संवैधानिक अधिकारों की रक्षा मजबूत होगी।साथ ही, यह बदलाव आईटी एक्ट, 2000 के तहत कानूनी प्रावधानों को और सशक्त बनाता है, जिससे ऑनलाइन वातावरण अधिक सुरक्षित, जवाबदेह और विश्वसनीय बनेगा। संक्षेप में यह बात कही जा सकती है कि नये आइटी रूल्स से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर जहां एक ओर विश्वसनीयता और ट्रस्ट बढ़ाने में मदद मिलेगी, वहीं दूसरी ओर इससे गलत सूचना (मिसइन्फार्मेशन) और पहचान-छल (इम्पर्सोनेशन) रोकने में भी मदद मिलेगी।प्लेटफार्मों (इंटरमीडियरीज) की जवाबदेही तो इससे बढ़ेगी ही। व्यक्ति-गोपनीयता और व्यक्तित्व अधिकारों की भी सुरक्षा सुनिश्चित हो सकेगी। दूसरे शब्दों में कहें तो एआई-जेनरेटेड या गहरी फेक सामग्री अक्सर किसी व्यक्ति की छवि, आवाज़, चेहरे-हावभाव का उपयोग करके बनाई जाती है-जिससे उनकी निजता/छवि को नुकसान हो सकता है। इस तरह के नियम से ऐसे दुष्प्रयोगों (मिसयूज) को नियंत्रित करने में मदद मिलेगी। इतना ही नहीं, इससे डिजिटल अर्थव्यवस्था व नवोन्मेष (इनोवेशन) के लिए स्पष्ट ढाँचा प्रदान करने में भी मदद मिलेगी। आज के इस आधुनिक समय में एआई-जेनरेटेड मीडिया का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। कोई नियम ना हो तो अनियंत्रित स्थिति बन सकती है। इन संशोधनों से यह स्पष्ट होगा कि क्या करना होगा (लेबलिंग, ट्रेसबिलिटी, आदि) और प्लेटफार्मों/उपयोगकर्ताओं के लिए दिशा-निर्देश बनेंगे।इससे प्लेटफार्मों को भी रणनीति बनाने में मदद मिलेगी कि किस तरह एआई-सामग्री को संभाला जाए-जिससे सकारात्मक उपयोग और नवाचार बाधित नहीं होगा।

वैश्विक स्तर पर भी डीपफेक तकनीक को लेकर चिंता बढ़ी है, क्योंकि यह तकनीक असली लगने वाले झूठे वीडियो और फोटो बनाकर समाज में भ्रम फैलाने में सक्षम है। यही कहूंगा कि नए आईटी रूल्स का उद्देश्य डिजिटल स्पेस में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाना है। इन नियमों से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर मनमानी रोकने का प्रयास किया गया है।

हालांकि, कुछ चुनौतियाँ भी हैं।मसलन, नियमों का पालन सुनिश्चित करना सरल नहीं होगा- तकनीकी रूप से 'यह सामग्री एआई द्वारा बनाई गई है' का लेबल हमेशा सही साबित करना कठिन हो सकता है। यह भी कि यदि नियम बहुत सख्त हुए, तो सृजनात्मक/कलात्मक उपयोग भी प्रभावित हो सकते हैं। अतः संतुलन बनाना जरूरी है। इतना ही नहीं,एक चुनौती यह भी है कि इससे प्लेटफार्मों पर बोझ बढ़ सकता है- लेबलिंग, स्वीकृति प्रक्रिया, मॉनिटरिंग इत्यादि की लागत व संसाधन की आवश्यकता होगी। बहरहाल यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि आज के इस दौर में 'डीपफेक' से खतरा लगातार बढ़ता चला जा रहा है। यहां यह भी जानना जरूरी है कि डीपफेक वास्तव में है क्या? तो इस संबंध में बताना चाहूंगा कि डीपफेक एक ऐसी तकनीक है जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआइ) और मशीन लर्निंग का उपयोग करके किसी व्यक्ति की आवाज़, चेहरा या हाव-भाव को बदलकर नकली वीडियो या ऑडियो तैयार करती है। इसमें वास्तविक व्यक्ति के चेहरे को किसी दूसरे के चेहरे पर इस तरह से लगाया जाता है कि असली और नकली में फर्क करना मुश्किल हो जाता है। यह तकनीक डीप लर्निंग के एल्गोरिद्म पर आधारित होती है, जो बड़ी मात्रा में डेटा से सीखकर यथार्थ जैसी छवियां बनाती है। डीपफेक का उपयोग मनोरंजन, फिल्मों और गेमिंग में रचनात्मक रूप से किया जा सकता है, लेकिन इसका दुरुपयोग गलत सूचना, ब्लैकमेल और फेक न्यूज़ फैलाने में भी होता है। कई बार इसका प्रयोग राजनैतिक या सामाजिक भ्रम पैदा करने के लिए किया जाता है। डीपफेक से निजता और सुरक्षा को खतरा पैदा हो सकता है। सरकारें और सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म इस पर नियंत्रण के लिए नए नियम बना रहे हैं। इसलिए, डीपफेक तकनीक के उपयोग में जागरूकता और सावधानी बेहद आवश्यक है।मंत्रालय ने इस संबंध में यह बात कही है कि हाल ही के कुछ ही महीनों में डीपफेक ऑडियो और वीडियो तेजी से वायरल हुए हैं, जिनसे गलत जानकारी फैलाने, राजनीतिक छवि बिगाड़ने, धोखाधड़ी करने और लोगों की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने के मामले सामने आए हैं। वैश्विक स्तर पर भी डीपफेक तकनीक को लेकर चिंता बढ़ी है, क्योंकि यह तकनीक असली लगने वाले झूठे वीडियो और फोटो बनाकर समाज में भ्रम फैलाने में सक्षम है। अंत में यही कहूंगा कि नए आईटी रूल्स का उद्देश्य डिजिटल स्पेस में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाना है।इन नियमों से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर मनमानी रोकने का प्रयास किया गया है। वास्तव में, यह नागरिकों के अधिकारों और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बीच संतुलन बनाता है। फेक न्यूज, डीपफेक और गलत जानकारी पर नियंत्रण के लिए ये नियम कारगर हैं।ऑनलाइन सुरक्षा, खासकर महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा पर जोर दिया गया है। आईटी नियम डिजिटल इंडिया को सुरक्षित और जिम्मेदार दिशा देने का कार्य करते हैं।सरकार और प्लेटफॉर्म दोनों की जवाबदेही तय की गई है। कुल मिलाकर, नए आईटी रूल्स डिजिटल समाज को अधिक सुरक्षित और विश्वसनीय बनाते हैं।

बॉस नैतिक, आदर्श व व्यावहारिक गुणों से परिपूर्ण हो तो बेहतर...

डॉ. बी. आर. नलवाया
मंदसौर

प्रमोशन हर किसी को आनंद से भर देता है, लेकिन प्रमोशन पाने वाला व्यक्ति अर्थात सफल बॉस वही माना जाता है, जो कि अपने साथ काम करने वाले ज्यादातर लोगों में लोकप्रिय हो। ऐसे में बॉस क्या करें? व ऑफिस में काम करने वाले सहकर्मियों के साथ किस तरह से व्यवहार करें? कि सभी उसे पसंद करें। उनसे एक निश्चित दूरी बनाकर भी उनके करीब कैसे रहा जा सकता है? यह एक खूबी बॉस में जरूर होना चाहिए। यही सब जानने के लिए इस दिन की शुरुआत अमेरिकी इंश्योरेंस कंपनी की कर्मचारी पैट्रिशिया बेज हैरोस्की ने की थी। इन्होंने अपने पिता के जन्मदिन 16 अक्टूबर को बॉस--डे के रूप में 1958,में यु.एस.ए. के चेंबर ऑफ कॉमर्स में रजिस्टर करवाया।

पारदर्शिता होती है बॉस की खासियतः

बॉस को अपने काम में पारदर्शिता रखना आवश्यक है। कर्मचारी अपने काम में परफेक्ट है,तो बॉस को भी कर्मचारी के काम की काबिलियत की कद्र करना होगी। और वह हमेशा आपसे सही सुझाव की उम्मीद भी रखेंगे। (Boss)बॉस कर्मचारियों से पारदर्शिका रखने पर भी वे काफी खुश रहते हैं, बॉस की काफी इज्जत भी करेंगे।

अच्छे काम की सराहना करने की आदत डालेंः

बॉस को समय समय पर अपने कर्मचारियों के काम की सराहना भी करना चाहिए। उनके सुख दुख के समय उनसे बातचीत भी करे व यदि कर्मचारी किसी बीमारी के बाद काम पर लोटा है, तो उससे सहानुभूतिपूर्वक बातचीत करे,विगतदिनों के उनके हाल-चाल पूछना चाहिए

कर्मचारियों को समय-समय पर छूट देते रहेः

विशेष परिस्थितियों में बॉस को अपने कर्मचारियों को घर बैठे काम करने की इजाजत व किसी दिन देर रात तक काम करने के बदले उन्हें अगले दिन देर से आने की राहत देना चाहिए। बॉस को ध्यान देना चाहिए की 38% कर्मचारी बुखार व सर्दी जुकाम में भी ऑफिस आते हैं। अतः बॉस का रवैया हमेशा दुखड़े रोने का नहीं होना चाहिए। जब कर्मचारियों को बॉस की ओर से आभार ,भरोसा, सम्मान मिलता है, तो वे ज्यादा प्रोडक्टिव होते हैं।

समझदारी से भरपूर होता है बॉसः- हर कर्मचारी बॉस का यह गुण सबसे प्रमुख मानते हैं। प्रत्येक कर्मचारी जानता है , कि बॉस का प्रमुख काम निर्णय लेना होता है। गौरतलब है कि निर्णय लेने की क्षमता होना बॉस होने

की अनिवार्य शर्त है, लेकिन कोई भी निर्णय एकतरफा नहीं होना चाहिए। बॉस नियमित रूप से कर्मचारियों से मिलने का समय निकालना चाहिए, वह ऐसे ही रूटिंग बनाएं कि कर्मचारियों के साथ बैठकर अपने अनुभव साझा करें।

ईमानदारी का गुण होता है बॉस मेंः- बॉस को अपने दफ्तर का काम बड़ी ही ईमानदारी से करना चाहिए। यदि उसने थोड़ी सी भी बेईमानी की तो वह अधीनस्थ कर्मचारियों को तो कुछ भी नहीं कह सकता है।

बॉस को अपनी योग्यता परखना चाहिएः जैसे ही आप बॉस बनते हैं सभी के मन में पहला सवाल यह उठता है, कि क्या आप बॉस बनने की योग्यता रखते हैं? बॉस को अपने गिरेबान में झांकना भी आवश्यक है, कि मुझ में क्या खूबियां है, और क्या कमियां है? हमेशा बॉस को अपना परीक्षण करते रहना चाहिए।

बॉस इस ऑलवेज राइटः

जैसे जुमले इतने प्रचलित है, कि इसके अनुसार बॉस की हर बात मानना चाहिए। लंबे अरसे तक लोग इसी विचारधारा पर अमल करते रहे हैं। फिर एक दौर ऐसा आया, कि खुद बॉस को सच्चाई का एहसास होने लगा, कि बिना सोचे समझे हमारी हर बात में हाँ में हाँ नहीं करवाना चाहिए। इससे संस्था को नुकसान हो सकता है।

बॉस को संतुलित रास्ता अपनाना चाहिए व स्पष्ट विचार रखना चाहिए जो कर्मचारीयो के हित मे हो। बॉस को हमेशा सकारात्मक रहना चाहिए व उसमे विनम्रता का गुण होना अतिआवश्यक है। अमिताभ बच्चन की शालीनता व विनम्रता को याद रखना चाहिए। बॉस में बहुत प्रतिभा होती है, और ढेरो विशेषताएं भी होती है, मगर अपना(Boss) इंप्रेशन खराब है, तो आपकी सारी खूबियां पैरों तले दब जाती है।

बॉस को अपने इंप्रेशन को बरकरार रखने के लिए यह कार्य कदापि नहीं करना चाहिएः

- थोड़ा हंसी मजाक करें, किंतु किसी की भी खिल्ली ना उड़ाए। पीठ पीछे बुराई ना करें।
- बॉस ज्ञानवान है, परंतु ज्ञान का अहंकार बढ़-चढ़कर प्रदर्शित नहीं करे।
- बॉस को हमेशा अपनी बात संक्षिप्त में कहना चाहिए। ज्यादा लंबी बातें करने पर सुनने वाले का आकर्षण खत्म होता है।
- बॉस को किसी कर्मचारी की बात को पूरा सुनकर फिर उस पर प्रतिक्रिया देनी चाहिए। बीच में टोकाटोकी करने से बॉस की छवि पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।
- बॉस केवल अपनी ही बातों को ना हाँके, दूसरे की भी सुने। इससे कर्मचारी दूर हो जाते है बॉस हमेशा अपनी समस्या को बताते हैं तो लोग उसका मजाक बनाकर आपका उपहास करेगे और आपसे दूर-दूर ही रहेगे।
- बॉस को सोशल मीडिया पर भी सतर्क होकर अपनी बात पोस्ट करनी चाहिए। इसके साथ ही टीम के हर साथी के साथ एक जैसा ही व्यवहार करें, वरना उनके मन में आपके प्रति असम्मान पैदा नहीं हो।
- बॉस का अपने सभी साथियों के साथ बेहतर सामंजस्य होना चाहिए। किसी की भी किसी के प्रति जलन, दुर्भावना ना हो और ना ही बदले की भावना से काम करें।
- बॉस को अपने टीम के साथियों के साथ मिलकर किसी भी साथी की निंदा में शामिल नहीं होना चाहिए।

"बॉस डे पर बॉस को अपने अधीनस्थों के साथ व्यवहारकुशल बनने के लिए कई बातों का ध्यान रखना होता है।" अगर बॉस ज्यादातर कर्मचारियों को बेहतर महसूस कराते हैं, तो इसके बहुत फायदे है। शोध बताते हैं, किसी भी गलतफहमी पर तुरंत चर्चा करना चाहिए। कर्मचारियों के प्रति आत्मियता बनाकर बात करें ,बात करते समय शालीनता एवं सभ्यता का व्यवहार करें।

यह उल्लेखनीय है कि बॉस डे अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, साउथ अफ्रीका और भारत सहित कई देशों में मनाया जाता है। इस दिन लोग अपने-अपने बॉस को बधाइयां देते हैं ,तथा उनके साथ पार्टी का आयोजन भी करते हैं। क्योंकि बॉस कर्मचारियों का *संरक्षक* बनकर रहते हैं, उनको यह एहसास दिलाता है कि उनकी हर परेशानी में सुख-दुख में, संकट की घड़ी में वह उनके साथ हैं, बॉस व्यक्तिगत रूप से रुचि लेकर उनकी हर समस्या का निदान करने में सक्षम रहते हैं।

होना जो होता है वही होता है

उमेश मानव

हमारे सामने न जाने कितने ही उदाहरण ऐसे है जो यह दिखाते है कि समाज में जिन लोगों ने अपने लिए बड़ा नाम कियाए जो अपने क्षेत्र में किर्तिमान रचे वे भी उससे पहले किसी और चीज के पीछे भाग रहे थे वे कुछ और ही करने या बनने का सपना लिए हुए थे। वह पूरा न हो पाने पर बहुत दुखी भी हुए और जीवन में काफी लम्बे समय तक इस बात का अफसोस भी उन्हें रहा। वही आज वे ऐसे मुकाम पर पहुँच गये है जहॉ वे अपने को पूर्ण मान रहे है और संतुष्ट है।

सभी मुनष्य जीवनभर किसी न किसी बात को लेकर पछताते रहते है। अक्सर यह शिकायत रहती है कि 'हम ये काम नहीं कर पायेए ये हो जाता तो अच्छा होता' काश ये न हुआ होता आदि। गुरुवर श्री अशोक मानवजी कहते है कि "यह सोच सही नहीं है" बल्कि जिस चीज पर लोग पछतावा करते है कि 'ये न हुआ होता तो अच्छा होता' वह यदि न हुआ होता तो हो सकता है कि आपका अस्तित्व ही न होता। हर मनुष्य की जीवन यात्रा कि प्रत्येक घटना एक अनिवार्य रासायिनक मिलान होती है जो कि उसकी स्व यात्रा से ही जुड़ी होती है। सभी की जीवन यात्रा का यह अटल सिद्धान्त है। वहीं जो व्यक्ति यह सोच रहा है कि इसकी जगह कुछ दूसरा हो जाता, तो हो सकता है कि तब उस व्यक्ति का अस्तित्व ही न होता। स्पष्ट है कि जो हो रहा है या जो होगा। वह हमारे आपके अस्तित्व के लिए अनिवार्य है। यह इस बात को समझाने के लिए पर्याप्त है कि हमें यू ही हर बात पर अफसोस नहीं करना चाहिए। हमें अपने जीवन में हो रही घटनाओं के एहसास से सीख लेकर आगे बढ़ना चाहिए न कि दुखी होना चाहिए। देखा गया है कि बहुत सारे लोग कहते है कि उनके जीवन में ये न हुआ होता तो अच्छा होता। उस समय ये न किये होते तो सब ठीक चलता। यह जो आपको ठीक चलता नही लग रहा है, वही आपके अस्तित्व को बचाये हुए है। कोई अमुक घटना घटी जिससे आपको एहसास रूप में कोई सीख मिली या रासायनिक रूप से कुछ मिलान हुएए जिन्हें हम भौतिक दृष्टि से न तो देख सकते है न समझ सकते हैए पर वह हमारे लिए अनिवार्य था और उसी से हम आज किसी अन्य विकट स्थिति को पार करते हुए निकल कर आ गये हैए जी रहे है। अन्यथा हो सकता है कि हम टूट गये होतेए बिखर गये होते। यहॉ एक बात और भी समझने की है कि जब हम यह बात जान चुके है कि यह हमारी जीवन यात्रा स्व से स्व की यात्रा है। हमारे जीवन मे हो वही रहा है जो बीज रूप में हमारे रसायन में प्रथम बार से मौजूद है यानि जो हो रहा है वह हमारी ही इच्छा हैए हमारा ही बनाया गयाए हमारे लिए ही हैए फिर हम इतने विचलित या अफसोस में क्यों हो जाते है।

हमारे सामने न जाने कितने ही उदाहरण ऐसे है जो यह दिखाते है कि समाज में जिन लोगों ने अपने लिए बड़ा नाम कियाए जो अपने क्षेत्र में किर्तिमान रचे वे भी उससे पहले किसी और चीज के पीछे भाग रहे थे वे कुछ और ही करने या बनने का सपना लिए हुए थे। वह पूरा न हो पाने पर बहुत दुखी भी हुए और जीवन में काफी लम्बे समय तक इस बात का अफसोस

भी उन्हें रहा। वही आज वे ऐसे मुकाम पर पहुँच गये है जहाँ वे अपने को पूर्ण मान रहे है और संतुष्ट है। इसके लिए एक उदाहरण भी याद आ रहा हैए भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जी का जो कि भारतीय वायुसेवा में जाना चाहते थे। जिसके लिए उन्होंने प्रयास भी किया पर असफल रहे। अपने जीवन काल में भी उन्हें काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। आर्थिक संकट से भी वे मजबूती से लड़ते रहे। पढ़ाई में भी काफी संघर्ष किया। लाज़मी है कि कई पड़ाव पर वे भी अफसोसज़दा रहे होंगे। वहीं आज जो उनका नाम है, वह इतिहास है। पूरे विश्व में लोकप्रिय रहेए महान व्यक्तित्व के धनी रहे। लोग उन्हें मिसाल मानकर उनके आदर्शों पर चलते है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखे तो भी यह व्यक्ति के लिए उचित नही रहता। प्रकृति गतिशीलता के नियम पर कार्य करती है। अफसोस करते रहना यानी हम किसी एक घटना या अवस्था पर ही रुके हुए है जो कि हमारे लिए अच्छा नहीं। हमारी प्रकृति आगे बढ़ने की है चलते रहने की है और हम अपने को किसी अवस्था में रोके हुए है। यह कष्टदायी होगा। इसको यूं समझें कि जैसे आप किसी मोटरसाइकिल पर बैठे हो और एक्सीलेटर खीचे हुए है उसपर खुद ही पैर से जमीन पर ताकत लगाकर अपनी मोटरसाइकिल को रोकने का प्रयास कर रहे है या आप मोटरसाइकिल लेकर आगे चल रहे हो और पीछे मुड़कर देखते रहे। एक यह भी की एक्सीलेटर ले रखे है और ब्रेक भी लगा रखी है। तीनों ही स्थितियों में आप का और आपकी सवारी का क्या हाल होगा। यह आप समझ सकते है।

हम सभी के घरों में बड़े बुजुर्ग हमेशा यही सलाह देते है कि जो हो चुका सो हो चुकाए कोई बात नहीं आप आगे बढिये, पिछला भूलकर आगे देखो। यह बड़ो का अनुभव बोलता है। वे अपनी गाड़ी को आगे सही दिशा में चलाना और चलाने का लाभ दोनों समझ चुके होते है। हमारे आसपास लोगों को यह भी कहते सुना जाता है कि भागवान जो करता है अच्छा करता है। वह जो करता है हमारे भले के लिए ही करता है। यह सारी समझदारी की बाते इसीलिए होती है ताकी हम अपनी गति से आगे बढते रहे। सफर में जो हो उसको स्वीकारते हुए। अनुभव लेते हुए सफर को सुगम बनाते हुए। हमारा किसी विषय पर रुके रहनाए अपने को परेशान रखनाए स्व के सफर में बाधा डालना है। यह स्वयं की स्वयं से ही लड़ाई होती है। हमारा रसायन जो सब कुछ तय करके हमे इस जीवन में चला रहा है। हम अनजाने में ही उससे यानि अपनी ही ऊर्जा के विरुद्ध बल प्रयोग करते है। इसमें जीत तो हो नहीं सकती बस स्वयं को ही कष्ट देते रहते हैए हाँ कोषते ऊपर वाले को हैं।

कई बार होता है कि व्यक्ति को कही जाना होता है। उसे गाड़ी पकड़नी होती है, वह समय से निकलता है पर किन्ही कारणों से समय पर नहीं पहुंच पाता है। नतीजा गाड़ी छूट जाती है और वह नही जा पाता है। अब वह व्यक्ति बहुत गुस्सा करता है। उसका मूड पूरी तरह से खराब हो जाता है। क्योंकि उस यात्रा से उसका बहुत बड़ा फायदा होने वाला था। अब घर में भी वह बहुत गुस्से में है किसी से अच्छे से बात नही करता। अगली सुबह उदास मनसे उठकर वह अखबार पढ़ता है और जब वह एक खबर पढ़ता है कि जिस गाड़ी से उसे जाना था जो छूट गई थीए वह दुर्घटना का शिकार हो गई है। यह पढ़कर वह स्तब्ध रह जाता है और ऊपर वाले का धन्यवाद देता है जिन्हें वह पहले कोष रहा होता है।

हमें बहुत सोचना नही है। हमारा रसायन मण्डल हमारे अनुसार ही हमारी इच्छा के अनुसार ही हमे गतिमान कर रहा होता है। गुरुवर के अनुसार हमारे बीज में ही हमारे अस्तित्व का सारा खाका होता है। सारी जानकारी होती है। हम उसी पर चल भी रहे होते है। यही हमारी नियति और यही प्रारब्ध भी है। यह सब हम जब शांत भाव में होते है तो हम समझ भी रहे होते है। हमारी शांत अवस्था में हम हर प्रकार के उतार चढाव के लिए तैयार रहते है। हम हर अवस्था में मजबूती से डटे रहते है। अपने लिए उचित मानकर हम हर स्थिति में जीना सीख लेते है। हलचल तब शुरु होती है जबकि हम समाज से, अपने आसपास के लोगों से प्रभावित होने लगते है। उनकी चीजों को अपने में जगह देने लगते है और किसी न किसी बात पर दूसरो से अपनी तुलना करने लग जाते है। होता भी कुछ यूं ही है। हम चल तो अपनी ही रह पर रहे होते है। कुछ घटने पर हम सोचते है जो होना होता है होता है हम उसे स्वीकार भी करते है। बस तभी कोई दूसरा व्यक्ति आकर कहता है कि श्लो इससे अच्छा होता कि तुम वहां गये ही न होतेए तुम्हारे साथ ये क्या गलत हो गयाए तुम पर आफत आ गईए तुम पर तो दुखों का पहाड़ टूट पड़ाए ऊपर वाले ने तुम्हारे साथ अन्याय किया है। यहीं बस यहीं हम हलचल में आ जाते है। और हम सोचने लग जाते है कि सच में वहाँ नहीं गये होते। विचार आने लगता है कि सोचे तो थे एक बार कि न जाये फिर भी गये। किसी ने टोका भी था फिर भी नही रुके। अब आपका द्वन्द अपने ही आप से शुरु हो गया। यह दिया दूसरे कुछ लोगों ने लेकिन आपके पास ही रहेगा। अब आप ही कहने लगेंगे कि बेवजह ही चले गये। न ही जाते तो ठीक था। यह आपकी मानसिक स्थिति आपको और परेशान करेगी और आपका कष्ट बढ़ जायेगा। प्राकृतिक रूप से जो जल्दी ठीक होता अब उसमें भी रुकावट आयेगी।

कुछ घटनायें ऐसी होती है जिन्हें हम भूल नहीं सकतेए जो हमे तोड़कर रख देती है ऐसे समय यह कहा जाता है कि समय बड़ा बलवान होता है। समय के साथ हर घाव भर जाता है। यह समय ही है जो हमारी रासायनिक यात्रा हमसे तय करवाता है। जिससे हम प्राकृतिक गति से बढ़ते रहते है।

कैसा भी कष्ट हो हमारे अस्तित्व को मजबूती देता है, कमजोर नहीं करता। हमारी यात्रा को दृढ़ करता है।

गुरु जी का गाँव

श्यामल बिहारी महतो
बोकारो, झारखंड

बहुत साल हो गया गुरु जी को हमने याद नहीं किया। और गुरु जी को भी हम कहां याद रहे होंगे..! इस बदलती दुनिया में, बदलते समय में कौन कब बदल जाए आकलन करना मुश्किल ही नहीं ना मुमकिन हो गया है। ऐसे में कहा जाता है कि पूछते पूछते लोग कहां से कहां पहुँच जाते हैं। इसी पर हमारे यहां एक कहावत है, पूछते पूछते लोग कछाड़ पहुँच जाते हैं। यह कछाड़ है कहां आज तक कोई बता नहीं सका। बस बचपन से सिर्फ यह नाम और कहावत ही सुनता चला आ रहा हूँ। एक दिन मैं भी खोजते-खाजते, पूछते-पाछते गुरु जी के गाँव घर पहुँच गया। परन्तु यहां पहुंचना अचानक नहीं हुआ। अचानक कुछ होता भी नहीं है। जिस तरह हर घटना के पीछे कोई कारण होता है, उसी तरह किसी से मिलने जुलने का संयोग बनता है तो उसका कोई माध्यम भी बनता है। गुरु जी के गाँव जाने का माध्यम बना चन्द्रदेव। वह चिलगो का एक संजीदा समाजिक कार्यकर्ता था। फेसबुक पर मैंने एक दिन पूछा- “आप कहां से हो।” उसने लिखा “चिलगो” मैंने पूछा कि “विशेश्वर महतो” को जानते हो?

“हां जानता हूँ। अब वो रिटायर हो गये है और घर में ही रहते है..!”

“ उनके बेटे महेन्द्र को भी जानता होगा..?”

“ कौन महेन्द्र मै उसे नहीं जानता” उसने इस नाम से अनभिज्ञता जाहिर करते हुए कहा “उनका एक ही बेटा है नाम मिथलेश है..।”

“शायद वही हो, हम उसे महेन्द्र के नाम से जानते है। अभी वह क्या कर रहा है..?”

“पटना में कोई जॉब कर रहा है..!”

“कभी मिले तो उसे मेरे बारे बताना..।”

“जरूर दा.. जोहार..!”

“ जोहार जोहार..!”

अभी कुछ ही घंटा बीता था कि एक अनजान

नंबर पर फोन आया “हेलो ! हेलो !”

“हेलो ! कौन बोल रहा है..?” “मैं महेन्द्र बोल रहा हूँ दादा, आप बुटल दा ही बोल रहे है न..?” “ओह ! महेन्द्र ! हां, मैं बुटल दा ही बोल रहा हूँ महेन्द्र, यह मेरा नंबर कहां से मिल गया तुमको..?”

“ चन्द्रदेव ने दिया, उसी ने बताया कि आप बाबूजी और मेरे बारे पूछ रहे थे..!”

“हां, यह संयोग कहो कि उसके एक फेसबुक पोस्ट के माध्यम से जाना कि वह भी चिलगो से है। बाबूजी कैसे है महेन्द्र..?”

“बिलकुल ठीक है, वो आपको बहुत याद करते हैं। मैं बाजार आया हूँ, रूकिए शाम को बाबूजी से आपका बात कराते हैं..!” “ ठीक है..महेन्द्र !”

उस दिन शाम को गुरु जी से ढेर बहुत सारी बातें हुई। बरसों बाद गुरु जी से बातें करने से मन प्रफुल्लित था। उस गुरु जी से जिसने बोलना सिखाया, चलना सिखाया और सबसे बड़ी बात जिन्होंने हमें पहली बार जल जंगल जमीन की महता के बारे बताये थे। अगर अपने गाँव में हमने बारह बरस जंगल बचाओ अभियान चलाया था, तो प्रेरणा श्रोत गुरु जी ही थे। बात करते करते अंत में उन्होंने मिलने की बात कह दी “बुटल तुमको मेरे घर आना है। तुम्हें नजदीक से देखने की बड़ी तमन्ना है। तुम्हारे बाल बच्चों के बारे जानना है, मैं पचीस साल तुम्हारे गाँव में गुजारे है, क्या एक दिन तुम मुझसे मिलने मेरे घर नहीं आ सकता, बोलो कब आ रहे हो..?” “ बहुत जल्द गुरु जी, महेन्द्र को बता दूंगा.. प्रणाम..!” और फोन डिस्कनेक्ट हो गया था। दस वर्ष की उम्र से बीस वर्ष की उम्र तक हम गुरु जी के साथ रहे। इस बीच ऐसे कई मौके आए जब गुरु दक्षिणा की बातें आई पर वे हमेशा कहते रहे “तुम लोग आगे बढते रहो, मेरे लिए यही गुरु दक्षिणा होगा” मैंने गुरु जी से मिलने हेतु उनके गाँव जाने का एक नेक दिन और समय चुन लिया था। फेसबुकिये कुछ दोस्तों की सलाह थी कि “कोनार डेम नहीं देखा है, तो देखने का मौका मिल जायेगा, बहुत रमणीक जगह है..!”

“ओ कैसे..?” मैंने पूछा था। “आपको कोनार डेम होकर ही चिलगो जाना है..।”

मैं पुनः अपने घर से गुरु जी के घर की दूरी और समय का अनुमान लगाया। करीब दो घंटे का समय लगना पक्का था। जाने की पूरी तैयारी कर लिया था। गुरु दक्षिणा में गुरु जी को देने हेतु अपनी प्रकाशित पांच पुस्तकें बेग में रख ली थीं। पेड़ जीवी गुरु जी को यह कहां पता होगा कि उनका पढाया एक बोका शिष्य लेखक बन गया है। निर्धारित दिन को जब प्रातः चिलगो पहुंचने का प्रोग्राम बना तो मन अति उत्साहित था। उस दिन रविवार था। सुबह दस बजे घर से चल पड़ा तो दिल में कई हसरतें लिए हुए था। कोनार डेम के बारे में बहुत सुन रखा था। पर कभी नजदीक से देखा नहीं था। पहली बार उसे नजदीक से देख सकूंगा। सुना है वहां मछली पालन और नौकायन भी होता है, दूर दूर से लोग वहां आते हैं। उधर एक दशक से झूमरा पहाड़ का भी नाम सुर्खियों में था। झूमरा पहाड़ की तलहटी पर बसे गाँव चर्चा में थे। नक्सल के भय से विकास की कोख खाली खाली थे। आस पास के गावों का विकास रूका हुआ था। गाँव की सड़कें और पुल पुलिया का काम रूका पडा था। सरकारी पहिया उधर जाती ही नहीं थी। नक्सली डर डेंगू की तरह चारों तरफ फैला हुआ था। पर अब वो खौफ नहीं था। अब वो दौर समाप्त हो चुका था। डेंगू का भी इलाज होने लगा था और डहर बाट का भी बनना शुरू हो गया था। सरकारी पहिया सगरो दौडने लगी थीं। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में भी विकास की लकीरें खींची जाने लगी थीं। पहले यहां नक्सली और ग्रामीण में फर्क करना मुश्किल था। लोगों के मन में एक खौफ भरा भरा रहता था। राहत की बात यह थी कि अब नक्सली भी राजनीति के मुख्य धारा से जुडने लगे थे। कोई मुखिया तो कोई जिला परिषद सदस्य बन रहे थे। जनता से उनका जुडाव होना एक नये युग की शुरुआत थी। गाँव समाज में समाजिक बदलाव का दौर शुरू हो चुका था। यद्यपि उन दिनों झूमरा पहाड़ को नक्सलियों का मांद कहा जाता था। फिर भी मिथलेश ने मोबाइल पर रोड मेप भेज दिया था “गाइड” के रूप में। घर से निकला तो मेरे संग संग गुरु जी के संग बिते दिनों का एक सिलसिला सा चल पड़ा था। हांलाकि गुरु जी का हमारे गाँव में आगमन बड़ा भीषण गर्मी में हुआ था। तब गाँव में बिजली नहीं था। लोग पेड़ के नीचे खटिया डाल पडे रहते थे। यह मई का महीना था और यह उन्नीस सौ छिहतर का साल था। विशेश्वर महतो के रूप में एक उन्तीस वर्षीय धोती धारी युवा शिक्षक मिलने जा रहा था मुंगो स्कूल को और मै आठ दस साल का एक दम से घोंचू लडका था। स्कूल के पहले दिन मैं ही उनको पहला विधार्थी के रूप में मिला था। मैं पढने में जैसा भी था। लेकिन स्कूल रोज जाता था। उसके पूर्व प्राथमिक विद्यालय मुंगो का अरूण राय मास्टर हुआ करता था। कुर्ता पायजामा में बहुत सादे स्वभाव के शिक्षक थे। लंबी लंबी उनकी टांगें और शाही जैसे बाल ! एक अजुबा की तरह। स्कूल दो कमरों वाला था। एक कमरे के कोने में ही उन्होंने अपनी विस्तर लगा रखी थी। वहीं एक टीन के डिब्बे में खजारी (मूढी) भर कर रखता था। हर दिन किसी बच्चे को बैंगन तो किसी को टमाटर और किसी से मुराई (मूली) लाने को कहते थे, दिन भर वही खाते नज़र आते। जो नहीं ला देता उस दिन मार कर उसकी पीठ लाल कर देते थे। दौलत महतो एक दिन पेंट में पेशाब कर लिया। उस दिन से उसे कुछ लाने नहीं कहता। उधर माता पिता को लगता स्कूल का पाठ याद नहीं किया होगा। तभी गुरु जी ने उसे पीटा होगा। उस दौर के मां बाप अनपढ़ जरूर होते थे लेकिन मूर्ख नहीं होते,उनकी अपनी समझ

होती थी। आज की तरह डंडा लाठी लेकर कोई गुरु जी पर दौड़ नहीं पडते थे। तब गुरु का भी बड़ा महत्व होता था। गुरु जी मतलब ज्ञान के भंडार, ज्ञान के देवता और देवता से लोग आशिर्वाद लेते थे,उन्हें पीटते नहीं थे। मुंगो स्कूल में विशेश्वर गुरु जी के आने के पहले अरूण राय का गिरिडीह ट्रांसफर हो गया था। वह वहीं का रहने वाल था। कुछ दिन स्कूल प्रभार में रहा। विशेश्वर गुरु जी का मुंगो स्कूल में आना जैसे एक क्रांतिकारी शुरुआत थी। उस समय स्कूल में पठन पाठन बहुत अच्छा नहीं था। बहुत कम बच्चे स्कूल आते हालांकि मुंगो चिलगो की तरह नक्सल प्रभावित गाँव तो नहीं था पर शराब ने यहां माहौल काफी खराब कर रखा था। मां बाप शराब में डूबे रहते और बच्चे दिन भर आवारा गर्दी करते। ऐसे घरों में गुरु जी सुबह सुबह पहुँच जाते और बच्चों के माता पिता से मिलते तब वे पिये हुए नहीं होते, उन्हें पढाई की महता समझाते उनकी यह मेहनत रंग लाई। कुछ ही दिनों में स्कूल में बच्चों की संख्या में इजाफा होना शुरू हो गया। साल डेढ़ साल होते होते स्कूल बच्चों से भर गया। गाँव वालों को लगा पहली बार अच्छा गुरु जी मिला है स्कूल को। स्कूल कुछ ही दिनों में गुरुकुल की तरह लगने लगे और बच्चे अनुशासित दिखने लगे। स्कूल के हिस्से में सामने एक बड़ा भूभाग खाली पडा हुआ था। जिस पर गाँव वाले जगह जगह शौच - पाखाना कर गंदा कर देते थे। गंध स्कूल तक आती थी। जिसे पठन पाठन में बड़ी दिक्कतें आती थी। एक शाम गाँव के कुछ गणमान्य लोगों के बीच गुरु जी ने उस समस्या को सामने रखे और निदान चाहे। दूसरे दिन भंडारी बखरी के तुला महतो और जया महतो और परगनैत बखरी के मनि महतो ने अपने स्तर से महिलाओं और बच्चों को हडकाये तो स्कूल को राहत मिली। गुरु जी के आग्रह पर जानवरों का भी वहां चरने पर रोक लगा दी गई। इस तरह गुरु जी को आते ही स्कूल को गंदगी से राहत मिली। लेकिन गुरु जी इसमें स्थायी समाधान चाहते थे। मुंगो महतो बहुल गांव था। और गुरु जी भी महतो थे। कई घरों से उन्हें अपने घर में रहने का ऑफर आया। पर गुरु जी ने जीतू महतो के घर में रहना पसंद किये। राधेश्याम उनका एक मात्र पुत्र था। जीतू महतो गाँव का नामी किसान था। घर का सुखी सम्पन्न था। अब गुरु जी के जिम्मे राधेश्याम की शिक्षा दीक्षा का पूरा भार था। जैसे विश्वामित्र को राम लखन सौंप दिया गया था। राधेश्याम को भी गुरु जी को सौंप दिया गया। ताकि पढ़ लिख कर मास्टर ना सही गाँव का एक अच्छा आदमी तो बन जाए।

गुरु जी खुद एक किसान परिवार से थे। उनका जन्म ग्राम चिलगो, थाना चतरोचटी, प्रखण्ड गोमिया, जिला हजारीबाग में एक मध्यम किसान घर में सन उन्नीस सौ सैंतालिस में हुआ था। बचपन से ही वो पढने में काफी तेज थे। पर आर्थिक अरूपता के कारण पढाई संघर्षो के बीच हिचकोले खाते आगे बढता रहा। कभी किताबों की कमी तो कभी ढंग के कपड़े नहीं। लेकिन इन्होंने पढाई में कभी ढील आने नहीं दी। पढाई के प्रति जो ललक और लगन थी, वो बचपन से ही उनके चेहरे पर साफ झलकती थी। इस तरह अनेकों उतार चढ़ाव को ठेलते धकेलते उन्होंने सन उन्नीस सौ पैंसठ में उच्च विद्यालय विशुनगढ से दसवीं की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास कर चिलगो गाँव के चर्चा के केन्द्र में आ गए और पिता का नाम रोशन कर गये। कदम यहीं नहीं रूके। जुलाई पैंसठ से मई उन्नीस सौ सडसठ तक दो वर्ष का शिक्षक प्रशिक्षण भी चितरपुर हजारीबाग से पूरी कर जब गाँव लौटे तो एक पूर्ण गुरु जी बन चुके थे। मुंगो स्कूल में उनका पद स्थापना स्कूल के इतिहास में एक नये युग की शुरुआत थी। अब गुरु जी उन घरों में फिर से जाना शुरू किये जिनके बच्चे अब भी स्कूल नहीं आते थे और उनके माता पिता बच्चों को दिन भर गाय बैलों के पीछे लगा कर खुद दूसरे कामों उलझे रहते। ऐसे लोगों को समझाना गुरु जी के लिए आसान काम नहीं था। लेकिन इन्होंने हार नहीं मानी और बडी. सुझ बूझ के साथ व्यवहारिक रूप से अपने मिशन में लगे रहे। स्कूल न आने वालों में एक बच्चा मैं भी था। मेरी माँ नजदीक के खदान में खटने जाती थी और बाप रमा मोदी के साथ झाड फूंक में लगा रहता। गुरु जी माँ से मिले। माँ ने बाप से पंगा ले ली। बैलों का संग छुडाये और एक दिन खुद स्कूल छोड़ गयी थी। तब से मैं जाडा गरमी और बरसात गुरु जी के पीछे साये की तरह लगा रहा। स्कूल में गुरु जी ने दूसरा काम किये स्कूल के मैदान को दो भाग में बांट दिये। खेल के लिए अलग और बागवानी के लिए अलग। एक पेडजीवी गुरु जी का पहला दर्शन हुआ। कुछ पेड़ों के पौधे उन्होंने पहले ही तैयार कर रखे थे। पानी पडते ही आषाढ में कई गढ्ढे हमसे खुदवा डाले। और एक दिन स्कूल प्रार्थना के बाद बोले “ सभी को आज एक एक पेड़ लगाने हैं और उसका घेरावन भी खुद करना है। तरीका मैं बताऊंगा। जिसका पेड़ लगेगा वो उसके नाम से जाना जायेगा..!” पेड़ कैसे लगाये जाते हैं और उसकी रखवाली कैसे किया जाता है जीवन में यह हमने पहली बार देखा और सीखा था। हम सब बच्चे बडे. उत्साहित थे। हमने पेड़ लगाये यह सोच दिल बाग बाग हो रहा था। उधर गुरु जी भी दूने उत्साह से भरे हुए थे। स्कूल को साफ़ सुथरा रखना। जहां तहां थूक खखार नहीं करना। यह सब गुरु मंत्र था। स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही थी। गुरु जी का पढाने का अंदाज़ बड़ा निराला था। पढाते पढाते कभी गुरु भक्त आरूणि की कथा कहने लगते तो कभी ईदगाह के हमीद की कहानी सुनाते। महीना में एक दिन हमें जंगल घुमाने ले जाते। फिर जंगली पेड़ पौधों और कंद मूल के बारे में बताते जो काफी ज्ञानवर्धक

होता। तभी हमने जंगली बेर, केंद, भेलवा, खाखसा, कुंदरी और पियार जैसे फलों के बारे जाने थे। शाम होने के पहले हम स्कूल लौट आते। इसी बीच शिक्षक दिवस आ गया। गुरु जी ने सभी बच्चों को एक एक टिकट दिए और कुछ पैसे लाने को बोले जो मामूली होकर भी बहुतों के लिए भारी था। कई दिन बाद भी तेजलाल जब टिकट के पैसे नहीं लाया तो एक दिन गुरु जी पूछ बैठे " तुमने टिकट के पैसे नहीं लाया..?" "मालिक ने पैसे नहीं दिया है, इसलिए पिता जी ने पैसे नहीं दिया..!" "कौन है तुम्हारे बाप का मालिक..? कल पिता जी को स्कूल लेते आना..!"

अगले दिन पिता के संग तेजलाल स्कूल आया। गुरु जी ने पैसे की बात पूछी तो उसके बाप ने कहा "मालिक एक दो दिन में कमाय का पैसा दे देगा तो यह ला देगा..।"

"आप किस मालिक की बात कर रहे है वही तो जानना था।" "सेठ परमेश्वर साव!" "अरे, वो सेठ है मालिक नहीं है, मालिक तो उपर वाला है उससे बड़ा मालिक कोई नहीं है। ठीक है आप जाइए..!" उस साल की बागवानी में कुल सात पेड़ लगे थे तीन आम, दो जामून, एक बेल और एक कोनार का पेड़। बाकी कुछ जानवर के पेट में समा गए और कुछ मर गए। लेकिन पेड़ रोपण का काम उसके बाद भी हर साल जारी रहा। इसी बीच जपानी पद्धति से खेती करने की गुरु जी के मुख से हमने सुना। जानने का यह अलग ही विषय था हमारे लिए। इससे पहले जपानी विधि का गाँव में किसी ने नाम तक नहीं सुना था। एक नया चीज देखने को मिल रहा था। जपानी विधि से गुरु जी ने पहले मकई लगाई जो बेजोड़ रहा। बड़ी सोलीड विधि लगा। मकई के पौधों को एक कतार में बढते देखना। बहुत अच्छा लग रहा था। तभी एक खेत में उन्होंने जपानी विधि से धान लगा कर गाँव वालों को चौंका दिये। बहुतों ने कहा "गुरु जी तो खेती करने में भी मास्टर है, इनके पास ज्ञान का भंडार भरा है..!" अधिक उपज देख लोग चकित थे। समय के साथ स्कूल का बाउंड्रीवाल हो गया! पेड़ों के साथ साथ स्कूल के लिए भी बहुत अच्छा हो गया था। अब स्कूल कैम्पस पुरी तरह सुरक्षित हो गया था। और पेड़ बेहद मनमोहक लगने लगे थे। कभी वहां पाखानों का ढेर हुआ करता था। अब एक सुंदर बगिया बन चुका था। जो राह चलते लोगों को अकस्मात अपनी ओर खींचने लगा था। हर पेड़ में गुरु जी का रूप नजर आ रहे थे। समय के साथ मेरे जीवन में भी बड़ा बदलाव हुआ था। माँ चल बसी थी। एक आकस्मिक दुर्घटना ने उसे हमसे छीन लिया था। उसकी जगह मैं नौकरी में आ गया। समय कम मिलने लगा। गुरु जी से विरले से मुलाकात हो पाती। जंगल छूट गया। गाँव समाज के साथ बैठकी छूट गया। जीवन बहुकामी में उलझकर रह गया। माँ की मौत से गुरु जी भी मर्माहत थे। माँ गुरु जी के प्रति बहुत आदर- भाव रखती थी। तभी एक दिन पता चला। गुरु जी ने जीतू महतो का घर छोड़ दिये और जमुनिया टांड सोहराय महतो के घर चले गए। कारण का कुछ पता नहीं चला। जिनके घर में बरसों रहे, फिर अचानक उस घर को छोडने की नौबत आ जाए तो सवाल उठना स्वभाविक था। उठा भी लेकिन कारण का पर्दा धीरे धीरे उठा। किसी गुरु के सामने उसके विद्यार्थी को कोई अपराधी कह दे, पुलिस उसके हाथ में हथकड़ी पहना दे- एक सम्मानित गुरु के लिए इससे बड़ी शर्मनाक बात और क्या हो सकती थी। वो घटना गाँव के इतिहास में अपने तरह की एक बहुत बड़ी घटना थी।

लटन गाँव का एक बदनाम लडका था। जाने किस घड़ी राधेश्याम उसकी संगति में आ गया। "संगत से गुण आत है संगत से गुण जात है" की तर्ज पर बुरे साथ ने राधेश्याम को भी प्रभावित कर दिया। दोनों की विचारधारा और संगत ने उन्हें गलत राह पर डाल दिया। कुछ अनुचित घटना के बाद दोनों पुलिस के पकड़ में आ गए। गाँव में सनसनी फैल गई। इधर सुबह सुबह जीतू महतो ने गुरु जी से कहा "मास्टर, हम तो आपको बड़े सम्मान से रखा था कि बेटा पढ़ लिख कर अगर आप जैसा न भी बने तो गाँव का एक पढा लिखा आदमी तो बन जाए..पर चोर बन गया.. अब इस घर में मास्टर की क्या दरकार..!" ये वाक्य और वो पल गुरु जी को असहज कर दिया था। गुरु जी के पढाये ऐसे कितने विधार्थी मास्टर वकील और कितने सिपाही दारोगा बन गए और जिन्हें वो सुबह शाम घर में पढाते थे वह गाँव का बदनाम लडका निकला। उसके बाद से ही वो जमुनिया टांड चले गए। परन्तु वहां भी उनका मन नहीं लगा और कुछ ही दिनों बाद स्कूल के एक कमरे खुद को सिफ्ट कर लिए। दूसरे के घर में रहने की बजाय स्कूल में रहना उन्हें बेहतर लगा। लेकिन स्कूल में भी ज्यादा दिन नहीं रहे। जिस स्कूल को संवारने, उसे गुरूकुल बनाने में अपनी एक पुरी जवानी खपा दी, उसी स्कूल से अब मन उनका उचट चुका था। गाँव और स्कूल दोनों से जैसे उनका मोहभंग हो चुका था। मन विरक्ति से भर उठा था। रह रह कर विभिन्न तरह की भावनाएं मन में उठती रहतीं। ऐसे में मुंगो में मन को बांध कर रखना गुरु जी के लिए मुश्किल था।

पचीस साल! जीवन की एक चौथाई को मुंगो स्कूल को समर्पित कर देने वाले गुरु जी। एक दिन मुंगो स्कूल से भी बोरिया विस्तर समेट कर चल दिए। देखने वालों ने देखा, स्कूल के बाहर कदम रखे तो एक पल के लिए वो भावुक हो उठे, पूरे मन से उन्होंने एक बार स्कूल का मुआयना किये,स्कूल कैंपस के विशाल पेड़ों को मुस्कुराते हुए देख उनकी आंखें भर आई। बिछडने दुख तो हुआ पर मन को सुकून भी मिला। फिर जाते जाते उसने स्कूल कलेण्डर को याद किये "बीस सितम्बर उन्नीस सौ संतानब्बे लिखा था...।"

बदलता संयुक्त परिवार

सुषमा त्रिपाठी

संयुक्त परिवार क्या होता है ये बात तो आज की जैनरेशन को पता ही नहीं होगा क्योंकि शादी के बाद ही तो एकल परिवार में लोग रहना पसंद करने लगे हैं।

कुछ दिनों तक तो अकेला रहना अच्छा लगता है मगर कुछ ही दिनों के बाद जब बच्चे होते हैं तो घर के बाकी सदस्यों की भी याद आती है कि बच्चा कौन संभलेगा, कैसे होगा, ये परेशानी तो सबसे ज्यादा कामकाजी महिलाओं के साथ होता है। बच्चा कैसे संभलेगा। कैसा होना चाहिए-

- निभा तो सकती है साझेदारी अगर जिम्मेदारी को बोझ न समझा जाए।
- परिवार के हर सदस्यों को सम्मान देना चाहिए।
- परिवार के हर कामों में सबको एक बराबर हाथ बाँटना चाहिए।
- बच्चों के बीच प्यार को पनपने देना चाहिए।
- संयुक्त परिवार में सबको बराबर सबके मन में इज्जत तथा सम्मान का भाव होना अनिवार्य रूप से होना चाहिए।
- एक-दूसरे के पसन्द का भी ख्याल होना चाहिए।
- अपने अंदर झूठे अहम, अहंकार तथा दिखावा को सामने नहीं आने देना चाहिए।
- संयुक्त परिवार में अपना पराया नहीं होना चाहिए। मेरा तेरा नहीं होना चाहिए, सबको एक-दूसरे का ध्यान रखना चाहिए।
- सबकी जरूरतों का ख्याल रखना चाहिए। संयुक्त परिवार में भी हंसी खुशी का माहौल होना चाहिए, एक साथ बैठकर भोजन करना चाहिए। हम समाज के ट्रेंड को बदलने का मानें तो आज की फैमलीज बदल रही है। लोग दूसरों के पास आ रहे हैं।

एक दूसरे के सुख दुख में जो काम आए वही परिवार का असली सदस्य होता है। घर के सदस्यो में से किसी को भी थोडा सा भी चोट लग जाए, कोई बीमार पड जाए तो उस जगह घर के सभी को कष्ट हो, घर के सारे सदस्य उनके साथ खडे.हो जाय वही परिवार होता है। एक दूसरे की परवाह होना ही संयक्त परिवार की निशानी है। एक दूसरे के भावनाओं को समझ कर उसे स्वीकार करना भी संयुक्त की निशानी होती है।

मगर हाँ जो संयुक्त परिवार में थे वो दूर जा रहे हैं, और एकल परिवार में थे वो पास आ रहे हैं। उनको कीमती रिश्तों की अहमियतता पता चल रही है, मगर किसी-किसी को ही। आपसी ताल मेल बढ़ रहे हैं। संयुक्त परिवार व रिश्तो की जरूरत समझते

हुए नया विवाहित जोड़ा भी समझदारी से काम लेना शुरू कर दिया है।

इसका श्रेय बुजुर्गों पर भी जाता है क्योंकि उन्होने नई लाईफस्टाइल में अपने आप को ढाल लिया है, जिसने ढाल लिया है वो खुश है। जिसने नहीं ढाला सारी जिन्दगी कुटते रह जाते हैं। तथा दूसरों को कष्ट दे जाते हैं। वैसे अच्छे माता पिता हमेशा अपने बच्चों की सहूलियत के लिए ही सोचते हैं। और अपनी सोच को बदल कर संयुक्त परिवार खुशनुमा रखते हैं। वैसे कही भी गया है कि एक माता पिता अपने दस दस बच्चे को पालते हैं मगर वो दस दस बच्चे अपने माता पिता को ही नहीं पाल सकते हैं। मगर जिस बच्चे को माता पिता ज्यादा प्राथमिकता देते हैं ज्यादा गुणगान करते हैं, बच्चे अपने माता पिता के लिए अभिशाप साबित होते हैं। उनको दुख देते हैं, रोड पर छोड़ देने की धमकी देते हैं। व्यर्थ के तनाव से बचने के लिए आपसी समझदारी जरूरी है। एक कदम हमें बढाना चाहिए तो दूसरा कदम भी हमें मिलकर ही चलना चाहिए। इसी तरह माता पिता, बेटा बहू एक साथ रह भी सकते हैं। सिस्टम के तहत सभी के घर के सदस्यों को संयुक्त परिवार में रहकर खुशहाल जिनदगी जीनी चाहिए।

एक दूसरे के सुख दुख में जो काम आए वही परिवार का असली सदस्य होता है।घर के सदस्यो में से किसी को भी थोडा सा भी चोट लग जाए, कोई बीमार पड जाए तो उस जगह घर के सभी को कष्ट हो, घर के सारे सदस्य उनके साथ खडे.हो जाय वही परिवार होता है। एक दूसरे की परवाह होना ही संयक्त परिवार की निशानी है। एक दूसरे के भावनाओं को समझ कर उसे स्वीकार करना भी संयुक्त की निशानी होती है।

पहले के परिवार में सिर्फ एक मुखिया होता था जो परिवार को सुचारू रूप से चलाता था लोग उनकी हर बात भी मानते थे मगर अब तो पूरा परिवार ही मालिक हो गया है। पहले और अब में परिवार में जमीन आसमान का अंतर हो गया है। कोई-कोई परिवार तो ऐसा भी होता था कि एक व्यक्ति पड़ा विस्तार पर रो रहा है, दर्द से पीड़ित है उसी के बगल सो रही उसकी सासू मॉ आरामा से सो रही है, बात तक पूछना उनको अच्छा नही लगता था घर के लोग बहाना बनाया है यही बताते थे। हमने तो ऐसे भी लोगों को देखा है घर के सदस्य बात तक पूछना नही समझते थे। कि तुमको क्या हुआ है पर कहने को संयुक्त परिवार रहा करता था, ऐसा संयुक्त परिवार मैने देखा था कि पाए तो एक-दूसरे को ही खा जाए, एक परिवार के सदस्य अपने ही देवर, जेठ पर जादू टोना, टोटका शुरू कर देते है पता पही इससे उनका क्या भला होता होगा? कुछ लोग सो ऐसे होते है जो दूसरोंको हमेशा नीचा दिखाने मतलब उनको पतन के मार्ग पर ही हमेशा ले जाना ज्यादा पसन्द करते है। संयुक्त परिवार में ही कुछ राक्षसी प्रवृत्ति के लोग भी होते है जो ऐसा बराबर करते चले आ रहे है।

पहले के परिवार में सिर्फ एक मुखिया होता था जो परिवार को सुचारू रूप से चलाता था लोग उनकी हर बात भी मानते थे मगर अब तो पूरा परिवार ही मालिक हो गया है। पहले और अब में परिवार में जमीन आसमान का अंतर हो गया है। कोई-कोई परिवार तो ऐसा भी होता था कि एक व्यक्ति पड़ा विस्तार पर रो रहा है, दर्द से पीड़ित है उसी के बगल सो रही उसकी सासू मॉ आरामा से सो रही है, बात तक पूछना उनको अच्छा नही लगता था

जिनको संस्कार के बारे में कुछ पता भी नही होता है। ऐसे ही लोग होते है जो संयुक्त परिवार का भी नाम मिट्टी में मिलने में कोई कसर नहीं छोड़ते है। बड़ो तथा छोटो को सबको अपनी राक्षसी प्रवृत्ति से प्रताड़ित करती रहती है। इसे ही राक्षसी फैमिलीज कहते है। जिसमें आधे राक्षसी दानव तथा कुछ देवता प्रवृत्ति के लोग भी रहते है। तो ऐसी संयुक्त परिवार से कम कोई दूसरा तो सुख-दुःख में काम आ सकता है।

ये वाला संयुक्त परिवार नही होना चाहिए जो सभी के सुख-दुःख को बांटे उसके दुःख में दुःखी सुखी में सुखी हो वही संयुक्त परिवार होता है। वही लोग सुखी रह सकते है। एक दूसरे का ध्यान रखना चाहिए कभी छोटो का भी नुकसान नही करना चाहिए छोटो का भी धन नही छीनना चाहिए छोटो को भी कभी बड़ो का हक या धन नही छीनना चाहिए।

किरण कुँवरी का कोप!

थी रात चाँदनी से भीगी,
चाँदी की चादर ओढ़े थी।
हर मेड़ी महल झरोखे पर,
विधु-आभा सकुची पोढ़े थी।

विधु-किरण किरण का द्वार भेद,
चहुँ-ओर कक्ष में फैल रही।
प्रियतम् के बिना नवेली की,
सेजा किरणों को ठेल रही।

आँखों पर पलके गिरा सहज,
सोने का जतन किया सारा।
ली सौड़ ओढ़ तब कुँवरी ने,
ढक लिया चाँद-सा मुख प्यारा।

पर, नींद नहीं थी आँखों में,
सखियों की बातें तैर रही।
कल के नौरोजी उत्सव की,
मधु सुखद कल्पना घेर रही।

उसने सखियों से जाना था,
यह उत्सव बड़ा निराला है।
त्योहार भले ही और कई,
यह तो मणियों की माला है।

क्या ओढ़ पहनकर जाऊगी,
आभूषण कौन सजेगा तन!
कर सुखद कल्पना पहन रही
कर आँख बंद वह मन ही मन।

जब उठी सुबह में मुस्काती,
चिड़ियों की चहक निराली थी।
हर नवल रूपसी बनी-ठनी,
लगता उस रोज दिवाली थी।

- हेमराज सिंह 'हेम'

पूजा गोवर्धन की...

पूजा गोवर्धन की
प्रकृति के संवर्धन की
संदेश दिया समझाया
कृष्ण के अंतर्मन की।
प्रकृति सजाए संवारे
गिरि नद्य बाग वन सारे
दाता प्रदाता जो हैं
शुरू से संग हमारे।
इनकी पूजा का दर्शन
देता रहा है सनातन
जय गोवर्धन जय कृष्णा
आओ करें आवाहन।
जल हवा फूल फल औषधि
हैं प्रसाद सब इसके
अकूत संपदा पाकर
आभारी हैं हम जिसके।
ये दिन दंभ पर जय का
प्रकृति की शक्ति विजय का
गो माता की पूजा का
भक्ति की अनुपम लय का।
आओ सब मिल करते
आरती श्रीगोवर्धन की
दुग्ध प्रसाद चंढ़ाएं
जो पीड़ा हरे तन मन की।

- व्यग्र पाण्डे

उठाया लेखनी लिखने को

उठाया लेखनी जब भी किसी का रूप लिखने को।
शब्द की रेखा तले जब चित्र गढ़ने को।।

उड़ा है जब कभी मन का परिंदा आसमां में दूर तक,
बही है भाव की दरिया कभी जब स्वप्न सागर तीर तक,
ठिठकता है कहीं पर मन ठहर सा पैर जाता है।
प्रकृति का रूप तब आंखों के आगे तैर जाता है।।

वृहद है रूप इसका और सुंदरता की जननी है,
करो श्रृंगार शब्दों से भरो जो भाव भरनी है।
शब्द है थोड़े असीमित यह कहानी है,
नजर सीमित हमारी है नजारों में रवानी है।
कोई जब गीत लिखता हूं हमारा मन किसी के ठौर जाता है।
प्रकृति का रूप तब आंखों के आगे तैर जाता है।।

सभी उपमा प्रकृति से ही लिए सारे कवि लेखक,
उतारे हैं प्रकृत को भी जरा से दायरे में सब।
चांद को मुख में उतारे बादलों को केस में,
दिखाया है फिजाओं को सदा ही आदमी के भेष में।
लिखना चाहता हूं जब कोई एक रूप बनकर और आता है।
प्रकृत का रूप तब आंखों के आगे तैर जाता है।।

- कामेश

हम खिलेंगे ज़रूर

दक्खिनहिया हवा की बात है
कि तारीफ़ के पुल के नीचे निराशा की नदी बहती है

खजूर के सपने पूरे नहीं होते
फिर भी वह आम की तरह सपने देखता है
कि उसकी छाँव में कोई गर्भवती उम्मीद विश्राम करेगी
कोई नींद रचेगी यात्रा का गीत

हम खजूर की ठेक लेकर सोच रहे हैं
कि उसकी आवाज़
उसकी ताड़ी है, फल नहीं

ऊँचे ताड़ पर पड़ी नज़र स्तब्ध है
लेकिन पश्चिमी आसमान की लालिमा उतर रही है
हमारी हृदय में यह कहने
कि हम गाँव में पले-बढ़े परिंदा हैं

एक शहरी बहेलिये ने हमारा पर काटा है!

- गोलेन्द्र पटेल

भोर भयो

इला पर अरूणोदय होते ही
कोयल की कुहू-कुहू की मंजुल ध्वनि
सुनाई देती है।
ललित सरोवर में
नीला पंकज खिलकर सौंदर्य बिखेरता है।
समीर का झोंका उसकी खुश्बू फैलाकर
वातावरण को चेतन बनाता है।
हंसा की जोड़ी का आगमन
पारुल दृश्य रचाता है।
फाल्गुन मास में उसी सरोवर के किनारे
पलाश के फूल अपना रंग छिड़क रहे हैं।
प्रकृति के इस चरम सौंदर्य को देखकर
मन हर्ष से पुलकित हो जाता है।
वही दूर-दूर
देवालय पर केतन फहराती नज़र आती है।
आरती के घंटारव के साथ
मन में प्रांजल विचारों का आविर्भाव होता है
और
दिनचर्या का आरंभ होता है।

यह मेरी मौलिक रचना है और कोपीराइट के नियमों का उल्लघंन नहीं करती।

- समीर उपाध्याय

माटी का पुतला

हें मानव ! तू इतना क्यों अभिमान करता हैं
यह मानव देह तो माटी का पुतला हैं
न जाने कब टिला लग जायें और
यह माटी का पुतला फूट जायें , टूट जायें
अरे इंसान ! घमंड तो रावण जैसे
विद्वान को भी ले डूबा फिर भला
तू किस खेत की मूली हैं
जो आया हैं वो जायेंगा, चाहें राजा हो या रंक
हें मानव ! यह तो माटी की देह हैं
यह तो माटी का एक खिलौना हैं
यह एक दिन माटी में ही मिल जायेंगा
अतः हे मानव ! तू अपनें पर इतना घमंड मत कर
इस नश्वर संसार में आया हैं तो
कुछ परोपकार कर , अच्छे धर्म- कर्म कर
दीन दुखियों की सेवा कर
यह तेरा हैं यह मेरा हैं को छोडकर बोल
यह हम सबका हैं
तू क्यों पद - प्रतिष्ठा को पाकर
इतना इतरा रहा हैं
यह सब यहीं धरा का धरा रह जायेगा
तू इसी मिट्टी में खेला - कूदा और बडा हुआ और
एक दिन इसी मिट्टी में मिल जायेंगा
इस नश्वर संसार में आया हैं तो
प्रेम के दो मीठे बोल तो बोल
जो आया हैं सो जायेगा चूंकि
यह तो माटी का पुतला हैं न जानें कब टूट जायेगा

- सुनील कुमार माथुर

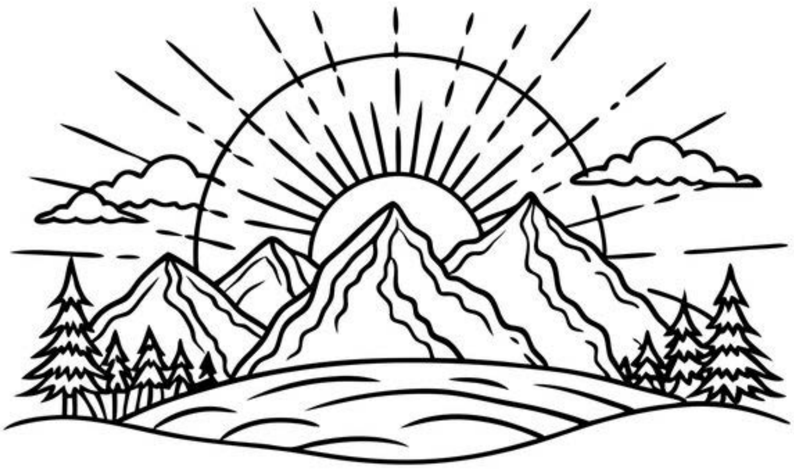

नागरमोथा

प्रकृतिमेल डेस्क

औषधीय गुणों से भरपूर एक चमत्कारी पौधा है नागरमोथा। जिसे आप अपने बगीचे की शान बना सकते है।

नागरमोथा का उपयोग सदियों से किया जा रहा है। यह न केवल पाचन तंत्र को सुधारने में सहायक है, बल्कि इसके रासायनिक तत्व और यौगिक इसे एक प्रभावशाली प्राकृतिक औषधि बनाते हैं। नागरमोथा एक झाड़ीदार पौधा है जो नम और दलदली जगह में पाया जाता है। इसके पत्ते पतले, नुकीले होते है और भूमिगत कंद भी होता है।इसके औषधीय गुणों के बारे में बताये तो इसके सेवन से पाचनशक्ति मजबूत होती है। यह गैस, दस्त, पेट के दर्द मे लाभकारी है। इसके कंद में जो गुण होते है वे सूजन को कम करता है। नागरमोथा चर्म संबंधी समस्याओं में भी लाभ देता है। इसके इस्तेमाल से फोड़े फुंसी, खुजली आदि त्वचा की दिक्कतें दूर होती है। बुखार को कम करने और ऐलर्जी से निपटने में भी यह सहायक है।

नागरमोथा के औषधीय गुणों का रहस्य इसके रासायनिक तत्वों में छिपा है। इसके कंदों में पाए जाने वाले प्रमुख तत्वों से सूजन और दर्द को कम किया जा सकता है, एंटीऑक्सीडेंट और एंटीबैक्टीरियल गुण कोशिकाओं की रक्षा और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं । नागरमोथा के तत्व पाचन सुधार, तनाव कम करने और त्वचा के लिए लाभकारी है। इन यौगिकों की उपस्थिति नागरमोथा को एक बहुउपयोगी औषधि बनाती है जो आधुनिक चिकित्सा में भी उपयोग की जा रही है। अगर आप अपने छोटे से बगीचे में इस औषधीय पौधे को उगाना चाहते हैं, तो यह आसान है। यह पौधा ज्यादा देखभाल नहीं मांगता और आसानी से उगाया जा सकता है। यह पौधा नम मिट्टी में अच्छी तरह उगता है। आप इसे गमले में या जमीन में उगा सकते हैं। दोमट मिट्टी जिसमें थोड़ी नमी हो, सबसे उपयुक्त होती है। मिट्टी में खाद मिलाएं। नागरमोथा के कंद को 2-3 इंच गहराई में मिट्टी में दबाएं। एक गमले में 2-3 कंद लगा सकते हैं। नियमित रूप से पानी दें लेकिन जलभराव न होने दें, आंशिक छाया और धूप दोनों में उग सकता है, लगभग 3-4 महीने में कंद तैयार हो जाते हैं, निकालकर छाया में सुखाएं और औषधीय उपयोग के लिए संग्रहित करें। इसके एंटीबैक्टीरियल, एंटीऑक्सीडेंट और एंटीइंफ्लेमेटरी गुणों से यह कैंसर कोशिकाओं की वृद्धि को रोकने में भी सहायक हो सकता है।

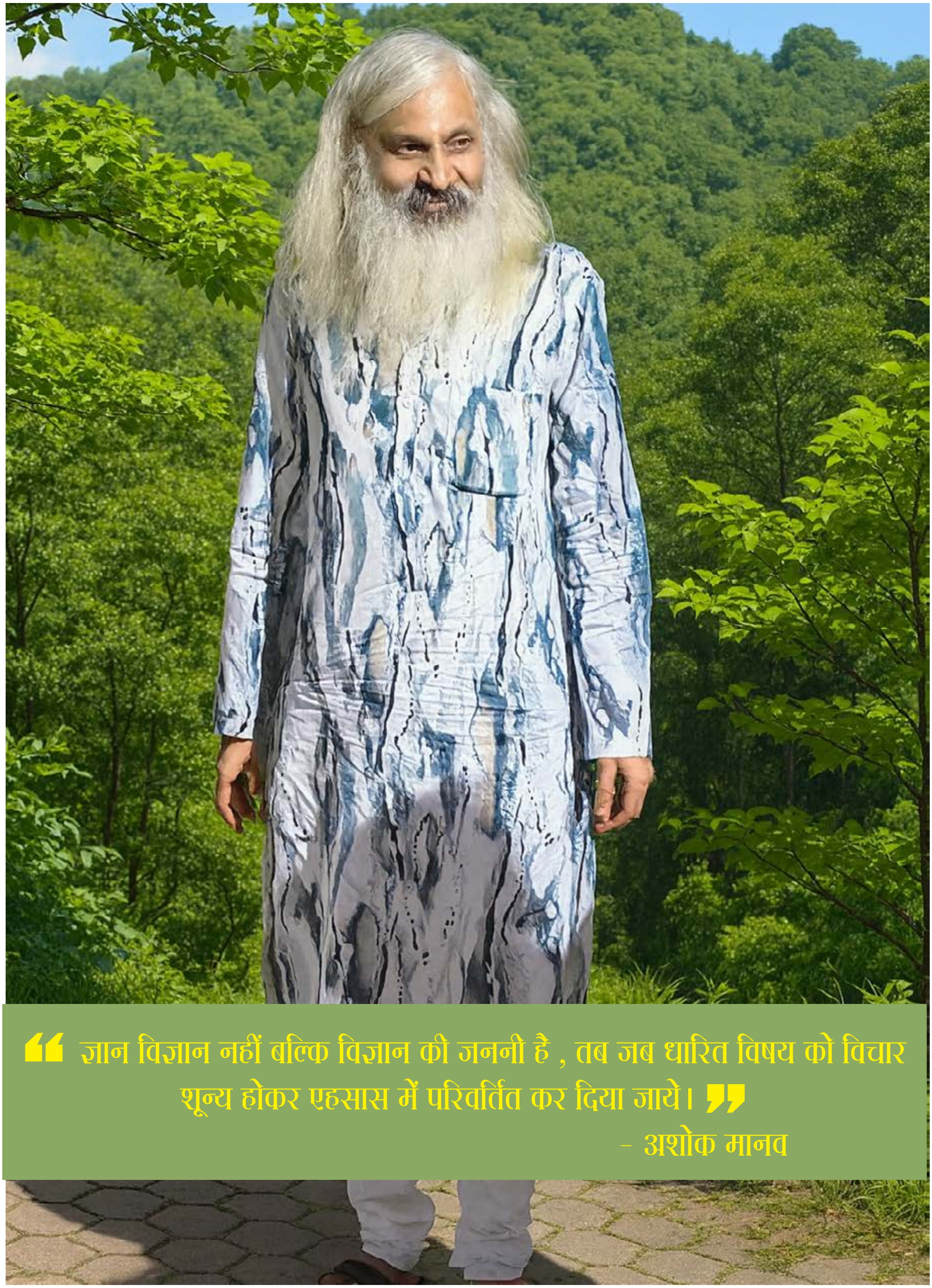

"ज्ञान विज्ञान नहीं बल्कि विज्ञान की जननी है , तब जब धारित विषय को विचार शून्य होकर एहसास में परिवर्तित कर दिया जाये।"

– अशोक मानव

स्थापित 1948
77 वर्षों का विश्वास
लाला जुगल किशोर
गोटे वाले
55, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ | संपर्क : 9935329775

दुर्गा आटो सेल्स

सेवा ऐसी जो पसीना न बहने दे

Aurhorised Dealer for Mahindra Tractors, Farm Equipments & Spare Parts

durgaautosale2000@gmail.com 9919528830 0545-4242216

इलाहाबाद-जौनपुर रोड, मछली शहर, जौनपुर, उ. प्र.।